

हास्य-संजरी

सकलनर्पता

हरिश्चन्द्र व्यास



प्रवीण प्रकाशन.
बीकानेर

मूल्य ४५० रु

एहकानल प्रस बीकानर

HASYA MANJARI (Stories)

—Harishchandra Vyas

श्रद्धेय गुरुवर

ओं भवानी शक्ति सर्वसेना

को

सादर समर्पित

हरिश्चन्द्र झा

शुभाशीप

○

आधुनिक के नौ रसा में हास्य का विशिष्ट स्थान है। हिन्दी साहित्य में हास्य सबंधी रचनाओं का सर्वथा अभाव है और इस ओर अभी तक विपुल प्रयत्न नहीं हुआ है। इस विधा के लेखक अगुलियों पर गिने जा सकते हैं।

हास्य का जीवन में अपना निराला स्थान है। हमें भारत में धर्म के मानव को नव-स्फूर्ति, हास्य ही प्रदान कर सकता है।

नवादित लेखकों में श्री हरिश्चंद्र यास शीप स्थान रखते हैं। हास्य-जगत् नाम से इनका एक सफलन इससे पूर्व प्रकाशित हो चुका है। निम्न के हम हमारे प्रयास पर मुझे गव है।

अनुक्रम

○

- १ भगवती योग
- २ तूरी काका
- ३ समारम्भ की प्रविष्टि
- ४ प्रणाम व चक्र म पसकर
- ५ सायर की माधना
- ६ पति गाना
- ७ न्न मू छन के वारन ऊपर
- ८ दाजी की वकालत
- ९ मरा गाधीवा
- १० भावी बगानीकार
- ११ गिकार की तनाग
- १२ जीवन का मुद्रम
- १३ गूण विश्राम
- १४ बनारसा टग
- १५ गायनाचाय गणा मुम्बई

अनूपनानि द	६
अमरबहादुर मिह	१६
अनंतयोपाल नेवड	२७
गापालप्रसा	४०
विरजीलाल पारागर	४७
जी० पी० श्रीवास्तव	५६
नेमनारायण जोगी	६१
हा० राजेश्वरप्रसा	६६
चतुर्वेदी	७६
काका हायरसी	७८
वेदव बनारसी	८३
विष्णु प्रभाकर	८४
वीरेन्द्र कुमार जन	११७
सत्यकाम विद्यालकार	१२४
माविशी देवी वर्मा	१२५
हरिदचन्द्र व्यास	१३३

हास्य-मजरी

अकवरी-लोटा

०

लाला भाऊदास को गाने गीत का बर्मी नहीं थी। बारीक ठठरी बाजार में बिकता था। नीचे की दुकानों में एक-सौ रुपये मामूली ब बरीब बिगया उतर आता था। बच्चे-बच्चे अभी थे नहीं। मिर्च का प्राणी का सब था। अच्छा खाते थे अच्छा पहनते थे, पर गार्डमौ रुपये तो एक माघ माग सकने के लिये भी न मिलते थे।

इसलिये जब उनकी पत्नी ने एक दिन दवायक बार्डमौ रुपये की माग पाने की तब उनका जी एक बाग जोर में मनमनाया और फिर बट गया। जान पड़ा कि कोई बुढ़ा है जो बिलाने जा रहा है। उनकी यह लगा दसकर उनका पत्नी ने कहा— 'वरिय मत जाय दन में असमय हो ना मैं अपने भाई से माग लूँ।'

लाला भाऊदास कम मीठी मार से तिलमिला उठे। उन्होंने किंचित रोव के माघ कहा— 'अजी नटा! गार्डमौ रुपये के लिये भाई से भीख मागांगी! मुझ से ल लना।'

'नबिन मुझे इसी जिन्गी में चाहिये।'

अजी इसी सप्ताह में ल लना।

सप्ताह में आपका तात्पर्य गाने दिन में हू या सात घण्टे में

साला भाऊनाल ने रीब के साथ खड़े होकर कहा— आज से सातवें दिन मुझ से ढाई सौ रुपये ले लेना ।

“मद की बात एक !

‘हा जी हा ! मद की एक बात ।

संकिन जब चार दिन ज्यों पो म यो ही बीन गये और रुपये का कोई प्रवध न हो सका तब उन्हें चिंता होने लगी । प्रश्न अपनी प्रतिष्ठा का था अपने ही घर में अपनी साख का था । देने का पक्का वादा करके अगर अब न दे सके तो मन में वह क्या सोचेगी ? उसकी नजरों में उनका क्या मूल्य रह जायगा । अपनी दाहवाही की सक्का गायो उसे सुना चुके थे । अब जो एक काम पड़ा तो चारों छाने चित हो गये । यह पहली बार उसने मुह खोलकर कुछ रुपये का सवाल किया था । इस समय अगर वे कुछ दबाकर निकल भागते हैं तो फिर उसे क्या मुह दिलायेंगे ? मर की एक बात वह उसका फिर उनका नाम म पूज-पूज कर फिर से पूज उठना था ।

सर एक दिन और बीता । पाचवें दिन धवरा कर उठाने पण्डित बिलवासी मिथ को अपनी विपदा सुनाई । सयोग कुछ ऐसा बिगड़ा था कि बिलवासी जी भी उस समय बिल्कुल धुक्क थे । उन्होंने कहा कि मेरे पास है तो नहीं पर मैं वही से माग जाच कर लाने की कागिग करूंगा और अगर मिल गया तो बल गाम को तुमसे भकान पर मितूंगा ।

यही आज गाम थी — हफ्ते का अनिम दिन । बल ढाई-सौ रुपया गिन देना है या सारी हैबडी से हाथ धोना है । यह सच है कि बल रुपया न पाने पर उनकी स्त्री उन्हें डामल फासी न कर दगी — कवन जरा सा हस दगी । पर वह हसी कसी होगी ? बस हसी की कल्पना मात्र स साला भाऊनाल की भन्तरात्मा में मरोड़ पदा हा जाता था ।

अमा प० बिलवासी भी नहीं थाए । आज तो उनका आने की

यात थी। इन्हीं का भरोसा था। यदि न आए ? या वहीं रूप्य का प्रबंध न कर सके।

इसी उबेड़-बुन में पड़े हुए लाला भाऊलाल छत पर टहल रहे थे। कुछ प्यास मालूम पड़ी। उन्होंने नौकर को आवाज दी। नौकर नहीं था। खुद उनकी पत्नी पानी लेकर आई। आप जानते ही हैं कि हिन्दू समाज में स्त्रियों की कैंसी सोचनीय अवस्था है। पति मालायक को प्यास लगती है तो स्त्री बचारी को पानी लेकर हाजिर होना पड़ता है।

य पानी तो जरूर साईं पर गिलास लाना भूल गई थीं। केवल लोटा में पानी लिये वह प्रकट हुईं। फिर लोटा भी संयोग से वह जो अपनी बड़गी सूरत के कारण लाला भाऊलाल को सदा से नापसंद था। पाता नया साल ही दा साल का बना, पर कुछ ऐसी गन्ध उस लोटे की थी कि उसका बाप डमरू घोर मा बिलमिली रही हो।

लाला भाऊलाल ने लोटा ल लिया। वे बाले कुछ नहीं, अपनी पत्नी का व अन्ध मानते थे। मानना ही चाहिये इन्हीं को सम्मता कहते हैं। जो पति अपनी पत्नी का न हुआ वह पति कसा ? फिर उन्होंने यह भी मोचा होगा कि लोटा में पानी हातव भी गनीमन है अभी अगर चू कर देता त तो बाल्टी में जब भोजन मिलेगा तब क्या करना बाकी रह जायगा।

लाला भाऊलाल अपना गुस्सा पीकर पानी पीने लगे। उस समय वे छत की मुहर के पास खड़े थे। जिम बुजुर्गों ने पानी पीने के सम्बंध में यह नियम बनाया था कि बड़े बड़े पानी न पिया सोने समय पानी न पिया दोहन के बाद पानी न पियो उन्होंने पता नहीं कभी यह नियम बनाया था या नहीं कि छत की मुहर के पास खड़े होकर पानी न पियो। जान पड़ता है कि इस महत्वपूर्ण विषय पर उन लोग न कुछ भी नहीं कहा है।

इस नियमाला भाऊना न कोई बुरा नही की अगर यान की मुँहरे व पास सडे होवर पानी पीन सये पर मुँहरे स दो एक छूट भी वे न पी पाय हाय कि न जान कस उनका हाय नि उठा और सोय हाय स दू गया ।

लो न न गतिने दगा न बाये उह भीव गनी की और चल पडा । अपने बेग म उल्ला को लजाना हुमा वह घोषो स आभन हो गया । किसी जमान म पूटन नाम व किनी मुरावाती नवृष्वी की घाय दण गति नाम की एव चीज ईजा की थी । कहना न होगा कि यह सारी गति इन समय सोने के पय म थी ।

साला भाऊलान को बाटा तो बन् म खून नही । ठठरी बाजार नमी चलती हुई गली म, ऊचे निमजिल स भरे हुए साट का गिरना हसी सल नही है । यह लोटा न जाने किस अनधिकारी व सापड पर बागी बास का सदेस लेवर पहुचेगा ।

कुछ हुमा भी ऐसा ही । गली म जोर का हत्ता उठा । साला भाऊलाल जब तब दौडकर नाचे उनरें तब तब एक भारी भीड उनके आगन म घुस आयी ।

साला भाऊलाल ने देखा कि इस भीड में प्रधान पात्र एक अगरेज है जो नलगिल से भीगा हुआ है और जो अपने एक तर को महलात हुए दूसरे तर पर नाच रहा है । उसी के पास अपराधी लांके को भी दलकर साला भाऊलाल जो ने फौरन से और दो जोडकर स्थिति को समझ लिया । पूरा विवरण तो उह पीछे प्राप्त हुमा ।

हुमा था यह कि गली म गिरने व पूव लोटा एक दुकान के साथ बान मे टकराया । वहाँ से टकराकर उस दुकान पर सडे उस अगरेज को उसने सागोपाग स्नान कराया और फिर उसी के बूट पर जा गिरा । ध्यान देने की बात है कि हिंदुस्तानी लोटा भी वही गिरा जहा हिंदुस्तानी

आदमी गिरते हैं।

उम अगरेज को जब यह मालूम हुआ कि लाला भाऊलाल ही उस गेट के मालिक हैं तब उसने तैयार एक नाम किया। अपने मुँह को खाल-खोल कर खुला छोड़ दिया। लाला भाऊलाल को आज ही यह मालूम हुआ कि अंग्रेजी भाषा में गालियों का क्या प्रकाण्ड कोप है।

इसी समय १० बिलवासी भीड़ को चीरते हुए आंगन में आते दिखाई पड़े। उन्होंने आते ही पहला काम यह किया कि उस अंगरेज को छाड़कर और जितने आन्मी आंगन में घुस पाय वे सबको निकाल बाहर किया। फिर एक कुर्मी आंगन में रखकर उन्होंने साहब से कहा— 'आपक पैर में गायद कुछ चोट आ गयी है। आप आराम कुर्मी पर बैठ जाइय।

साहब बिलवामी जी को धयवाद देते हुए बैठ गये और लाला भाऊलाल की आर इगारा करके बोले— आप इस शख्स को जानते हैं? 'बिल्कुल नहीं। और मैं ऐसे आन्मी को जानना भी नहीं चाहता जो निरीह राह चलते पर छोटे से चार कर।

मेरी समझ में *He is a dangerous criminal* ! यानि वह खतरनाक मुजरिम है।

नहीं मेरी समझ में *He is a dangerous lunatic* ! (नहीं यह खतरनाक पागल है।)

परमात्मा ने लाला भाऊलाल की आँखों को उस समय कभी देखने के साथ खाने की भी शक्ति द दी होती तो यह निश्चय है कि अब तक बिलवासी जी को व अपनी आँखों से खा चुक होते। व कुछ नहीं समझ पाते थे कि बिलवामी जी को इस समय हो क्या गया है।

साहब ने बिलवासी जी में पूछा— तो अब क्या करना चाहिए ?'

पुलिस में इस मामले की रिपोर्ट कर दीजिय जिससे हम आदमी

को फौरन हिरासत में ले लिया जाय ।'

'पुलिस-स्टेशन है कहा ?
चलिये ।'

'अभी चलो । आपकी इजाजत हो तो पहले मैं इस लोटे को इस
भादमी से खरीद लूँ । 'क्यों जी बेचोगे ? मैं पचास रुपये तक इसका दाम
दे सकता हूँ ।

साला आउसाल तो चुप रहे पर साहब ने पूछा— इस रहीं
लोटे का आप पचास रुपये दाम क्यों दे रहे हैं ?'

आप उस लोटे को खरी जानते हैं ? भावचय ! मैं तो आपको एक
विश्व और सुसिद्धित भादमी समझता था ।

आखिर बात क्या है कुछ बताइये भी ?

'यह जनाब ! एक ऐतिहासिक लोटा जान पड़ता है । जान क्या
पड़ता है मुझे पूरा विश्वास है । यह वह प्रसिद्ध अकबरी लोटा है जिसकी
तलाश में सत्तार भर का यूजियम परेसान है ।

यह बात ।

'जी हाँ जनाब ! सोलहवीं शताब्दी की बात है । बादशाह हुमायूँ
शेरशाह से हार कर भागा था और सिंध के रेगिस्तान में मारा मारा फिर
रहा था । एक अवसर पर प्यास से उसकी जान निकल रही थी । उस समय
एक ब्राह्मण ने इसी लोटे से पानी पिनाकर उसकी जान बचाई थी । हुमायूँ
के बाद जब अकबर दिल्लीश्वर हुआ तब उसने उस ब्राह्मण का पता लगा
कर उससे उस लोटे को ले लिया और इसने बदले में उसे इसी प्रकार के
दस सोने के लोटे प्रदान किये । यह लोटा सम्राट अकबर को बहुत प्यारा
था । इसी से इसका नाम अकबरी लाटा पड़ा । वह बराबर इसी संवत्
करता था । सन् १७ तक इसने गाढ़ी घरान में ही रहने का पता है ।

पर इसके बाद यह सापता हो गया । बलकरो के म्यूजियम में इसका प्लास्टर का माडल रखा हुआ है । पता नहीं यह लाटा इस आदमी के पास कैसे आया । म्यूजियम वाला को पता चले तो फौसी दाम दवर खरीद ले जाय ।

इस विवरण को सुनते-सुनते साहब की आत्मा पर लोभ और आश्चर्य का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे कौड़ी के आकार से बढ़कर पकौड़ी बन जा गये । उसने बिलवामी जी से पूछा— तो आप इस लोटे को लेकर क्या करिण्गा ?

‘ मुझे पुरानी और ऐतिहासिक चीजों के संग्रह करने का शौक है ।’

‘ मुझे भी पुरानी और ऐतिहासिक चीजों के संग्रह करने का शौक है । जिस समय यह लोटा मर ऊपर गिरा उस समय मैं यही कर रहा था । उस बुकान पर से पीतल की कुछ पुरानी मूर्तियां खरीद रहा था ।

‘ जो कुछ हो लाटा मैं ही खरीदूंगा ।’

‘ बाह आप कैसे खरीदेंगे ? मैं खरीदूंगा । मेरा हक है ।

“हक है ?”

जोरूर हक है । यह बनलाइये कि उस लोटे के पानी से आपने स्नान किया था भेने ?

‘ आपने ।’

बहु आपके पैरो पर गिरा था मेरे ?

आपक ।

अगूठा उसने आपका मुरता किया था मेरा ?”

आपका ।’

दमलिये उसको खरीदने का हक मेरा है ।

यह सब भोल है । दाम लगाइये, जो अधिक दे वह ले जाय ।

“यही सही । आप उगवा पनाम रख सगा रहे थे मैं तो ना
हूँ ।’

‘ मैं इतनी सोना ॥ ।’

‘ मैं दो मो दता हूँ ।

‘ अजी मैं डाई मी दता हूँ — यह कहकर बिनागा जा न था
तो वे मोट लाना भाऊवाल व आम पक न्ये ।

माह्व को भा अब ताव भागया । उगन रहा—“आर डाई मी
दते हैं तो मैं पाव तो दता हूँ । अब चरिय ?’

दिलबासा जी अचसाम व माघ अपन रख उठाने रग माना
अपनी आगाया की लाग उठा रहे हैं । माह्व की धीरे दगकर उगान
कहा— लाटा आपना हुआ व जाय मरे पास डाई सी स धपिष हैं नही ।

यह सुनना था कि माह्व व चर पर प्रमत्तता की वृत्ति फिर
गयी । उमन भपट कर सोटा उठा लिया धीरे बोला—‘ मय मैं असना हुआ
अपने देग लौटूंगा । मजर डगनस की डींग मुनत मुनते मरे जान पक गय
हूँ ।’

मजर डगनस बीन है ?

‘ मजर डगनस मेरे पड़ोसी है । पुगती चीजो का सयह करन म
मरा उसकी बीड रहती है । गन वष व हिंदुस्तान आम थ धीरे घहा म
‘जहागीरी अण्डा’ ल गय थ ।

जहागीरी अण्डा ॥ जहागीरी अण्डा ॥ मजर डगनस ल समझ
रक्खा था कि हिंदुस्तान स व हा अछरी चीज ल जा मकत है ।

‘ पर जहागीरी अण्डा है क्या ?

‘ आप जानत है कि एक ब्रूतर न ब्रूजहा से जहागीर का प्रम
कराया था । जहागीर क पूछने पर कि मरा एक ब्रूतर तुमने कमे उड

जान दिया नूरजहाँ ने उसके दूसरे कबूतर को भी उड़ाकर बताया था कि एमे । उसने इस भोजन पर जहागीर सौ जान से निछावर हो गया उसी क्षण से उसने अपने को नूरजहाँ के हाथों धर दिया । कबूतर का ऐसा मान था नहीं भूला । उसके एक अण्डे को बड़े जतन से खोल दिया — एक बिन्दु की हाडी में । वह उसका सामन लगा रहता था । बाद में वही घण्टा 'जहागीरी घण्टा' के नाम से प्रसिद्ध हुआ । उसी का मन्दर टंगलस ने पार सात तिली में एक मुसलमान मज्जन में तीन सौ रुपये में खरीदा ।'

यह बात ।

हा पर अब व मेरे घाने दून की नही ल सकते । मेरा मकबरी लाडा उनका जहागीरी अण्डे में भी एक पुस्त पुगना है ।"

'इस रिस्त से तो आपका पीटा उस घण्टे का बाप हुआ । साहब न दाता भाऊनाल का पाव सौ रुपये देकर अपनी राह ली । लाजा भाऊनाल का कहना इस समय दखन बनता था । जान पडता था कि मुह पर छ दिन की बनी हुई दागी के एक एक बाल मार प्रसन्नता के लहरा रहे हैं । उ हात पूजा —' गिनवामी जी । आप मेरे लिये आई-मी स्पया घर में नकर चन थ ? पर आपका पास तो थ नही ।

'म भे' का मेरे मिवाय मेरा ईश्वर भी जानता है । आप उसी में पूछ जाजिय । मैं नही बताऊगा ।'

पर आप बते क्या ? अभी मुझे आपसे काम है दो घण्टे तक ।

'अ घण्टे तक ।'

हा और क्या । अभी मैं आपकी पीठ ठोककर गावांगी दूंगा । एक घण्टा मम लगेगा फिर गल नगाकर धयवाद दूंगा एक घण्टा मम भी लग जायगा ।'

'अच्छा पहने अपना पाव सौ रुपये गिनकर मज्ज नीडिय ।

रगया घर आना तो तो उग मट्ठना तक लगा गुग्गु और
गम्भीरक बाय है कि मनुष्य उस समय सज्ज में हो तमयता प्राप्त कर पाता
है। लाना भाठनाम न अपना बाय समाप्त करके ऊपर दगा। पर बिना
वासी जी इस बीच अंतर्धान हो गया था।

वे लम्बे डग मारते हुए गली में चले जा रहे थे। उग रात्रि त्रिच
वासी जी को देर तक नींद नहीं आई। वे चारों तरफ चारपाई पर पड़े
रहे। एक बजे वे उठे। धीरे धीरे और घन्ने धीरे से अपना माँस हटा पत्नी
के गल से उठोने सोने की वह सिक्की निकाली जिसमें एक माँस की रक्षा हुई
था। फिर उसके कमरे में जाकर उठोने उस ताली में गड़बड़ मारना।
उसमें टाँसी की नोट ज्यों के त्याग रखकर उठोने उस बरत कर दिया।
फिर दस पाव लौटकर ताली को उठाने पूर्ववत् अपनी पत्नी के गल में डाल
दिया। इसके बाद उठाने हुए कर भगडाई ली भगडाई लेकर चले गये
और लट कर मर गये।

दूसरे दिन सुबह आठ बजे तक वे मरे रहे।

झूरी काका

○

'मोहिजादहो घोर हठप्या' की खुदाई में जितनी वस्तुयें निकली हैं उन में यदि आप भूरी काका का मिला दें तो शायद ही कोई पुरातत्त्ववेत्ता उन्हें पहचान पावे। बिघाना की इस बीसवीं शताब्दी की कलाकृति का देखन ही ऐसा लगता है जम वह तीन सौ ई० पू० की रचना हो। न भूरी काका का नाम का पता है न नाम का। भूरी नाम बड़ा और कम पड़ा किसी का नाम नहीं। नाम भूरी अवश्य है पर शरीर ऐसा नहीं। पिछले महीने तीन घंटे तो पसल से बदन निकला। बकीर सठ जी (जो माग्धाड़ी नहीं सिंधी हैं) — के ससार में दो ही वस्तुयें स्थिर यौवना हैं एक तो सदाग्रहार का पद दूसरे भूरी काका। यक्षा और किन्नरा को भी स्थिर यौवन कहा जाता है पर उनका अस्तित्व ही अब नहीं रह गया। अब उनकी जगह व्यर्थ है। सब कुछ होत हुए भी भूरी काका का अफसाम है कि इस नर नारी से घरे जगत् में वह अकेले हैं। अघात ससार की किसी प्रकार की किसी लक्ष्मी ने उन्हें अपना जीवन साथी नहीं बनाया। पचासी पार कर जान के बाद भी भूरी काका को विवाह की लालसा बनी है। प्रत्येक वर्ष गर्मी आती है। गर्मी में लगनें बढ़ती हैं। गादी विवाह होने हैं। गहनाइया बजती हैं। डोलिया सजती हैं पर भूरी काका का हाथ में हल्की नहीं लग पानी। इसका जितना अफसोस भूरी काका को

है उससे कम हम लोगो को नहीं। पर क्या करें विवशता है।

भूरी बाबा मुझे बहुत चाहते हैं। क्योंकि उन्हें विश्वास है कि यदि मैं चाहूँ तो एक न एक दिन उनके आगमन में चूड़िया खनखना उठे। इसी चाह के खेत में उनकी आगमन आज दस वर्ष से पनप रही है। मैं भी उनकी आगमन को मरने नहीं देता। क्योंकि ऐसा करने पर बाबू जी जो अब एक बड़े अधिकारी हैं भूलो मर जायेंगे। भूरी बाबा आज पंद्रह वर्ष से उन्नी के यहाँ नौकर हैं बतन साफ करते हैं भाड़ू लगातार हैं और कभी कभी झकड़ भा जाते हैं। उन्हें कोई नौकर नहीं कहना। वह अपने को नौकर समझते भी नहीं। कोई कहने तो उस अस्पताल जाना पड़े। जिसमें मरने युद्ध का पोषण हो यह जहमत वही मोल न सकता है। अतः सब उन्हें काका ही कहते हैं। काका कहने पर वह प्रेम न रहने हैं। खूब हसत म्यात है। काका न कहने पर एक घोड़ी को पीट चुक है। तब मैं बड़े-बूढ़े सब उन्हें काका ही कहने हैं। सच बात तो यह है कि उन्हें काका न कहो ता खाना ही हमन न हो। पहन वह घर वालों के काका रह फिर मुहलत वाला के घर पूरे नगर के हैं। यहाँ स्थिति ऐसी तो एक दिन संपूर्ण रूप से काका हो जायेंगे। इसमें सन्देह नहीं। ठीक उसी प्रकार जिस तरह जी ससार के बचवा के काका हैं।

भूरी बाबा का मरा पश्चिम जनवरी १९५२ में प्रथम बार हुआ। मैं बाबू जी के साथ टहरा था। काका गाना बनाते थे। मर के माय मुझे भा गिला दन। न बावन न बातें करते। अधिकतर चुप रहते। काका बिनाप बाग न था। दान-नीन निन बाग मैं देखा भूरी बाबा में अस्माद परिवर्तन आ गया है। बड़े प्रेम से मुझे खाना खिलाते हैं। जिम्नर बिद्युत है। कभी-कभी पैर भा दबा दत है। कारण मरी समझ में न आया। पता लगाने पर जान हुआ कि बाबू जी न एक कुतूहली छाड़ गे है कि मरी जान-हवान में एक लहरा है। मैं उसका विशाल भरी बाबा में

करा सकता हूँ। वस तभी से मेरी याद भगत होने लगी। मुझे पता लगा तो मैं बिहस कर रह गया। बात की रक्षा करनी थी। घन में नूरी काका का अकर म आश्वासन भी दे दिया। फिर क्या था। मरी चौगुनी मेवा होने लगी। काका को पूरा विश्वास हो गया कि मेरे माध्यम से विवाह जल्द हो जायगा।

एक दिन की बात है। टोले मुहल्ल बाला का जमघट लगा था। भूरा काका भा बैठ थे। उनकी गजी खोपड़ी पर उग दा घाँ हम बिस्वर बाल हवा में लाट-पाट रह थे। पीले गंदे दाना के नीचे आज बग्लता सुरती नहीं पान का बीड़ा था। छोटी-छोटी खुशी आत्मा में माटा काजन लगा था। बान के ऊपर भयजनी बीड़ी थी। चेहरे पर न मुसकान न गभीरता केवल बीजलापन था। समय उपयुक्त था। सब लोग काका को देख कर आनंद लना चाहते थे। सठ जी ने खुटकी ली—‘अरे भाई काका का विवाह कब करा रहे हो?’ उनके इस प्रश्न से सभी मेरा धार दखन लग। काका न नव-परिणीता की तरह शीश भुका लिया। मैं थोड़ी देर तक चुप रहा। मुझे लगा काका का हृदय भीतर ही भीतर उमड़ रहा है। मैं उनका हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा—‘काका मेरा जान-पहचान के एक ठाकुर साहब हैं। बेचार बहुत गराब हैं उनका एक २५, २६ साल की लड़का है। वह भयाना हो गई है। कोई लड़का मिल नहीं रहा। मिनता है ता उनका पास दहेज के लिये टका नहीं है। उन्हें एक सयाना लड़का चाहिए। जब तुम्ही कुआरे हो तो इधर उधर भटकन की क्या जरूरत। तुमने ज्यादा कुत्तीन तिलोकचंदी बस कहा मिलना। तुम्हारी उम्र क्या होगी?’

मेरे प्रश्न करते ही काका ने बिहस कर गीला भुका लिया।

बानत चाह नहीं सठ जी ने कहा—‘अब काह की शरम।

‘२५ २६ साल।’ काका ने लजाते हुए बहुत धीरे में उत्तर

फनगान का चवा कर दी। मरा काह प्रमाणस्यस्य सय का शिवाया।
 निमनग शिवा। निवि व श्नि एव अछ्छा मजमा इकठ्ठा हा गया। कुछ घाम-
 जिना का कुछ तमागवीना का। वाका का उलाम श्वन ही बनता था।
 घाज उहोन अघजी बाल बटाय थे। गजी सोपडी म नन गगाया था।
 कपडे साफ नियो थ। मजमा दस करसठजी बान— इतनी भीड़ ता किरपा
 तरी (परपात्री) मटगज क भापण म भी नहीं हुई। क्या बाल क वाका ?
 फनगान है फनगान काका ने बन्— ' ११ राज रात का गाणी
 स सय लोग आ रह हैं।

काह वन् अछ्छा सेठ जी ने कहा— रिक्का भज दें।
 नगी नगी बाव जी ने कहा— आप मुन चल जान्य। स्या
 गन कीन करेगा।

सठ जी चल पड। ग्यारह बजे रात तक चक्करस री। नग
 भग बारह बज जय सठ जी लौटे तो उहोने बताया— गाडी म कोइ
 नगी घाया। इनना मुनत ही वाका का चहरा मूख गया। मेठ जी न कुछ
 रर कर कहा— मीने गाडी चालो से पूछा तो उहोने बताया कि फनगान
 वाल भाय थे भगर ऊचाहार म सो गय। गाडी की बन्ती नहीं कर
 सक। भन रायवरेली आन क बजाय इलाहाबाद चल गय।'

इम समाचार स वाका की दत्ता एटम बम स ध्वस्त शिरागिमा
 जमी हा गयी। निराग हाकर बोले— रात म ऐसा ही होता है। सो
 न जात ता थोया न हाता। भव क्या किया जाय ?

करना क्या है सठ जी न कहा— दागी ने वपन भी तो पल
 दान चत्ता है वग च जायगा।

दात वाका का समझ म आ गई। रुखा चेहरा थोडा सा बिन्स
 उठा। माटिंग खत्म हुई। एक सप्ताह वाग में रग ग लने स्वय आ पट्टा।

मरे घात ही यार लोगों ने यह अपवाद फैला दी कि इस वष गान्गी नहीं हागी । लहरी न महगनी (चेचक) निकल आई हैं । मैं यही सदेन लेकर आया हूँ । काका मन मगोम कर रह गये । अक्ले मे चुपके से बोले — 'तो अब माग भर फिर इतजार करूँ ।

हा काका मैं कहा 'कोई बड़ी बात नहीं । तब तक तुम कुत्र गया भी नट्टा कर ला जिममे किमा के सामने हाथ न फपाना पड़े । बात काका की ममभ म आ गयी । दूसरे दिन काका बिना बताये ही चुपके से गाव चल गये । वहा गल्ला बचा । बडे भाइ तथा भाभी से भगडा किया । सो सो रुपय लेकर छहर आय । बाबू जी की सलाह से वह रुपया टाकवान में जमा कर दिया गया । धीरे धीरे साल भर बीन गया । काका मन पला कुन्नी हो गये थे । दिन भर पला गीचते । मुबह गाम बाबू जी के यहा काम करते । साल पर साल बीतने लग । पर काका की गादी न हुई । कभी लहरी के चेचक निकल आती । कभी उसका बाप मर जाता । कभी मा बामार हो जाती । काका सुनने । मइ न स्वस्थ होन की कामना करत । मान मनीषी चंगते । परसा बाटते । उह पूण बिश्वास था कि उनका विवाह होगा । काका रगीन सपन सजाते रहे । कही गहनार्द बजता तो उनका तिल घडक उठता । डोनी देखन ता खडे दखत ही रह जाते । बड की धुन पर स्वयं ताग नगाने लगत । धीरे धीरे दस साल बीन गये । न काका का विवाह हुआ न मरी आव भगत में कमी हुई ।

इस वष टाइप किया एक निमन्त्रण पत्र मिला । पत्र पडते ही मैं आचयचकित रह गया । लिखा था — काका के विवाह का उपलक्ष में प्रीति भोज है अतः दि० १० २ ६३ को चन्द्रमवन में ठीक ५ बजे सायं कात उपस्थित होकर कृतार्थ करें । दानाभिभाषी—एस०ग्न० मठ । पत्र पत्न हा मरा माथा टनका । पर प्रमदता हुई काका के हाथ पील हो गये । उह बहू भिन गई । ठीक पाँच बजे चन्द्रमवन पहुचा । वहा मंत्री

सजाई मेजों पर मिठाई नमकीन पल बर्गह का रन्ने लगी था। चाय का दौर चल रहा था। यार लोग रसगुल छान रहे थे। काका बीच में पियरी पहने तिराजमान थे। मैंने काका को बघाई दी। मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि काका का जोड़ा मिल गया है। पार्टी समाप्त होने पर मैंने बाबू जी से पूछा—वहा शादी हुई? वह विटम उठ। बोन—हो मठ जी से पूछो। मैं सठ जी की ओर मुखातिब हुआ। सठ जी बाल कसी शादी कसा विधान। यह नाटक था नाटक। दस साल तक ता चना लाय। क्या जिंदगी भर चलायोग।

‘नाटक! — मैंने आश्चर्य से पूछा।

जी हा सेंठ जी बोले— यार तुम भी साठ मान तक चगन ही रहोगे। घरे गज्ज भाड को जानते हो न। उसी का लडका भूरी की बहू है। यह लडका जनाना पाट बहुत अच्छा करता है। प्रतापगढ़ एक बारान गई थी। वह भी वही था। उसी को जनाने कपडे पहना कर काका क माथ गठबघन करा दिया गया। उसी की आज दावत है। अगहन में गौना हागा तब लडकी आवेगी। काका न दो सी रुपया जमा कर रखता था। मो रुपय लडकी के गहने-कपड़ों और नेगचार में खर्च हो गए। बाकी की पार्टी उठ रही है।

मैंने भूरी काका की ओर निहारा। वह अत्यधिक प्रसन्न थे। मैंने सेंठ जी से कहा— वचारे ने जीवन भर विवाह की प्रतीक्षा की अब मरघट तक गौन की करे। काका ने धूर कर मेरी ओर निहारा। मैंने पूछा—काका गौना कब आ रहा है?

अगहन सुदी तरस को —काका न साइन बिचरवा ली थी।

‘वाह! मैंने कहा— बहुत अच्छा। विवाह में नहीं बुलाया तो

गौने में मुझे जरूर बुलाना। काका न स्वीकृतिसूचक शीश हिला दिया। सब लोग मुस्तुरा उठे। काका तिरट्टी निगाह से देखते हुए भीतर चल गये मानो मुहागरान मनाने जा रहे हों।

समारम्भ की प्रतिष्ठा



उक्त कालेज की साहित्य समिति के उद्घाटन के लिए एक मंत्री का आगमन उम जिल के लिए बड़ी महत्वपूर्ण घटना थी। कालेज के प्रतिष्ठान में तो वह अपूर्व अवसर था ही विद्यार्थियों ने कभी नहीं सोचा था कि उनका समारम्भ का एकदम इतनी प्रतिष्ठा मिल जायगी।

क्योंकि ज्यो ही पता चला कि स्वयं मिनिस्टर महोदय पधारने वाले हैं तभी से डिप्टी कमिश्नर और पुलिस कप्तान साहब के दो एक चक्कर कालेज के लग गये—यह देखने के लिये कि इन्तजाम में तो किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं है।

उक्त कालेज की स्थापना तीन वर्ष पहले हुई थी। और उसकी हिन्दी साहित्य समिति का उद्घाटन आज बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर होन जा रहा था। कालेज के प्रिंसिपल महोदय ने दो एक साहित्यिकों को उद्घाटन के लिये निमन्त्रित करने की कोशिश की पर जान कैसे डिप्टी कमिश्नर साहब ने मामले में थोड़ी दिलचस्पी ले ली और मंत्री महोदय का आगमन निश्चित हो गया।

प्रिंसिपल महोदय ने कहा यथा एक आश्र मागता था भगवान न दा द गी। इस निमित्त नगर के घानी मानी सेठ साहूवार का कावज

में आवेंगे ही और उनसे चंदा वगून वगन का माग प्राप्त हो जायगा। पर जो ताम बात थी वह यह कि मंत्री महोदय व आन स सरकार में छासी घण्ट मिलने में मन्त्र होगी। जिन व डिप्टी कमिशनर बड़े मुल आदमी थे। अपनी पच्चीस वष की नौकरी में कई मन्त्रों और मंत्रि मण्डल देस चुके थे। और आज व राष्ट्रीय जमान में भी उन्ही का मित्रा चलता था। मुक्तिल स मुक्तिल परिस्थिति का हन निकाना उनका बायें हाथ का खेल था। अचरज की बात नहीं कि डिप्टी कमिशनर साहब मोहोदा मरय मंत्री के भी बड़ विश्वासपात्र थे।

उही महोदय के प्रयत्नों का फल था कि कालज व समागत व निये मंत्री महोदय उपलब्ध हुये। प्रिंसिपल साहब उनका उपचारो व भार व नीचे अब गये।

पर जिलाधीश साहब का उद्देश्य कुछ और था। बात असल में यह थी कि सत्त पचमी व दूसर ही दिन नगर का म्युनिसिपल चुनाव था। शासकीय-दल और विरोधी दल तुल्य बल थे। मुख्य मंत्री से लेकर डिप्टी कमिशनर साहब तक सभी चाहत थे कि शासकीय दल की ही जीत हो। पर डिप्टी कमिशनर साहब को उनसे भी अधिक चिन्ता थी। यदि शासकीय दल हार गया तो उन पर भी यह आरोप आता कि इनमे टक्क (काय बुगलता) नहीं है जो एक सुयोग्य अधिकारी में होनी चाहिये। वह जीत जाय तो उनका सितारा भी मुख्य मंत्री व दरबार में अधिक चमक जाय। इसलिये इस चुनाव में वे इस तरह दिल्चस्पी ले रहे थे मानो वे स्वयं ही एक उम्मीदवार हो।

लकिन सामना बराबरी का था। इसलिये मत गणना व ठीक एक दिन पहिले ऐसा कुछ जरूरी था जिससे पलड़ा सरकारी दल की तरफ ही झुक जाय। उस नगर में एक विगिष्ट जाति व पास ठोस दो हजार वोट थे। वह जाति जिस ओर फुक जाय वही चुनाव जीतेगा।

मौभाग्य से मन्त्रि मण्डल में उस जाति के एक मंत्री विद्यमान था । डिप्टी कमिश्नर का दिमाग और मुख्य मंत्री की असाधारण सूझ-बूझ व कारण यही फलना हुआ कि उक्त मंत्री महान्याय का नगर में पधारना ही कुस्मेत्र में भावान श्रीकृष्ण के आगमन जमा हो जायगा । निहाजा वही इमक लिए तैनात हुए ।

सौभाग्य से उक्त कालज की हिन्दी साहित्य समिति व उद्घाटन का आयोजन हो रहा था । ज्यो ही डिप्टी कमिश्नर साहब व काना में हमकी भनक पड़ी फौरन उन्होंने ऐसा सुन्दर चक्रव्यूह रच डाला कि समा रम का बन्दोबस्त लाजवाब ! क्या कहने हैं ?

महाभारत का उद्धान केवल अपने मतलब का हिस्सा ही पटा था । उनका चुनाव युद्ध घम युद्ध है या नहीं यह सोचन विचारने की न तो उन्हें फुमल ही था न जरूरत । उनका हाल उसी अभियुक्त की तरह था जिम दूसर की औरत भगाने के मामले में तीन सान की सजा हुई थी । जब प्रदालन न पूछा कि तूने यह गुनाह क्या किया तो कम्प्लेन वांता कि यह बात मैंने रामायण से सीखी ।

जज साहब उसकी हिमाकन दख कर दग रह गये । पूछा—कैसे ? तो अभियुक्त न जवान दिया कि— रावण ने राम की पत्नी सीता का भगाया उस पर से ।’

पर उसके कारण रावण का बध हुआ यह तू जानता है ?
—जज साहब न पूछा ।

नही साहब वहा तक मैं रामायण पढ नहीं पाया कि बीच में गिरफ्तार कर लिया गया ।

‘अच्छा तो अब तुम जेल में जाकर बाकी की रामायण पढ़ना ।
—एमा कहकर अभियुक्त महागय सरकारा महमानी के नियज न

क्याकि सिर्फ दो दिन पहले ही दूर व्हालीफोन पर यह कार्यक्रम तय हुआ था। साहित्य समारोह के लिये बमन पंचमी से बढ़कर कोई शुभ मुहूर्त नहीं है। और खासकर यदि चुनाव की तारीख नहीं टल सकना है तो उत्तम मंगल मुहूर्त की व्यवहलना करना धार साहित्यिकता होगी। मो बड़ी मुहूर्त बहाल रहा, और पी० ए० साहब को भाषण लिखन लिखाने में उड़ी भाग दोड़ करनी पड़ी।

रत किमी तम्ह में श्री महोदय अपने दल-बस सहित राजधानी में खाना होकर रात को ग्यारह बजे के करीब उम जिले के मुकाम पर पहुँचे। फराब डेन मी मील का मोटर का सफर हुआ। कुछ थकावट आ गयी। दूसरे दिन सुबह आठ बजे ही समारोह का इसलिये वे जल्दी मान के लिये चल गये।

इधर पी० ए० साहब ने दूसरे दिन के विविध कार्यक्रमों के वागजात जमाने शुरू किया तो ऐसा कि जल्दी में भाषण की फाइल ही घर भूल आय। हाय तोबा! अब क्या होगा? जाध पीन घटा तो माथ के सभी वागजात और मन्त्रों की ध्यानबीन में ही बीन गया कि कहीं गलती से वह फाइल दबी हो तो मिल जाय। जब यह भरोसा हो गया कि फाइल साथ नहीं आयी है मज पर ही रह गयी है तब घड़ी ने टन से बारह बजाय।

अब इस मध्य रात्रि में क्या होगा? वापिस डेढ़ मी मील माटर भेजकर पाण्डुलिपि मगाने में तौ बड़ी दिक्कत होगी। मुमकिन है समय पर आ भी न सक। मन्त्री महोदय तो लिखित भाषण ही किमी बखर दे रत है स्वयं-स्फूर्ति से दिया गया भाषण यदि टल सके तो टानना चाहिये। उसी हानत में क्या किया जाय?

पी० ए० साहब ने फौरन डी० सी० साहब की शरण ली। उह नींद में जगाया। उह कुछ मुभनाहट तो हुई पर कम समय उमम क्या काम बनता? जाखिर इस मस्ट में ये काई न काई रास्ता तो निकालना

ही हागा। व अनुभवों ग्रासनाधिकारी थे -हार मानना उनक लिये असभव था।

उठान पीरन कहा कि चलो स्थानीय हाई स्कूल में हिन्दी का एक प्राचाय पढ़ाते हैं उन्हीं से तुम्हें भाषण लिखा लिया जाय। यू पी० ए० साहब ने दिमाग में यह बात उठी कि वह खुद ही इसे क्या न लिख डाल ? पर साहित्य का विषय था सकोच कर गया। आखिर उसे प्रेम में भी तो छपाना था। और कोई विषय होता तो जरूर लिख डालत।

सोने बारह बजे वह करीब पण्डित विश्वनाथ जी शास्त्री का दरवाजा टटलटाया गया। उन्होंने आवा मन्न मलते ही दरवाजा खोला तो देखा—कि एक मंत्री महोदय की मरचारी चमाचमाती हुई मोटर खड़ी है और दरवाजा पर डिप्टी कमिशनर साहब पुलिस के एक डिप्टी साहब तथा एक पारिवारिक व्यक्ति खड़े हैं।

शास्त्री जा पढ़ने लगे बहुत घबड़ाये। गति भगन और राह की गति के कारण वह बोन सा भय उपस्थित हो गया यह सोच कर उनकी ना ना क्या हाग हवास ही उड़ने लगे।

पर जब डिप्टी कमिशनर साहब ने मृदु शब्दों में अपना मनम्य सुनाया और उनमें रात ही रात एक साहित्यिक भाषण लिखने का आग्रह किया तो उनकी बाढ़ खिन्न गयी। उन्होंने अपनी लम्बी चुन्क्या खोलकर फिर एक बार बाध ली और बोल— भव्य ! राज्य-द्वार की अनुशा का पालन करना प्रायः मानव प्राणी का परमोच्च कर्तव्य है एसा शास्त्र बचन है।

डिप्टी कमिशनर साहब का यह मंत्र शास्त्राय मुन्न का समय न था। आखिर त्याग कर कि भाषण पर हारन में माड़ साल बत्र मुन्न पर लपार हो ज ता चाखिय ब चन गय।

मात्र पानाय पति न विवनाय शास्त्री के आनन्द और अभिमान

का पागवार नहीं। फौरन अपने गयन बख में गया और अपनी जगो हुई घमपरनी को और भी इडबडा कर जगात हुए बोल—‘दम्बती हो कैसा राज याग आया है ? मैं तुमने पढ़ने ही कहा था यनि राहु पराक्रम में अघान तीमरे स्थान में बैठ है, और मुकु एकाग्ना है अथ न लाभ स्थान में है, वह टल नहीं सकता—जसा ही मैं दृढतापूर्वक कहा था न ? तो ला रेखो, आज घर बड़े नौद से जगाकर राज याग आ पडा न ?’

आचार्य पत्नी आखें फाड़कर और मुह ड़ाकर भाग्य के इस घट भुन उमेप का दम्बती रही। उन ग्रह योगों का मम अपनी घमपत्नी को ममभान की क्रिया में पण्डित जी का भाषण लखनप्रारम्भ करने में बाध पौन पण्डे की देर हो गयी।

इधर सात बजे मुबह में ही माहिल्याचार्य पण्डितजी के दरवाजे पर एक मोटर खड़ी थी जिसमें एक सिगाही बैठा था। मुहल्ल बाल हम अनहोनी घग्ना को गता तल अगुली न्बाकर आश्चयचकित हा खलते थे। दो एक बड़-बूढा न कहा भी कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ही यह गम घनी आयी कि राज-दरबार में साहित्यिका का सम्मान होने लगा है। आचार्य जी की पत्नी उन बातों से बड़ी प्रभावित थी पर स्वय आचार्य जी को हम समय अपने भाषण-नखन का छाड़कर और कुछ नहीं सूझता था। उनके चारा तरफ पाणिनी काय पिंगल वामिकी आदि के ग्रन्थ खुल पड़े थे और वे स्वयं रजाई आकर एक मद्दूक का टेबल जैसा उपयोग करके अपनी रचना करते जा रहे थे। उनके घर में घड़ी तो नहीं थी पाम भी घग्नाघर था। उमी से काम चला लिया करते थे। सिफ इममें एक छात्री भी गल्ली हा ययी कि जब घण्टाघर में सान के घण्टे बजे तब आचार्य जी ने छ भी गिने।

इधर आठ बज गया और कानेज के विशाल प्रांगण में धाना नमुनाय उमड उडा। चारा तरफ भण्डिया बदनवार और ग्राम के पत्तों के

सांग सग ध । डिप्टी कमिन्तर की घोषोजन कृपानता यन-नन गिगाई दना थी । नगर व प्राय गभी सगबागी कमचारी तथा उनकी पत्नियां ममारभ म उपस्थित थी । मज्जितामा की मन्त्री मन्त्राय व मामन ही गटना पाय पांच बतारो म बिठाया गया था । प्रमग की गामा बडान का इच्छि म किसी बात की बसर नही रक्की था । बस इसी भाषण व मामन म काई गहबह न हो जाय इसी की चिन्ता थी ।

ठीक घाठ बज मच पर मन्त्री म होय बानन व प्रमिगम डिप्टी कमिन्तर पुलिस कप्तान तथा साहित्य समिति व अन्य । मन्त्री और उन मान ध और उनके पीछे दो एक् चपरामी पुलिस दारोगा धानि मरबारी कमचारी ध ताकि बकन-जहरत पर उह दोह धुन व लिय भजा जा सक । कहने की तो समारोह का सभापति एक् विद्यार्थी था, पर मारा सचानन डिप्टी कमिन्तर साहब व इगारो पर यवकत हो रहा था ।

इपर स्वागत-गीत प्रारभ हुआ और उपर जिनाधीन न एक् दारोगा की आचाय जी व पास भेजा कि भाषण तथा उसक रचमिना जिम भी स्थिति म हो उह मोटर म बठाल कर ले आघो । ब्याम पीठ पर साहित्याचाय जी के लिये भी एक् कुर्सी रख दी गयी थी । आध घण्टे व वह मोटर आयां तब तक रिपोट आदि पढी जा रही थी । भाषण का टाइप कराना आवश्यक था पर समय नही हो सका । फिर भी मन्त्री जी ने अपन पी० ए० से कहा कि मैं परिस्थिति सम्हाल लूगा ।

जब मन्त्री जी भाषण देने व लिए सडे हुए तो डिप्टी कमिन्तर साहब के इशारे पर सभा मण्डप म चारो तरफ तालियो की ऐसी बरतल ध्वनि कि मन्त्री महोदय का दिल खुगी स फूल उठा और उनका उत्साह बढा एव उहोने भाषण देना गुरू किया-
 X
 X
 X

देवियो और मञ्जरो ।

तानिया की ध्वनि अब भी उनक कानो म गूँज रही थी और उसी क नगे म व भूम भूमकर बोने—

×

×

×

मञ्जरो और देवियो ।

लिखित भाषण पढ़न का उहें भान नही रहा और उनके मुखार-विन्द म साहित्याद्यान का सौन्दर्य द्वि गुणित करने वाल प्रभून भङ्गने लग । उनके हितचिन्तको का तरफ म उह एक हिदायत यह दी गयी थी कि जिस समाज म भाषण करने जाना हो उसकी जम कर तारीफ कर दिया कगे । वम, शान्ति-समुदाय आनन्द और अभिमान स पून कर कुप्या हा जायगा और उम पाल्याता के मुह की तरफ दग्गन का ध्यान हो नहीं रहगा । हिन्दी भाषि दको की सभा हो ता कह दा कि उसी का साहित्य श्रेष्ठ है । बगला भाषिया की सभा हो ता कहा वह विन्व म सबसे अधणी है । पराठी भाषी हा तो कहा दुनिया म उमरा मुकाबला काई साहित्य नही कर सकता । ब्राह्मण हा ता कहा उनके बिना समाज का रथ नही चल सकता । हरिजन समाज म भाषण दना हो ता के मारा गासन मून उनके हाथ म लिये बगर दस का कयाण नही हागा । महिलाका की सभा हो तो कह दा कि दुनिया के राष्ट्र अपनी नामन व्यवस्था उनके हाथ मौप दें तो मिटो म मुड बंद हो जाय और विन्व गाति रवाई रूप स स्थापित हो जाय ।

इसी घुन म उहोंने आज का भाषण गुरू किया । हिन्दी ! कहा हा । हिन्दी का साहित्य दुनिया के सभी साहित्या से श्रेष्ठ है । फिर वह देश इंग्लण्ड हा या अमेरिका हो या अफ्रीका हो । और इस तरह बचपन म भूगोल म पढ़े जितन देश उ ठ या थ उनकी गणना की बिमम पाच मिनट निकल गय ।

‘और हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास ! क्या उनकी रामायण है क्या क्या है क्या आनन्द है कहीं सुन्दर अज भाषा है ? अहा हा !

लोगो ने तालियाँ बजाईं पर थपथपाय । मन्त्री महात्म्य का लगा कि दर असल ऊँच दर्जे का भाषण है लोगो को पसन्द आ रहा है । इसी ताव में बोल—

तुलसीदास जी को पत्र पर दुनिया के कितने साहित्यिकों ने प्रशंसा नहीं की ? यहाँ तक कि स्वयं वाल्मीकि ऋषि को भी उसी का आश्रय लेना पड़ा ।

फिर तानियाँ और तालियों पर तानिया । बाकी ऐसा लगा था कि लोगो का भाषण बहुत ही अच्छा लग रहा था । डिप्टी कमिशनर ने जान क्यो अपनी कुर्मी में ही स्थिर उधर भटक रहे थे । सामने दस्ता तो मन्त्री महोदय इस पक्ष से लड़े थे कि जब भाषण इतना पसन्द किया जा रहा है तो कम से कम घण्टा भर बोल बगल नहीं रहेंगे ।

अकस्मात् डिप्टी कमिशनर का ध्यान थोताओ की ओर गया तो दस्ता कि म्युनिमिपल चुनाव में विरोधी दल के दस-बीस अकल्प लोग भी कुर्मी की दा कतार रोक कर बैठ है । भाषण का असली स्वागत तो उसी दल की ओर से हो रहा था ।

तालियों के हो हल में उनका निज महायक तथा मन्त्री महात्म्य की भाषण में कुछ कानाफूसी हुई । फौरन एक गिलास पानी मगवाया गया जिस पीकर मन्त्री महोदय ने कहा—

इस प्रकार मैं भाषण सामने बहुत तर तर बोल सकता हूँ । पर मैं चाहता हूँ कि भाषण साहित्य के बारे में मेरे गंभीर विचार सुनें । मैं मैं भाषण सामने रखना हूँ ।

और उद्दान आचार्य प० विश्वनाथ जी शास्त्री के हस्त लिखित

भाषण को पढ़ना शुरू किया। पर पण्डित जी का नाम कितना भी अगाध क्यों न हो, अक्षर इतने कलापूरा और कसीदेनार थे कि दो वाक्य भी ठीक ॥ पढ़ना मुश्किल हो गया था। माननीय व्यक्त्याता जी घटक अटक जाते थे और लोग फिर ताली बजाने लगते थे। इसी हा हलचल में फिर एक एक बार कानाफूँसी हुई और प्रिसिपल माहिर न घापणा की कि मन्त्री महा दय का स्वास्थ्य कुछ कमजोर है इसलिए उनका भाषण भाहि याचाम ५० विश्वनाथ पढ़कर सुनावेंगे।

शास्त्री जी मंच पर सामने आय और अपनी चुटिया को एक बार उगलिया स सहताकर उसे अपने माँफ क नीचे व्यवस्थित दबा कर बाल — साहित्य मगन में दक्षिण्यमान आलोक से जगमगाने वाला लक्ष्मी ।'

फौरन सानियों की कड़कड़ाहट हुई। पण्डित जी का भाषण बन्त ऊँच दर्जे का था। जन साधारण की बुद्धि इतने गहन विषय और उससे भी गहन प्रतिपादन का सुनने समझने में कुछ ओझी पड़ती थी। किंतु पण्डित जी बिना श्रोन समुदाय की इच्छा अनिच्छा की परवाह किए एक एक शब्द पर जार दे दकर अपना भाषण पढ़ते गये। साहित्य में का थ, फलकार याकरण आदि तत्वों की बड़ी ही विद्वत्पूरा चर्चा की गयी। भिन्न भिन्न साहित्य शास्त्रियों के मतों की चर्चा करते हुए अपना आवाज एकाएक बुलन्द कर शास्त्री जी बोले—

किंतु मेरा यह मत है कि — इसमें मेरा शब्द इतनी गजना के साथ कहा गया था कि लाऊँ स्पीकर भी काप उठा।

अवस्थात् विरोधी-दन क लाग जिन कतारा में बैठे थे वहाँ से आवाज आयी — आप तो ऐसे पढ़ रहे हैं पण्डित जी कि यह मत प्राप्त हो है। पर असल में भाषण तो मन्त्री जी का है।

राज-योग से प्रभावित पण्डित जी भला क्या किन्हीं की हुज्जत

और पिं दी का मवश्र्थ ठ कवि तुलसीदास । क्या उनकी रामायण है क्या कथा है क्या आनन्द है कसी मुन्तर ब्रज भाषा है ? मन्त्रा है ।

लोगो न तालियां बजाइ पर थपथपाय । मन्त्री महोदय को लगा कि दर असल ऊंच दर्ज का भाषण है । लागो को पसन्द आ रहा है । इसी ताव म बोल—

तुलसीदास जी को पसन्द दुनिया क किनन तालियोंको न प्ररणा नही ली ? यहा तक कि स्वयं बाभौकि कपि को भी उमी का आधार लेना पडा ।

फिर तालिया और तालियो पर तालिया । बाकई ऐंसा लगा था कि लागो को भाषण बहुत ही प्रकड़ा लग रहा था । डिप्टी कमिश्नर न जान कयो अपनी कुर्मी म ही ग्यर उधर भटक रहे थे । सामन देखा तो मन्त्री महोदय इस पक्षरे स लडे थे कि जब भाषण इतना पसन्द लिया जा रहा है ता कम स कम घण्टा भर बोल बगर नही रह्य ।

अकस्मात् डिप्टी कमिश्नर का ध्यान थोताओ की आर गया तो दखा कि म्युनिसिपल चुनाव म विरोधी दल के दस-बीस प्रकण्ड लोग भी कुर्सी की दो बतार रोक कर बठ है । भाषण का असली स्वागत ता उसी दल की ओर से हो रहा था ।

तालियो के हो हल्ल म उनके निज सहायक तथा मन्त्री महोदय की आपस म कुछ कानाफूसी हुई । फौरन एक गिलास पानी मगवाया गया जिसे पीकर मन्त्री महोदय ने कहा—

इस प्रकार मैं आपके सामने बहुत देर तक बोल सकता हूँ । पर मैं चाहता हूँ कि आप साहित्य क बारे म भरे गभीर विचार सुनें । य मैं आपक सामने रखता हूँ ।

और उन्होंने आचार्य प० विश्वनाथ जी शास्त्री क हस्त लिखित

भाषण का पढ़ना शुरू किया। पर पण्डित जी का ज्ञान किन्ना भी अगाध क्यों न हो अक्षर इतन कलापूर्ण और कमीदेदार थे कि दो वाक्य भी टीक में पढ़ना मुश्किल हो गया था। माननीय 'यास्याना' जी अटक-अटक जाते थे और साग फिर ताली बजाने लगते थे। इसी ही हल्ल में फिर एक एक बार कानाफूँसी हुई और प्रिसिपल साहब ने घाघणा की कि मन्त्री महा दय का स्वास्थ्य कुछ कमजोर है इसलिये उनका भाषण साहित्याचार्य प० विद्वनाथ पंडकर सुनावेंगे।

गान्धी जी मंच पर मामले भाष्य और अपनी छुटियाँ को एक बार उगलियाँ से सहलाकर उस अपने माफ़ के नीचे व्यवस्थित दबा कर बोल — साहित्य गगन में दलीप्यमान आलोक से जगमगान वाले मक्षत्रों।

फौरन तालियों की कड़कड़ाहट हुई। पण्डित जी का भाषण बहुत ऊँच दर्जे का था। जो साधारण की बुद्धि इतने गहन विषय और उसमें भी गहन प्रतिपादन का सुनन-भमभन में कुछ झोड़ी पड़ती थी। किंतु पण्डित जी बिना ध्यान समुदाय की इच्छा अनिच्छा की परवाह किए एक एक शब्द पर आर दे-दकर अपना भाषण पढ़ते गये। साहित्य में काय चलकार व्याकरण आदि सत्त्वों की बड़ी ही विद्वत्तापूर्ण चर्चा की गयी। भिन्न भिन्न साहित्य शास्त्रियों के मतों की चर्चा करते हुए अपनी आवाज एकाएक बुलंद कर गान्धी जी बोल—

किंतु मेरा यह मत है कि— इसमें मेरा शब्द इतनी गजना के साथ कहा गया था कि साऊंड स्पीकर भी बाप उठा।

अकस्मात् विरोधी-जन के लोग जिन कताग में बड़े थे वहाँ से आवाज आयी— आप तो एसे पढ़ रहे हैं पण्डित जी कि यह मत आपका ही है। पर असल में भाषण तो मन्त्री जी का है।

राज-योग से प्रभावित पण्डित जी भला क्या किसी की हुज्जत

मन्त्री महान्य न शाम का राजधानी में लौटने ही मुख्य मन्त्री जो व बगले पर जाकर उद्धाटन-ममारोह का बड़े उत्साह के साथ बणन किया और बाह-बाही तथा शावाणी बसूम करती ।

प्रेम के लिये सम्मेलन के फाटा और मन्त्री महान्य के भाषण का प्रतिपा भी प्रकाशन विभाग के द्वारा भिजवा दी गयी । य वही प्रतिपा थी जिन्हें पी० ए० साहब घर ही भूल गये थे ।

दूसरे दिन प्रातःकालीन दैनिक-मन्त्री में भाषण और ममारोह के बड़े रावक बणन पढ़ने के लिये मिले तथा बड़े फाटा छप । हर जगह हर घाज बड़े अवस्थित दृग से निपट गयी ।

मिफ एक ही बात लटक गयी —

कि रात को एक तार आया कि म्युनिमिपल चुनाव में शासकीय दल का धोड़ में घोटों से ही पराभव हो गया ।

प्रशंसा के चक्कर में फसकर



मुझे बहुत सी चीजें प्रिय हैं। कह तो कुछ वं नाम बताऊँ ? गुलाब का रस, जूही की माना रसम का कुत्ता, साँप का बर्फी दही का गुब्बारा घमेली धो की जलेबी और मगही पान मिल जाए तो ममभ दीजिए— उहा छाहि नहि बर वकुण्डा ।

ब्राह्मण हूँ पर निरा पैदा नहीं। मुझे अपनी पुस्तकें भा पम प्रिय नहीं। लेकिन पुस्तकें से प्यार है इसके यह अर्थ नहीं कि मैं समारी नहीं। बोधी बच्चे घर घर सभी तो मुझ प्यार है।

फिर भी एक वस्तु ऐसी बच ही जाती है जिसकी इन सब चीजों से कोई तुलना नहीं। वह कुछ बहुत बड़ा वस्तु नहीं। एक छोटी सी बात है। यहाँ अपनी मामूली सी प्रशंसा। कम, यही एक चीज ऐसी है जिस मुनन के लिए मैं क्या नहीं कर सकता क्या नहीं सह सकता ?

माना न दीजिए अपना न दीजिए अपना रोजगार न दीजिए न किन कृपा करके दिल मोनकर भूठी नहीं, मेरी प्रशंसा किए जाएँ मैं आपकी जूनियो का गुनाह हूँ। उस हालत में मुझ जस बदाम का नौकर, व उजर चाकर आप कहो गोज भी न पाइया। चानाम के ऊपर मायु हाती आई। रुकड़ा ही नास्त बन। न किन टिक बहो जो मेरी प्रशंसा

करत रहे । जिमन खरी कही मैंने उसमे अपनी राह गही । क्या बनाऊ जानता सब हू मगर इस मामले मे मानता किसी की नहीं । खरी बात कह सक्षम सकता हू । लेकिन खरी सुनकर मुझे प्रसन्नता हाँगिज नहीं होती । अगर मुझ पर मोठी बात का हो जाना है । इसे लाचागी कहिए चाह तो दुर्गा भी कह लाजिए । बात यह मुझ मे है । मैं इससे इनकार नहीं करता ।

हिन्दुस्तान मे सान का बड़ा मोल है । लड़ाई समाप्त हुए एक जमाना हो गया मगर इसका भाव गिरते ही नहीं । कहते हैं 'प्लाटिनम' का मूल्य मान से भी बड़ा है । रत्न-जवाहरातों के क्या कहने । लेकिन मेरी नज़ि मे इन सबका मूल्य प्रगसा के दा मोठ शान्ति के मुकाबल तीन कीड़ी का भी नहीं ।

इमीलिए मैं प्रगसक के मूल्य को अच्छी तरह जानता हूँ । क्या ? जानू ? सरकार भी तो प्रगसकों के चल पर चलती हैं । सरकार क्या भगवान का भी अगर प्रगसकों का टोटा पड़ जाय तो उसकी भी बधिया बठ जाए । तम्ह-तरह के जालच देकर बठ अपन गीत उनसे गवाया करता है । कदियो के साथ भी यही बात है । कवि लोग अन्न-जल पर घाड़ हो जान हैं । य तो प्रगसा के पादप हैं । मिनती रहेगी तो खिनत रह्य नहीं तो कुम्हमान क्या दर लगना है । इमीलिए उस दिन रेल मे जब मुझे मरी रचनाओं के एक प्रगसक अनायास ही मिल गए तो खुशी का ठिकाना न रहा ।

एक लोग उस निज गाजियाबाद मे दिन्ता लोट रहे थे । गाड़ी मे जा माहि य चर्चा चलो तो बात बात मे एक महोदय मेरा नाम जान गए । वह स्वयं मेरे पास बिमक आण । कहते लग घय भाग । क्यों से आपका नाम पढ़ने-सुनते थे । बड़ी समझाची आपके दशनों की । क्या कमाल का लिखन है आप ? आपकी रचनाओं को तो हमने अम्बारो से काट काटकर एक रजिस्टर मे चिपका रखा है । आपकी पुस्तक के सभी

सावरण हमारे पास हैं। मेरी पत्नी तो आपकी रचनामा के पीछे गमभिन्न
जैसे पागल है। धीरे-धीरे मेरी छाटी मुन्नी को भा-आपकी बर्न बर्न
साए बटख है।

क्या था मानो बूढ़-बूढ़ से प्रमृत्त भर रहा था। माया की
सारी यथान हिम्मा की टन-टन धीरे-धीरे साहित्य बना से उत्पन्न उमता जग
सब-मुख्य चीनल तरल धीरे-धीरे बहूँ रसमय हो जाता। मेरे मन की बर्न बर्नी
जैसे खट करके तिल उठी।

वगन में बड़े भारी मित्रों की धीरे-धीरे जरा-जरा देना धीरे-
महसूस किया कि उन पर ही नहीं इन अनजान मित्र की बातों का
प्रसर सारे दिनों पर पड़ा है। कुछ ही सचिद में मैं उस दिने का एक
महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बन गया।

अपनी प्रसन्नता सनकर क्याकि सज्जन सबोध करने लगते हैं मैंने
भी वही किया। मैं विनयी हो आया। कहने लगा जी मैं क्या हूँ? या
ही कुछ लिख बिल लता हूँ। आप जैसे गृणीजनों को कुछ पसन्द आ जाय
मेरे लिए यही बहुत बड़ी बात है।

विनय बहुत बड़ी बात है। विनय बड़ी का ही सीमा देती है।
अनजान मित्र कहने लग — जानी ही सहनशील होते हैं। शिष्टता छोड़ो
क बाने नहीं आती। छोड़े बतन में तो पानी छलकता है। मैं हिन्दुस्तान के
अनेक साहित्यकारों और कलाविदों से मिला हूँ। मुहदेखी नहीं कहता
राम राम उनमें यह बात कहा? आपकी तो देखकर ही ऐसा लगता है जैसे
अपने परिवार का ही आदमी है। — कहते कहते उ होने सिगरेट का पकट
मेरी ओर बढ़ाया।

मैं धीरे-धीरे विनम्र होकर हाथ जोड़ लिए। तो वह कहने
लगे — 'अरे आप सिगरेट भी नहीं पीते? सब धीरे-धीरे पीते होगे? लेकिन
इतनी मादर इतनी सरस चीजे आप लिखते कैसे हैं? सब कहता हूँ कि

मैं तो जब आपकी रचनाएँ पढ़ने लगता हूँ तो मुँह मुँह खो बैठता हूँ। अहा ! अभी परसा के साप्ताहिक में आपकी वह भ्रमर और कली वाली रचना पढ़ी थी ! क्या कहते हैं ? दिस बाग-बाग होगया !'

बाता का यह सिलमिला अभी और लम्बा चलता, मगर गाड़ी गाहदरा स्टेशन पार कर यमुना के घुन पर आ गई थी। दिल्ली जंक्शन आने हा धाया था।

बातो-बातों में बात हुआ कि मेरे मेहरबान दोस्त कलकत्ते में अपना कोई बड़ा व्यापार चलाने हैं। दो दिन के लिए किसी काम में राज धानी घाए हैं। वह जिम होटल में ठहरने वाले थे उन्होंने उसका पता भी बताया और आग्रह किया कि मैं उनके यहाँ कम-से कम एक बार चाय पीकर तो उन्हें अवश्य ही मुनासब करूँ।

दिल्ली में बसे १२ वर्ष में ऊपर हो गये। लेकिन अभी भी दिल्ली मुझ से कुछ दूर ही बनी हुई है। पुराने कह गये हैं कि दिल्ली में आदमी को जरा नाच समझकर चलना चाहिये। यहाँ सागा से व्यवहार करते समय उन्हें बीस बार परखना चाहिये। इसलिए कान लाल कहे मैं किसी को अपना घर नहीं दिखाता। मित्र लोग मरी इस आदत से बली भाति परिचित हैं लेकिन कुछ अपनी आत्मा कुछ पत्नी के अदृष्ट स्वभाव और कुछ भ्रष्ट बचत याजना का असर कि मित्रों के उलाहने और अमिनो के ताने अभी मुझ पर असर नहीं करत।

लेकिन इस बार की बात दूसरी थी क्योंकि श्रीमती जी मरे पधारी हुई थी और अभी महीन की सिर्फ तीसरी ही तारीख थी। आपने क्या क्षिपाऊ सबसे बड़ी बात यह कि उन गुण घाहक मित्र की वार्ता सख्त मरी पूरी तसल्ली भी नहीं हुई थी। परिणाम यह कि एक कदम चलने उठ गया। बस ऐसे मामलों में मैं उचित अनुचित का जग कम ही खयाल रखता हूँ। लेकिन इस बार न जाने क्या हुआ कि उनका मुँह से अपनी गरा

अब माँ भी भरास हनुमता ।
बिन हरि वृषा मिनटि नहीं सता ॥

पढा-पढा मैं यही सोचता रहा कि इसी प्रकार कोई नोचक मिल जाय तो मुझे क्या कालियास मिटन, नाममि दग नहीं नगेगी । सोन सोन मुझे यह विश्वास भी हो गया कि ईर्ष्या करें मेरी कला का साधना का, समझने वाले अब पैसा मेर महान् बनने में अब देर नहीं ।

दूसरे दिन काफी देर गए मेरी भाख खुली । रात का तुमार अभी पूरा-पूरा नहा उतरा था । मैंने आइने में गौर धान जरा सीधे किए । कमीज डानकर बाहर चय पीने निर आया जब खाली है । सोचा कुछ पस पैना चमू । कप की न भी चुकाना है ।

लेकिन मेज की दरज खोली ता सन्न रह गया । व्यस्त पड़ी थी । मनी बग गायब था । दीडकर खरवाजे पर गए लाता कुजी सब मन्दर से ठीक तरह बन्द थे । जीना विडकी सलामत थे । रात को तो साने के बाद कोई आया नहीं । तब हुआ ?

मेरी आँखों के सामने स प्रगसा का परदा खर स वि एक एक करके मुझे बन् शाम की सारी घटताए था आने स मुझे काफी महगी पड़ी थी । मेरे महारबान मिथ महीने नर का अपनी प्रससाओं के पारिवर्तिक में बसूत कर ले गए थे । भल कही होटना था पक्का पता बता देने हैं ।

चाय के जूट बतन चारों तरफ फले सिगरेटों के दुप छिचके, सूटी तश्तरिया माना सब विदप से मुह बिचकाकर मु य— 'कहिए महात्मा महाकवि बनने में अब कितनी देर है ?

शायर की साधना



नजीर मिया का चेहरा देख कर ही हम यह भाप चुके थे कि हम ग़ज़ल में गायरी की बहुत सी अलामतें मौजूद हैं। और जब उन्होंने अपना नाम क आग़ लतयानवी तख़्तनुस (उपनाम) जोड़ लेने की बात हम बतायी तो हम पूरी तरह विस्वास हो गया कि ये शायर हो पा गये।

अब रही साधना की बात तो यह कोई आवश्यक नहीं कि ग़ज़ल गायरी करने से पहले ही साधना शुरू करें और गायरी बाद में करें। शायरी से प्रथम साधना करने की तो पद्धति प्राचीन थी। वर्तमान युग प्रगतिशील है। इस युग में साधना पीछे होनी है। साहित्य सज्जन पहले शुरू होता है। जिस पर भी यदि इस जीवन में अवसर नहीं मिला तो इस इतलत को दूसरे जीवन के लिए छोड़ दिया जाता है।

नजीर नयानवी के बारे में भी यही विचार था कि यह महोदय भी पहले गायर बनेगे उसके बाद भी यदि जिदगी बाकी रही तो साधक बन जायेंगे। हमारा यह विचार इसलिए था कि कई समझदार सम्पादकों ने तो उन्हें पर्याप्त प्रोत्साहन दिया ही था, ग़ज़ल के कई क़व्ज़िस्ताना के भी अनेक मुर्दे इनकी गायरी का स्वाद जी भर कर ले चुके

हमारे जवाब पर नजीर मिया पतली सात लेकर फीकी सी हसी हस तो अवश्य किंतु वह बिल्कुल बजान हसी थी जिसका पहल ही कचूमर निकल चुका था।

कुछ देर बाद दोनों का समझा उभा कर हम चल भाय। समझ लिया भगडा समाप्त हुआ। और मिया बीबी का भगडा ही क्या?

यहां भी हमारा साचा धा गलत निकला। हमारे जात ही भगडा घटने के बजाय घोर बढ़ गया। नजीर मिया ने बसम ग्रावर कहा हम रोज इसी तरह बठा करेंगे घोर तुम्हारे सामने तो ग्रास तीर से इस बात का ध्यान रखेंगे कि यदि हम घोर डग से भी बड़े हो तो तुम्हें डेरा कर फिर एम ही ऊटामन से बठ जाए।

नजीर के बसम ग्रास ही नगीना ने भी बसम खार्द— खटा जान में अपनी मन धाता से तुम्हें जानबरा की तरह बठा नहीं देत मरती।

वस भगड का नताजा यह निकला कि घर में शाम तक पाकिस्तान बन गया। तत्त्वों के पार्टीगन से कमरे का बटवारा हो गया। अपने धाये हिस्से के साथ नगीना ने बावर्चीमाने पर भी बजा किया। दूसरी ओर नजीर मिया ने अपनी सरह पर बीबी की जासूसी के भय से तन्नों की दरारों की भी बजा कर दिया।

यह सब हा गया। अब यदि नगीना बाहर धानी तो नजीर मिया की घोर से मुह पर कर या घटने पर नकाज डान कर निरन्तरी। उधर नजीर भी बिना नगीना की ओर मन ही निकल जात।

बुद्धि नि बिना भभट के पार्टीगन के दोनों धार सब बुद्धि गानि में चलता रहा। नजीर मिया के सामने यह निश्चय अवबता था रही था कि गायरी के नियम पढ़ना था वह नगीना की हा दूर या सावा मान लिया करत था अब उसका बगल निश्चय पड़ी। यह निश्चय हमनिध और बढ़ा कि हम उम्र में उठें बाहर राकी मयमगर हान भी मुनिबल था। कि तु

फिर भी उनकी शायरी का गीक बदस्तूर जारी रहा ।

अन्त में हर श में जलवा तेरा देखना हूँ की मुक्ति को नज़ीर
मिया ने मायक किया और बाज़ार से एक काली सा मुर्गी खरीद लाए ।

नगीना ने मिया की मुर्गी खान देखा तो मुँह का जायका बदला ।
तोचा 'गोरब के लिए मुझसे अब कहने ही वाले हैं ।' पर तु गायर साहब तो
उमे लाय ही और मक़मद के लिए थे ।

रान हुई गायर साहब ने मुर्गी का टक पर बिठाया । अपना
ऊँटासन लगाया । आखें मीचकर मुर्गी में 'हूँ की कल्पना की । उँह लगा
मानो का' हूँ उनका दिल नकर चली जा रही है । तत्काल उँह गैर
मूफ़ा । उँहाने ऊँचा आवाज़ में कहा—

आ दुस्न तुम पर कहुर हो सारी खुदाई का ।

अल्लाह कर मिट जाय निशा हूर जुगार्द का ।

नगीना ने अपन दान काट लिए—तोबा ! तोबा ! इस जहालत
की भी हज़ है । मरे बहान दुनिया भर की औरतों को कोसा जा रहा है
और मिया खुद अपनी बग़लत दखने नहीं ।

नगीना बड़बड़ानी रही । शेर बट्कर शायर साहब ने आखें
माली । मुर्गी तन में उचक कर छत पर पहुँच चुकी थी । शायर साहब ने
पुन उसे पकड़ा । चाहा उससे नज़र मिना कर देखें । बाज़ में अपन दिल की
धड़कनों को गिनें लेकिन मुर्गी हूँ बनने के लिये तयार नहीं हुई । नज़ीर
मिया नाराज़ होकर नीट आय ।

दुमरे दिन दिन निक्कलते ही वह मुर्गी को एक पट्टीसी का ताहफ़
के नीर पर दे आय । एक बार नगीना के मन में आया भी कि चल कर
मिया से पूछूँ एक डढ़ रुपय की मुर्गी को क्यों ख़राब कर आय । परन्तु
बालने की बमम सा चुका थी अन्त खामोश रहों ।

दो-तीन दिन गायर साहब ने आराम से गुज़ारे । लिफ़ाफ़ में लगे

अब उसने सामने मढ़ल यह गवान था कि इस वक़्त ११ या १२ या १३
 पकड़ कर घर में बाहर कम करे। उधर गायन साहब ने सामने निरुद्ध
 अपने पूरे हृत्न की जमान व साथ सही उा पर बार पर बार निय जा
 रही थी और नज़र मिया न छोटा पर खुद व खुद पर मढ़रा २० थ। पर
 तब आवाज स फ़मा रह थ —

अन्नाया का २२० उनकाव धाज
 जनवा २१ ज़िगम गेनन तरी गुनाई का।
 मर नि बरगा का पहलू म पानना
 मारा फिरे नज़ीर न नरी जुनाई का।

गायन साहब का यह १२ मन्त ही नगीना व गगीर म साग नग
 गयी। सारा गगीर काग गया। खली हाज़र वाली— बड़ गायर बन फिरत
 हैं वन ही सारे मुह न व सामने इस गगीरजानी और इन गायन साहब
 को अगर बनकाव न किया ता मरा नाम भी नगीना नहीं।

अभी नगीना बुझुदा ही रही थी कि गायर साहब की ओर स
 आवाज आयी— आह! ज़िगर जरमी किया नि धीन दिया।

गायर साहब ने इन ११ न पगेल पर चिनगारी का काम
 लिया। उसने मन् स आवाज निकली— सुबह कभी आज हा फमना होगा।
 अभी ही फमला हागा। मैं देखता हूँ ज़िगर को जरमी करन वालो ओर
 दिल का टानने वाली यह छिनात कती हूर है।

नगीना चली धीरे स पार्टीशन का तख़्ता हटाया और दूने पर
 गायर साहब व कमरे में दाखिल हो गयी। कमरे में धुम कर जस ही
 नगीना ने कान भरती नज़र नज़ीर पर उठायी तस ही ठगी की ठगी रह
 गयी। नज़ीर मिया एक बोरी विद्याय ऊटासन लगाय आख बन् निय बैठ
 ५। उनक सामने खड़ी हुई कुतिया इतमिनान ने जलेबिया खा रही थी।

नगीना के पैर गायर माह्न की इस विकट साधना का दल कर
 काप गया । चहरे पर पसीना आ गया । दिन में आया आग बत्कर नजीर
 मिया के पैर पकड़ कर माफी माग ल । तभी नजीर मिया के ओठ पकड़े—

कहना हू आज साकी तरे बमर नही है

काया जुडो है तरो फूँवो की बल स ।

अभा नजीर मिया पूरा नेर कह भी न पाय थ कि नगाना कट
 पेठ की तरह नजार मिया को गाल में जा गिरी ।

नजीर मिया चीक गया । नगाना आखें बन्द कर पड़ा थी । नजीर
 मिया के ओठ फिर हिल—

आया भरा महनूब गुरु परवरनिगार का ।

तुरत नगीना बोल उठी—

हो जाय सत्यानाश लगी हम दीवार का ।

सुनत हैं नजीर मिया की साधना अब भी बदस्तूर जारी है और
 बाधर्चीबाने का दरवाजा उनक लिय फिर खुल गया है ।

○

पति-शाला

○

“क्यों जी क्या सोचें ?

×

×

×

कुछ सुना कि सचमुच सोचें ?

‘हैं ? क्या कहा ?

‘तुम्हारा मित्र ।

तबना बट्ट बं बहू बेर पटक कर पावब स जोराम भवानी हुई खली गई । अब नींद क्या आव आय ? कहा तबनी मुस्किरो से जरा सी भपका घाई थी कि आकाज जगा लिया । अब कुछ कहना ही नहीं था तो मरी नाज हराम करमे की क्या जहरत थी ? मगर उसकी कौन समभाव ? लाजिय वह फिर आ पड़ी ।

‘क्या इसीलिये तुम्हें जगा गई थी कि तुम पड़े-पड़े खरों में भरों ?

“कौन खरों में भरता है ? जागता तो हूँ ।

“जागत हो ? झूठ और मुँह पर ?

अच्छा मरी बात का एतबार नहा तो सुम्हीं बायें खोलकर रख ला कि मैं जागता हूँ था सो रहा हूँ ।’

‘बस बस रहने दो। अब लगे मुभक्ती अघी भी बनाने ? यह देखो।’

‘राम ! राम ! तुम्ह बना कौन अघी कह सकना है जिसे तीनों निरलाक हरदम सुभाद न्ते है ?’

तब तुमने मुझे आखें खोन्नकर दखने का ताना क्यों मारा ?’

बबकूफी हुई। गलना हुई। कसूर हुआ। अच्छा बात क्या है ? क्या कहना चाहती हा ? कुछ कहो तो मही।’

‘अन्ने क भाग राय मुपन म अपना दीदा खोय।’

‘बहकी-बहकी बातें क्यों करनी हो ? असली बान तो बताओ।’

‘तुम्ह अपने सोने में फुगसन मिल तब तो काई कुछ कहे। यहा ता जब न्खो तब आखो म मलिछ घेरे रहना है। चारपाई पर पड़े नहीं कि लग भसे की तरह सा मा करन।’

अरे भाई रात के वक्त जरा कमर सीधी न करू तो क्या अपना मर पीछे ? हरवाह भी तो नम वक्त आराम करत हैं।

‘तो जी मर क कमर सीधी करत क्यों नहीं ? तुम्ह मना कौन करता है ? चाह काई मरे या जिये तुम्ह तो बस अपने सोने से मतलब है। आग लग निगोड़ी ऐसी नीद पर।’

फिर तिनकती हुई खनी गई। और गुस्से में दरवाजा दस्तने जोर म भेड़ गई कि मर बान के पन्ने बेचारे आहि आहि पुकारने लगे। एक तो चुपचाप की गीद कमबल या ही बड़े नखरो स आती है उसपर ऐसी आफन म अब बना किस मरदूद की आखें लग सकती थी ? छुपचाप छत की कड़िया गिनन लगा।

दग सुधारकों को विवाहाच्छेद बिल पास कराना तो सूमा मगर किसी हत्यारे न हम ऐसे बूढ़े पनियो की खबर न ली। सरकार भी बुढ़ापे में

लोगों को पेशान देकर उन्हें काम काज में छुट्टी दे जाती है। मगर हाथ रे
 पतिगारी। इसमें पेशान भी नहीं। दाढ़ाई है जोरुगण की दयालु ललनाभा
 की। आप लोगों की जाति का प्रकृति बड़ी कोमल कहो जाती है। उसका
 हृदय बहुत ही नम बताया जाता है। फिर यह इतना अचर क्यों है? हम
 पतियों पर इतनी कठोरता क्या करती हैं? जरा इन लोगों पर तरम
 लायें। और सरकार की तरह आप भी इन लोगों को इस उम्र में पंगन दे
 दिया करें तो क्या कहना है। पंगन न दे सकें तो पचपन साल का बानून
 लगाकर इन्हें आप यो ही छूटकारा दे सकती हैं। आप इनकी मायिका हैं
 हाकिम हैं अपसर हैं। आप चाहें तो इनके रिय सब कुछ कर सकती हैं।
 य बचारे आप ही धधमरे हो गई हैं। इन्हें अपनी लाय मुँह ही भारी हो
 रही है। उस पर आपका गर्मागम नखरा का बाध भला यह मुँह किस तरह
 उठा सकते हैं? जरा सान्निध ता। जिस तरह बूढ़ा पायी के लिये सज्जना
 न गऊशानामें बनवा रली हैं उसी तरह आप लोग भी अगर चढ़ा करके
 हम बड़े पतिया के लिये एक पतिगारा बनवा दें तो हम लोगों के रोयें
 रायें आप लोगों की असीसतें।

दरवाजा मंड से खुला। और बच्चा प सरा पड़ा। हम देखा
 थीमती जी अपनी नहीं आई। बल्कि मुमुषा को भी जगाकर उठा लाई।
 यह दुहरा जुलूम सहन के लिये इस मुमुषे में कहाँ से बलजा पाऊँ? तब बल
 में मुमुषा को देखते ही मैं बाप उठा। समझ गया कि हमारी रात अब
 जहनुम की रात हो गई। क्योंकि यह पात्रा हा नहीं, पूरा गाना भी है।
 सच तो यह है कि वह पचपन बाप का नहीं बल्कि अपनी सगी माँ का बेटा है।
 तभी तो वह जब तक अपनी माँ के पास रहता है तब तक जरा कुनमुनाना
 तक नहीं। मगर जहाँ बाप की गार में आया तहाँ कमबख्त चिल्ला चिल्ला
 कर वह हाम-ताका मचा देता है कि कुछ न पूछिय। उस वक्त मही जो चाहता
 है कि इसको लिये लिये एकदम कुछ में बूढ़ पड़ूँ। इसी आपन के परवाल
 को थीमती जी मरे ऊपर डकेत कर यह कहती हुई चला यह कि— 'जब

मुझे कुछ मतलब ही नहीं तो अपना रहवा भी ले जाओ ।

गजब हो गया । मर पर गन्नाह फट पड़ा । जान सामत म पट गई । डेढ़ बालिश्त का मनुष्या और पूर साढ़ पाच फिट का मैं । मगर उसकी बनावजिया व भाग मेरा लाव पच एक न चला । गल्लि तो उगने चिल्ला चिल्ला कर मुझे एकदम बहारा बना लिया । उगक बाद मिनट म छिन्नतर दफ के हिमाब स मरी तोर पर सन मन्न करने लगा । उस पर भी उस पाजी का पट न भरा तो मारे गुम्भ व मेरा बिछावन ही लगाव कर दिया । बलिय लेटने का झटका भी बिगड़ गया । यह सब भिगाई पढाई बात थी, वना जरा म जीव म इतना पाजीपन भरा कहा मुमकिन हो सकता है ?

क्या करता ? भव मारका चारपाई छोडनी पडी । और सुराही व पानी म कुछ पोना घाना भी पडा । पानी लगत ही वह और भी मचल उठा । यहा दम घुटन लगा गो म लेकर बराम म दो घण तक टहला । घुस बिल्ली घाडा गदहा सज की बोलिया बाली । लू लू लू लू भी किया । तरह-तरह म मुह बनाया । आन्ने मटकाइ । मव कुछ करव हार गया । मगर उस गतान मे अपना मुर न बना ।

हाथ रे घुलपे की रात । न जान समुरी बितनी लम्बी हा जाती कि काट नहीं कटती । जवानी मे पलक मारन ही सुबह हो जाती थी मगर अब प्राभी रात ही स सुबह का तारा दखना शुरू करता । किन्तु मारी रात दखन पर भी प्राभी रक्त ज्यों की त्या बनी रहती है । रती मर भी कम नहीं होती । तब भला हम प्राधन के परवासे व साथ सुबह देखने को कभी उम्मीद हो सकते है ? इसलिय आजिज आकर मैं श्रीमतीजी को बूढ़न लगा ।

पर भर बूढ़ डाला । कोटा भी छाना घाया । मगर उमका कंगे पता न पाया । तब तो मुझे बडी फिर हुई । उगने सापता होन की नहीं बल्कि डम मुसीबत से उद्धार पान के लिय । क्याकि उसने बिना मनुष्या

को फरिस्ते भी नहीं गान्त कर सकते । अगर वह मुझे त्याग ही गई थी तो इसको भी अपने साथ ले जानी तो उसका बड़ा गुण मानता । भोज म घर का दरवाजा बंद करके टांगें पसार कर बखटक साता, अगर अब ता मोना गया भाइ मे । इस चित्तलपों के आगे जान सक्क म पड गर । धड़ी दन्वी, अगर हाय । उसम अभी सिफ ताढे बारह ही बजे थे । मैंने भन्नाकर पडा पटक दी । बसे ही चौके मे से गहना की कुछ भनकार सुनाई पडी ।

चौके म गया तो देखा, कि श्रीमती जा एक दरी बिछाये मज म जमीन ही पर भीठी नींद का मजा ले रही हैं । बाह । बाह । घर भर म आपकी सोने की जगह यही मिली । अगर उनके गहनो की भनकार न सुन पाता तो मुझे उम्र भर भी क्याल नही हा सकता था कि श्रीमती जी ऐसी जगह आराम कर रही हैं, वह भी गहरी नींद म । ईश्वर जाने नींद म तराफ भर रडा की या गुस्से मे फुफकार रही थी । मर किसी हासत म थी मिन तो गइ यही बड़ी बात हुई । भरी जान मे जान आई । मैंने कट मुनुमा को उनकी बगल म लिटा लिया । वह उठ पात ही ऐसा चप हुमा माना वह रोना जानता ही न था । हुनने मे उन्गेन करकट ली और मैं हुम भाडकर वहा से कमर पकड गिरता-गडता कागता-बूखता भागा और मवान का मदर दरवाजा खोलकर एकम सडक पर हा आरर दम लिया ।

हुनिया वाले तो नहीं मार ईश्वर उचारे मेरी इस मुदगा पर पमीज उठ । और इतन कि लग आसू बहान । सारे कपडे भीग गये । उनकी इस हमदर्दी मे श्रीमती जी की यर्मागम फटकार लास दर्जे अच्छी थी । मैं फिर घर की तरफ दोडा ।

मगर घर का द्वार भीतर से बन्द । अब कहा जाता ? हय मम पनिपों व लिए कही काजी हाम भी नहीं ।

इसालिय तो कहता हूँ माई । कोई पनिमाना बनवा गो । बडा ही पुष्प होगा ।

○

इन मू छन के बारन ऊपर



मुद्दन हुई जब मैं भी बलीन गेड रहना था। चहरे पर वह सफाई और चिकनाई थी कि बैठत समय मक्खी का भी फिमलन का डर बना रहता था। पर एक दिन दिल की गहराइयों से मंदा आई इलहाम हुआ कि मूछों के बिना तुम्हारी परमोनानिटी अपूर्ण है। मा बिना आगा पीछा सोच मैंने मूछ उगानी आरम्भ कर दी। शेव करने बठना ता ग्राडी माफ करत करते रेजर पुरानी आदत के मुताबिक मूछा में भी प्रेम करने नपक जाना। यही नहीं मूछ के नीचे की चमड़ी भी ब्लन्ड में रगड़ खान का उनावली हो जाती। पर भगवान को यही मञ्जूर था कि भर मूछ उगें।

मूछ उगी तो शुरू शुरू में बहुत अटपटा लगा। मुँह पर हाथ फरन का ता मजा ही किरकिरा हो गया। दूध या दस्मी में कभी साबका पड़ जाता ता मलाई तो सागी मूछा में ही अटक कर रह जाती जस गटर की जाली में कचरा अटक कर रह जाना है। मनाइ न मिलन का ज्जना दुम नहीं था जितना मूछा को फिर से साफ करने में दिक्कत थी। जस नबला दातो को लाग भोजन के तुरन्त ही बाद माफ करते हैं मुझे भी मूछों को तुरन्त ही साफ करना पड़ता था। दो चार मिनट भी मनाइ का मूछा पर आराम करने देता तो टाकन वालों की कमी न थी।

भूत म कभी धाँसक-धाँसक नामों गड़ जाता ना मोचना
 कि मैं ना हूँ या कोई धीर है। नामने विपदा धाग है मर जाओ क
 निम लकाय बाग ना रोड घूम कर भी जेना पडा। कभी विचार धाग
 कि या ना नामन बने भाई गांव है धीर या मरी धागु लकाय नाच कर
 बर गई है।

धार धार म ली म मरा परिचय बदन मगा धीर मैं धरगा
 पाया मुछर बन बटा। मिन मभ बिदान कि मरा मर धीर मादर
 म धरिअ अ कर रही है। मगर मैं जानता था कि लगा क कवन स्थापन
 कहत हैं। वगैरे म पानी पागो जनन म मवारी य म छे सब ना मरी प्राणा
 धार है। मैं ना बिना लेग रगमान की प्रता म हूँ ना धावर क कि
 इन मूछन क धागन उपर गज ।

अब तो मूछ रखन का मरा अनुभव कई वगैरे का है धीर स्थानाय
 मुद्रारो म मिनिस्त्रिटी की मरि स मरा स्थान काही ऊचा है। जो
 मुभम जूनिअर हैं व मरा रीज मानते हैं धीर जिहान कभी मूछ बकाई ही
 नहीं उन विचारों की तो मुभम धाम मित्रान की भी ताब नहीं। पर स
 दपनर जान धीर दपनर स पर धात हुए मरी धागों कवन उही बहरा पर
 टिरती हैं जिन पर मूछ हो। सकिन साहब जमाना लमा जनाना धा गया
 है कि मूछ के दगन भाग्य म ही कभी कभी हात हैं। सच मानिय मूछा
 की तताग म छट्टी क दिन जब लोग क्रिकेट की कप्तानी सुनने म व्यस्त
 रत हैं मैं घटो रेलवे स्तफाम पर या तिनेमा क बुकिंग हाउस पर लडा
 मूछ का काई मुद्र सा जोडा मोजता हूँ।

अफसोस है मुझे ता कवल इतना ही कि मेरी मूछ ठकदार न
 हुई। मूछ की किस्म ता अनेक देखने म आई मसलन मच्छर छाग मक्खी
 छाग गरई तुगी तनवा खतरवसी धीर भज्जेदार मगर ठकदार मूछ
 की तो गान ही निरानी है। कहते हैं कि डाकू मानसिह की मूछ कागजी

नाबू रख दन पर भी मुक्ती नहीं थी पर जनाब हमारी मूछ क लिए ना सरमो का दाना भा भारी पड गया । पडता भी कस नहीं कहा डाकू और कहा कलक । दफनर जायें तो बड बाबू की लताड और घर आयें तो श्रीमता जी की फटकार । भना बताइय मूछ पनपें कसे ? चेप्टा बहुत की मैं कि मरी मूछ कुत्ता की पूछ की तरह बन पर जनाब किस्मस क भाग किमकी खला है । कुत्ते की पूछ को छह महीन बाद नली स निकाला तो तुरन्त हा धूम कर डकदार हो गई और हमारी मूछ छह महीन तक पट्टी बांधे रहन के बाद जब वाली गद् ता धोडे की पूछ का भाति फिर लटक आई । कई प्रकार की कलफ का इस्तेमाल किया पर आखिर बही भाडू की भाडू ।

जब चीन स लड़ाई गरू हुई तो यह सोच कर चिन्त बडा प्रसन्न हुआ कि अब मूछा का राष्ट्रीय महत्त्व बडेगा । दंग की सुरक्षा क लिय एन बी एफ होम गाड स सिविक डिफन्स आदि अनक याजनाए सामने आई के द्वीय सन्तो म अनेक बिल और सन्तोषन प्रस्तुत हुए पर अनिवाय सनिक शिक्षा की भाति अनिवाय मुच्छारोपण पर किसी का ध्यान न गया । तब मैं अपना एक निबन्ध 'आपातकालीन स्थिति म मूछ का महत्त्व' शीर्षक से दिल्ली क एक दैनिक-पत्र म बडा मिन्नता क बाद प्रकाशित करवाया ।

अगल दिन जब सोकर उठा तो देख कर हैरान रह गया कि अनक पत्र प्रतिनिधि सवाददाता और फोटोग्राफर मेरे इन्टरव्यू क लिय बाहर खडे हैं । मुझे समझते दर न लगी कि मेरे निबन्ध ने पत्र-मन्सार म धूम मचा दी है । मैं मुस्कुराता हुआ उनक बीच आ खडा हुआ । सामने बायें बायें बहुत से नेमरे क्लिक हो उठ । हैड शेक क बाद प्रश्न पूछे जान लग ।

यदि सरकार प्रतिरक्षा विभाग के अन्तर्गत एक मूछ विभाग खोलना चाहे तो क्या आप उस विभाग के डायरेक्टर बनना पसन्द करेंगे ?
शौक मे ।

फिर तो गायद मूछ रखना समस्त दंगवासियो के लिय अनिवाय

कर दोगे ?

जी हाँ।

‘स्त्रियो व लिय भी ?’

जी हाँ। जी ? जी नहीं। क्या बात करते हैं आप ?

‘जब स आप मूर्ख रहने लग हैं तब से आपको अपने दिमाग का बही पर कुछ खाता भी गड़बड़ भालूम हुई ?’

‘टाव म म — मैं स्त्रोथ म भर कर रहा।’

‘आपने अपनी मूर्खता का बीज कहा स इम्पेट किया ?’

ना-स-स नो कम ट।

‘वर छाड़िय अगर बात काफिरांगित म हा तो बताने की कृपा कीजिय कि जब आप मुस्तुरात हैं ता मुँह स क्या लगत है ?’

सच मानिय मेरा खेतरा क्रोध से सप्ततमा आया। प्रश्नकर्ता को उसकी बेहदगी के लिये डाटू उसके पहल ही ठहाक व बीच भड़भड़ाना हुआ एक और प्रश्न आया—

‘क्या आप निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि आपके पूवजा म डॉन शिवराट नाम का कोई आदमा नहीं था ?’

ना कमेट। — क्रोध म उबल कर मैं बोला।

जान दीजिय। लेकिन इतना ता आपको बताना ही पड़ेगा कि क्या मूर्ख रहन बात के लिये पूछ रहना अनिवाय नहीं है ?’

मैं तिलमिला गया। प्रश्नकर्ता की ओर उन्मुख होकर सोच ही रहा था कि क्या उत्तर दू कि पीठ पीछे सड़े कि-ही महागय ने धीरे से कहा — नो कमेट। वह जोर का ठहाका लगा कि मैं सीधा अपने कमरे म घुस गया और भड़ाम में किवाड़ बंद कर लिये।

बाहर फिर कहकहे लगे। कुछ पिकरे भी गुनाई पड़े—

या, मजा आ गया ।”

पूरा ‘बो’ है ।

दुनिया म कभी नहीं है गानिव, एक ठू लो ’

हजार मिलते हैं ।

फिर बहबह । जब कुछ देर बाद पूरा गानि हो गई तो मैं सीधा
आर्दन के सामने जा खड़ा हुआ । देखा मूँ छेँ और भी सटक आई है । बन्ना
बन्ना देर लड़े रहन क बाद भी समझ म नहीं आया कि आज जा मट्टी
पनीन हुई है वह मूँ छेँ नी निबन्ना के कारण हुई है या मस्तिष्क की
निबन्ना के कारण ? अगर मस्तिष्क तो मेरा इतना बादा कभी नहीं था ।
कही एमा ता नहीं है कि मस्तिष्क की बाद ये मूँ छेँ सीध लती हो ?

उसी क्षण मैं एक कमिस्ट की दूकान पर जा खड़ा हुआ । काउं
टर पर एक सुंदर-सी युवती थी ।

‘क्या जी यहा खा मिनती है ?’

बाद ? कभी खा ? महिना चकराई और उमने मझे या घूरा
जम म जिमी पागलवाने म भाग आया होऊ ।

‘चौकिय नहीं मैं पूरे होण म हू ।’ मैंने कहा, मेरा मनलब बाद
म ही है । मूँछा की खा ।

महिना और भी चकराई । फिर तुरंत ही सभल गई और अपनी
स्निग्ध स्मिट मेरी मूँछों पर बखेरती हुई बोली—

आप किमी कपटीगन में भाग ले रहे हैं ?

रस बार मेरे चकरान की वारी थी । मैं अचक्काया कपटीशन ?
कसा कपटीशन ?

वह मुस्कराई । बोली— ‘यही मूँछा वा ।’

‘ओड़ में समझा

यह लीजिए इस पते पर मिल जायगी वृहते हुए उमन एक चिट लिख कर मेरे आग कर दी। यक्यू कटकर मैं उस जब क हवान किया। घर जा कर देखा उस पर अग्रजी म लिखा था—सिन्नी फन्निवा यजस सिन्नी।

दिल्ली भी क्या बाहियात सन्तर है कि घर एक बिनारे पर है तो दफ्तर बीस मील दूर दूरे किनारे पर। बिना बस म बठ गुजर नहीं। एक दिन जो बस म घुसा तो बठने का स्थान न था। घुपचाप पीछ की ओर खड़ा हो गया और सपोटिंग राड को धाम हिचकोन खाता रहा। अगले ही स्टॉप पर एक सज्जन भीतर घुसे। बस म चारा धार नजर घुमाई और मुझसे बोले—‘देखिये बठने को जगह तक नहीं है।

जी हा बिल्कुल नहीं है मैंने उनकी बात का समर्थन करते हुए कहा।

‘बिल्कुल नहीं है उन्होंने मुह बिचकाया मगर आपकी तो यह ड्यूटी है कि जो आपको टिकट दिखावे आप उस सीट लिखावें।

यो कहते कहते उन्होंने अपना टिकट निकाल कर मेरे सामने कर दिया। उत्तर म मैंने भी अपना टिकट उनक आगे कर दिया। मेरे टिकट को उन्होंने यो देखा जैसे वह टिकट न हो साप का बच्चा हो। सकपकाने हुए बोल—

ओह सारी। मैं समझा था कि आप

बस के कंडक्टर हैं।

ही ही ,

मगर मैं भी आप को कंडक्टर समझू तो ?

‘ही ही

ही ही क्या ?'

नकिन मेरे मूछ कहा हैं ?"

तो क्या मूछ मान कडकटर ?"

जी नती मूछ माने मूछ मस्तेच ।"

फिर ?

' फिर क्या ?'

' मैं पूछता हूँ कि क्या मूछ रखने वाले कडकटर ही होते हैं ?'

जी नहीं । मूछ क अनग अनग जगह अलग अलग माने होते हैं । रेबयु म मूछ मान पटवागी पुलिम म मूछ मान धानगर, आर्मी म मूछ मान मेजर और थम म मूछ माने

सग अप्पर पहुँचे । भीनी बया हो रही थी । दोपहर के तीन बजते बजते मौसम रगीन हो गया । बावू लाग काम पर से उखड़ गये और चार चार पाच पाच की मण्डलिया में एकत्र हो चाय चुसकने लगे । मेरी टबल पर भी यन्गी दृश्य था । जगन ने प्याला चुमियाते हुए कहा — डिबर, तुरा न माना तो एक मान कहू ।

' जरूर पड़ो, मैंन मौज मे आ कर कहा ।

' यार चीन से लड़ाई चल रही है । इमरजेसी का जमाना है । नताभा के जाशील भापग हो रह हैं सो कभी कभी मुझे भी जोश आ जाता है । नकिन, तुम तब रहे हा मरे तो मूछ है नहीं । ऐसी स्थिति मे अगर तुम्हारी मूछ पर हाथ फेर लिया कह तो कोई आपत्ति तो नहीं ?'

मैं जल भुन कर रह गया । फिर भी चहरे पर कृत्रिम मुस्कान धारण कर ली । कुछ कहू इसक पहले ही जगन फिर बोल पड़ा —

तुरा मानने की जरूरत नहीं । हा इन मूछा की मे टन-स पर जो खच जाना हो उसका आधा मुझमे ले लिया करो ।

तो तुम समझत हो मैंने य किराय पर क्या रगो ?

‘किराय पर न सहो ‘सन्निधिस सही ज्ञीज ।

मैंने अपने घोष पर गिमिमाना हया का पर्दा डालन हुए क्या प्रस्ताव मुझे मजूर है । बस इनका गारंटो कर दा नि तुम्हारा जान दस ध्यक्त दस कर आया करगा वहीं कमबलत घोषी रान का ही था जाय घोष तुम आ कर सया मेरा डार राटनदान । मैं उठार लवाजा गातू भी तुम कह दो कि बस पर लिया हाथ घापस बल कर लो ।’

बात किसी से कहने की नहीं । मैं स्वयं अब अपनी मूछा ग प्राजिज आ गया था । बन काम दफनर से छूटकर साधा एक हेमर तुम क सलून म घुम गया । हाफना हुया बोला इह जल्दी से माफ कर ना ।

माई निभका, बोला— सरियत ता है बाबू ?’

‘जल्दी । मुझे बकन नहीं है ।’

माई की छत्तीसवी बुद्धि न समझ लिया कि मैं सी० घाय० डी० पुनिस का कोई अफसर हू और कि वेग बल कर जालसाजो क विसा गिरोह का पीछा करने को उठावाला हू । सभी शायद उस्तरा फरन क बाग उमके पैसे तक न मागे । मुझे यही सन्तोष था कि चला फिर स इ सान बाने के लिए कुछ खच न करना पडा ।

○

दाढ़ी की वकालत

○

जब भी दाढ़ी वाले बाबा जी का दखता हूँ तभी यन् मानने का तयार हो जाता हूँ कि, एक दाढ़ी हजार नियामत । दाढ़ी वाल बाबा बिना बजह हर जगह समापति बना लिए जाते हैं और दाढ़ी वाल बाबा का करीब करीब बिना भागे ही भिना भिन जाती है । दाढ़ी वाल व्यक्ति क प्रति हमारे मन में अत्यन्त आदर का भाव स्वत ही उत्पन्न हो जाता है । हम हम पुगनी चाल के आदमी पुगना मस्कार बहस गार न किस्म क पन् लिन लोग विलायन में चलन जाने नए पगन का प्रमग कन्ग । परन्तु इतना अवश्य है कि दाढ़ी अगर प्रसनी हो तो श्रमान का उत्तनी उन्न क मामले में घावे की गुजाश्व उत्तनी हो रहती है जितना ईमानदारी एक प्रसनी नेता में पाई जाती है ।

दुनिया क घम घक् स्वात हुए जब हमारे जन्मजात नाबालिग डिप्टी साहब को दुनिया की खबर हान मगी तब उतान दाढ़ी बढ़ान का अनुष्ठान माधन आरम्भ कर लिया । वह दवा करत थ कि नम्बी दाढ़ी वाला ठाठ से दाढ़ी पन् हाथ फंगता है उगती हुई दाढ़ी वाला उम पर रीव स रज्ज चलाता है और बिना दाढ़ी वाला बालक अपन पिता जी का गतिग द्रुग अपन गालो पर फरकर दाढ़ी वाला बन जाने की मधुर कल्पना करना है । डिप्टी साहब न जब से सदन पर चप्पल चटवाने वाल हूँगिया का दाढ़ा

बड़ाकर स्वामी हरिहरानंद की पदवी पर प्रतिष्ठित हात देता, तब से तो वह ढाढ़ी के पीछे एकदम दीवाने ही बन गए। उनकी यह सुनिश्चित मायना बन गई कि पाठ्य पुस्तक लम्बे कूचों मूख जैसे पाठ बालकों को पढ़ाकर दाढ़ी व विरह भने ही अनधिकृत प्रच्छन्न आंदोलन करती रह परन्तु मसार की कोई भी गति दाढ़ों का उगना और बचना और इज्जत पाना नहीं रोष सकता है।

डिप्टी साहब ने ढाढ़ा बड़ाई और बस काशवधि में उन्हें जगिया गत अनात बास करला पहा। दाढ़ी तो बढ गई परन्तु उनका इज्जत म इनाफा नहीं हुआ। वह डिप्टी साहब की जगह न तो डिप्टियानंद बन सक और न किसी न उनको नाम बत्सने का सुभाव ही दिया। बतना ही नहीं इच्छा और सम्भावना व विरह उनके मायी उनका मजाक बनाने लगे तथा मान्य व छात्र बावक 'हीवा' कह कर उनसे चरन लगे। श्रुति कि तक पढी मियो न उनकी ढाढ़ी में भिद्योगति का भावी देखा और पत्नी ने उमम म मास अ भ्रम व दग्ध किए। कबल माता न उनका दाढ़ी में उनक उज्ज्वल भविष्य की आशा किम्व दायी बयाकि उसकी राय में डिप्टिया का भुजाव सब पुगानी बातों की आर हान लगा था।

दाढ़ी व प्रति उचित आदर का अभाव डिप्टी साहब को कुछ अस्वग गया। उन्होंने मोचा घर का जागी जोगना धान पास का मिठ। क्या न घर व बाहर निवस कर देवा जाय। बस अगल तिन ही प्रात बाल व स्वगाहार व पन्थात खाना हा गए। रल म बना ही भीड़ थी। किमा भी डिप्ट म धुमना पटवागीमिरी पान व समान मुश्किल था। घर मौ-मौ घर वान के बाह व एक डिप्ट व अन्तर दानिन हो गए। अन्तर म्दिति मट थी कि पाव की तो बाल ही क्या है—तिन रमन को भी जगह नग था। उनका दग्ध हो एक यात्री न दान्त हुए कहा। तब बढ मिया महा बर्ग आगण ? बना पहा म। डिप्टी साहब का वाचानन हवा हो

गया और उनके मुँह पर हवाइया उड़ने लगीं । वह कुछ कहना ही चाहत था, तब तक एक अर्थ यात्री न सहानुभूतिपूर्ण स्वर में बोला—बुजुग आमी है, कही न कही टिक ही जाएया । डिंटी साहब को अपन लिए बड़े मिया और बुजुग गंगा का प्रयाग बहुत ही अनुचित लगा परंतु वह चुप ही रहे ।

सुदगर्जी ने जुबान पर वह नाता लगाया कि अभी तक सुनन में नहीं आ रहा है । उनका समझ में अब यह बात भी आन लगा है कि काका कालेलकर ने वाल्मीकि जी का ऋषि न लिखकर मौलवी वाल्मीकि क्या लिखा था ।

एक बार डिंटी साहब मुगायरे में पहुँच गए । डिंटी साहब ने भी बच्चा नाम भज की, चीखें लिखस्प थी । सुनन वालों ने दिल खोल कर दाद दी । डिंटी साहब ने ज्यादा ही आदाब भज किया कि पीछे में जाऊँ की आवाज आई—'बलाह क्या बात है । यह सफेद दाढ़ी और यह नजरें ख्याली ।

घर आएर डिंटी साहब ने सोचा कि क्या न दाढ़ी का काता रंग लिया जाय । ख्याल आना था कि निमाग में गायर के नेर न भटका दिया—

मुँह भी करेंगे काला जो दाढ़ी है स्याह की । बस, अब क्या था । डिंटी साहब को अपनी दाढ़ी से बहते नफरत हान लगी । वह उन्हें काटन की दौड़न लगी । उमकी बजह में उनके मुँह की रीतन लुगा हटती गिवाई पड़ने लगी । वह साचन लग कि दाढ़ी चाह स्याह हा, चाह सफेद हा हातन में धुरी है । इसी सिलसिले में मिश्रों की दाढ़ी और बारह आने के टिकन पर अमतसर के स्वयं मंदिर की तस्वीर आदि न मालूम कितनी बाने उनके दिमाग में घूम गई । वह सोचने लग कि दाढ़ी तो हमारे ऋषि भूति भी रखा करते थे तब फिर उनके साथ बारह बज वाली समीपत क्या नती थी ? माय ही ख्याल आया कि वे अपने बालों को खुला हुआ रख कर उममें

हमेशा खुनी हवा दते रहते थे । इसी कारण गायन उनके गारत नहीं बजते होते ?

दिल्ली माहव अभी उबेड बुन में थे कि उनक एक पुराने दोस्त कुवर माहव आ गए । दुषा-मलाम के बाद मिजाज के बारे में पूछताछ हुई । कुवर साहब ने पूछा क्यों भाई डिप्टी ? क्या मामला ? दुश्मनों की तबियत बरा कुछ नाज है ? कुवर साहब का सवाल अभी सचड़ी तरह ठण्डा भी नहीं होने पाया था कि दिल्ली माहव उनल पडे और उछल कर अपनी दाढ़ी का कामत सभ । उनरी दाढ़ी के सिरे उनक परा क साथ कम्म मिला कर कबायद करत हुए जात पडने थे । उनका कन्ना था कि वह अपनी दाढ़ी का माफ कर डालना चाहते हैं । पर तु बलन दितो क साथ न उनके दिन में उमक लिए उमियत पना कर दी है । इसी कारण उनकी माफ छूट कर धानी जानत हो रनी है । बाटा सचमुच मुड भरा हसिया हो गई है । न निगलत बनती ? न धूतन बननी है । जन आप ही बताए क्या बिमा जाय ?

दिल्ली माहव की बात सुन कर कुवर माहव पहल तो मुस्कराए श्री- फिर तू न ही गम्भीर हाकर कहते लग, ' दला भाई ' दाढ़ी मूछ भगवान की बहुत उछी दन है यह मर्जीगी और तजुबेकारी की निगानी है । अविवाहित पुरुष की भाति दाढ़ी मूछ रहित आदमी को सदब नाबानिग ही समझा जाता है । वह होटल के बाम या छाकरा की भाति दुनिया वाला के निय हमारा लडका हा बना रन्ना है । न तो किसी मामले में उसकी राय पूछी जाना है और न किसी सभा में उम सभापति ही बताया जाता है । पुराने पान की मानाए अपना बालकों को दाढ़ी बाल मूछ मुछारे के रूप में हा बडा लगना चाहती हैं और उन्हें पानन में मुचाने समय इसी तरह की लागिया गाना = । अनएव जिनक दाढ़ा नहीं हैं भयका जि होने अभी तक दाढ़ी न । बडाई है उनकी बात तो छाटिए, बग दाढ़ी बाल किसी गरीफ आदमी का भी माफ करन का बात निमाय में जाना तक नहीं चाहिए ।

राज नो मुडवा" दा और ऊपर से साव हसाई हा—यह कौनमी और कहा की अक्लमदी है ? डिप्टी साहब न बात वाटत हुए कहा कि कुवर साहब म तो अपन हाथ स हा अपनी हजामत बना दगा मुडवाई टेन का मवाल ही कहा पदा होता है ? डिप्टी साहब को बान मुनकर कुवर साहब क ओठा पर एक हन्की मी मुसकुराहट आ गई मानो वह उनकी नागानी पर भेदभरी हमा हमा रह हा । वह कहने लग—देखिय डिप्टी साहब ! हजामत तो हमगा हमरे की बनाई जानी है । खर छाड़िए इन बातों का । दाजी ता सगार क प्रत्यक्ष देग म रखा जानी है । हर मजहब म उम इज्जन की नजर म दखा जाना है ।

इस प्रकार वह विश्व वधुत्व परित्र जीवन अनर्गलीय दृष्टि कोण आति का प्रतीक है । अगर दुनिया के सब नाग दाढी रखने लगे तो विद्व-मुद्ध निरासनीकरण विश्व प्रेम अनराप्नीयता आति की समम्याए स्वन हन हा जायें । भगडे ता बता हाते हैं जहा दाढी मूछ की उज्जन नहीं गनी । भगन करने वाला क अगर आकडे एकत्र किए जाए ना आप दयेंगे कि भगडा भगन वाल २६ प्रतिशत क भाग होंगे जिनक दाढी मूछ नहीं हैं । आप ही बताए—क्या आपन कभी किसी मूछ वाल का अपनी बात स हटने जाए तथा किसी दाढी वाल को गनी का दिहाज न करते हुए दखा है ? आप यह मी फी सदी सच मान सकते हैं कि आदमी न जिम नित मधम पत्र अपनी दाढी मूछ माफ की थी उसी दिन उसके भीतर बँठा दुआ म बाहर चला गया था । साफ वह अभी तक दाढी मूछ के भीतर निगी हुई ममानगी और दमानियन की खोज म इधर उधर भटकता फिर रहा है ।

कुवर साहब की बातों के झूने म डिप्टी साहब नींद की ओर पग मार्ग नग । वह मन ही मन गुनगुना रहे थ —

मरे जीने क लिए मरने का सामा चाहिए ।

नाद आ ही जाणगा गहवारे जुम्मा चाहिए ॥

वह बराबर मोच रहे थे कि प्रथम पति म किसी तरह यह भाव आ जाय कि मेरी इज्जत के लिए दाढ़ी सफावट चाहिए । कुबर साहब न उनके मन का बात पट ली । तुरन्त बोले — भाई दाढ़ी को छाटा उड़ा मन हूँ कर लो । इसकी तो कई विस्म होती है —

एक दाढ़ी मान मन-वर एक दाढ़ी तुम्हारा ।

एक दाढ़ी फाय फकीले एक दाढ़ी भब्यो ॥

आप इन म किसी का भी चुन लें परन्तु दाढ़ी को सफावट करने का बात को निमाग म भी न मान दें । पर जताब डिप्टी साहब भी कोई या ही डिप्टी साहब नहीं बन गए थे । कुबर साहब न यदि तीन बच्चों के पिता उनके के बाद रोजी-रोजगार की फिक्र शुरू की थी तो डिप्टी साहब न उस ओर अभी तब तक उज्रह ही नहीं दी है । तुरन्त ही मत्न पर देखा लगाने हुए उन्होंने बीरबा का बह विस्सा सुना डाना जिसमे मिथा जा का दाढ़ी के बालों का भास समझ कर भूले छोड़े ने उने नाच डाना था ।

कुबर साहब चुप हो गए थे परन्तु उनके दिमाग म यह बात बराबर धर उधर घबकर लगा रही थी कि उस तरह की गर जिम्मदारी की बाने करत समय डिप्टी साहब की कम म कम अपनी दाढ़ी का ध्यान तो करना ही था । और कुछ नहीं कम से कम उनकी दाढ़ी के बाने बच्चों का डर दूर करने का ताबीजों में भरने के काम ला आ नी गवन है ।

बाप्पन की भी हट होती है । कुबर साहब त न रहा गया । उन्होंने दाढ़ी की धूमिया बताते हुए पारस के बाप्पाह की रत बहानी सुना ही डाली जिसम बाप्पाह के बनीर न हिंदुस्तान के मंगूर के घाम की तारीफ का फिजूल बताते हुए बाप्पाह सनामन म अत्र रिया था कि बाप्पाहो म ठका हुई पनी-मम्बी दाढ़ी को चुम कर देंगे उनका घाम का मसा आ जाएगा ।

कुबर साहब का तीर निधान पर लगा उनका तबरीर लाजवाब

सावित हृद् ।

जटोजहद स बचने के लिए घोर अपने दिलोदिमाग को राहत
वह्मान के ख्याल से डिप्पी साहब न यही ज्यादा मुनासिब समझा कि यह
सामाना एक इन्वायरोर कमटी के मुपुद कर लिया जाय ।

उद्घाटन की रम्म अनायगी न हो सकने के कारण वह कमेटी
अमी तब अपना काम शुरू नहीं कर सकी है । परन्तु खुदाई फौजदारी को
चन कहा मिलता है । व खुद खुद गवाही दन पहुच गए हैं । उनके जितने
मुह हैं, उनसे दफोडी बातें हैं । उनका कहना है कि अगर दाढ़ी
का लोप हा गया तो खरी कदन जाने दाढ़ी भाड अपनी उदान की
खुजली मिगन के लिए कहा जाया करेंगे ? और फिर दाढ़ी साफ कर
न स दाढ़ी स पदा होने वाली बुराईया ता दूर हो न जाएगी । आप मुह
पर उगन वाली दाढ़ी का उदा भी दे तो इससे हाता क्या है ? आप पट
क भीतर उगन वाली दाढ़ी का क्या करेंगे । दुनिया के सजुबे और जीवन के
धम धक्के आपको बताएंग कि जीवन म के ही व्यक्ति सफल होते हैं जिनके पट
म लम्बी दाढ़ी होती है । आत्म निरीक्षण द्वारा आप अपन पट म उगने
वाली दाढ़ी का परीक्षण कीजिए और बताइए कि हम पहल कौनसी दाढ़ी
की आग ध्यान देना चाहिए—मुह की अथवा पट की, क्योंकि सब तो औरतें
भी इस लिंगा म पुरुषा की बग़ायरी करने के लिए निकल पड़ी हैं । ○

मेरा गान्धीवाद

○

जैसे गीत ने श्लोकों का अर्थ कुछ विद्वान निम्न निम्न प्रकार से खींच तानकर अर्थने अनुकूल लगा लेते हैं उसी प्रकार मैंने गांधीवाद को अर्थन लिए फिट कर लिया है। मैंने इसका अध्ययन वास्तव काल से ही आरम्भ कर लिया था और उमा का यह परिणाम है कि मेरी भाषा गली बोलचाल और मुलाक़ाति से गांधीवाद ऐसे स्पष्टता है, जैसे बर्ग म डूबी छत ।

सून बातना मैंने बचपन से ही आरम्भ कर लिया था । पहन ना मैं मोटा बालता था किन्तु अच्युत करते करते २० नवंबर तक पहुँच गया और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ता आगे विवाह करें या न करें १९० नवंबर तक बातन की योग्यता मैंने प्रश्न कर ली है ।

मैं प्रायः शादी पहनता हूँ । प्रायः गाँव का अर्थ आगे और कुछ न समझें मैंने हर का सप्टीकरण भी किया होता हूँ । काप्रस के प्रतिपादन में आत्मन साधन पहनता हूँ के स्थान पर मैंने प्रायः तन माया पानता हूँ कर लिया था । इस तर्जिब में संगोषन पर किया न ध्यान भी नहीं लिया और मैं सन्तुष्ट बना लिया गया । इन दो अंगों के परिवर्तन में लाभ उठा कर गांधीवाद के मुक्त गगन में एक स्तुतिव की भाँति उड़ान भरता रहता हूँ ।

हे डूँम मेरी उसी प्रकार सहायता करता है, जम पत्र निम्न ॥
 पन घोर मनरिया म पुनन । मेरे यत्नित्व और परिधान की घरी को
 दगकर किसी का साहम नही होना कि मेरे कोट का हट्टूँम और धाना
 का मित्रमद मिद्ध कर सब ।

अहिमा पालन म भी मैं मन्ना अग्रगण्य रहा हूँ । डी० डी० डी० का
 प्रयाग कभी नहीं करता । चूह छटमल मक्खी और मच्छर मेरे घर म उतनी
 ही स्वतंत्रता स बिचरत हैं जस मध्यप्रदेश म डाकू । परोपकाी जीवन
 बिताता हूँ निन रात म कवन छत्र बार खाता हूँ मत्नीन म एक दिन नहाना
 हूँ स्नानोपरांत छह मागे चीनी और एक तोला घाटा मिनाकर चीनिया
 को चटाता हूँ । यद्यपि इस सदावन म मेरे दो पस व्द्य म जात है तथापि
 इसकी मुझ तक भी चिन्ता नहीं क्योंकि यह धन-नीचन है ही क्या
 मायापाग । धन की नीन ही गति हैं गन भाग और नाश ।

सत्य 'क' सदम म भरा विनम्र निवेदन है कि मैं मृत्यु का प्रयाग
 घन प्रतिगान करता हूँ । यद्यपि इनकम टकम सत्सम्पत्तम दुकान क ग्राहक
 तथा अपनी पत्नी के मामन कभी-कभी मीठी बानें बनानी पडती हैं जिनक
 द्वारा मेरे घन और तन की रक्षा हान में सहायता मिलती है क्योंकि नस
 पाय स मेरी अहिंसा को बल मिलता है अतः उसे मैं असत्य की श्रेणी में नहीं
 मानता ।

मेरे मित्र मुझे त्याग की साभाहू प्रतिमा बताया करत है । अमनी
 धी मैंने त्याग दिया है वनस्पति खाता हूँ और त्याग क तरान गाता हूँ ।

अब रह गई सहनशीलता या अक्रोध, जो गांधीबाबू का एक मुख्य
 अंग है । क्रोध का मैं जीत लिया है । तकाजे वाल प्राय मेरा अपमान कर
 जात है और मैं शान्तिपूर्वक नेत्र बंद करके उस अपमान का उमी प्रकार
 पो जाता हूँ जस मोरा ने विष का प्याला पो लिया था । यह दूसरी बात है
 कि अपने हृत्प की धुजली मिटाने के लिए मन ही मन उह कुछ गालिया
 लता हूँ इसम उह कुछ कष्ट नहीं होता और अपना हृत्प पवित्र रा
 जाना है ।

भावी कहानीकार

०

क़ी० १० पास करने के बाद सानभर नौकरी की खोज में कुछ पमा रेनव को कुछ डाक विभाग को मैने पुरस्कार में दिये । तप से परमात्मा जप में देवता और तप से आनन्द मिल जाने की सम्भावना है परंतु नौकरी तप तप घण्टा गप में भी नहीं मिलती मजदूर को सलाह नही मिलती परन्तु का गीरी से मिलाप न हुआ । उन्ही का शाप यह पडा कि कामही सही म युवका का नौकरा स भेंट नही । मगर करना तो कुछ आनन्द है । मकानों का एकमात्र सहारा बिना पूजी का ध्वजसाय नाम बमान का मकम मग्न उपाय अगन बरिमों का गाली दन का आसान तरीका माहिरय सेवा है । इमके लिए कुछ पढ़ने की भी आवश्यकता नहीं है । तुनमा और मूर निमवि विद्यालय के सज्जुण थे । बिहारी और केगव के नाम कौन भी डिमा था । एकम पावर किस गुरुकुल के विद्यालकार थे । उमर मयाम कौन काणी के मान्त्यावाय थे । एनन वड रड साहित्य कार ममार में मैना हुए और अमर साहित्य छोडकर मग गय तद कि मारहित्यकारों में पठन पाठन की अस्वाभाविक क्रिया की क्या आवश्यकता । मैं तब इस बात पर पूणत विचार किया तब सोचा कि अभी तक की व्यवस्था मैं मूमता के मागर में हुआ था । इनन म्निों जीवन व्यय नष्ट किया और प्रायः तत स्वरूप हिन्दी का उषक बन गया ।

मैंन दसवें दर्जे तक हिंदी पढ़ी थी। मेरा ऐसा विचार है और बहुत ऊँचा विचार है कि हिंदी लेखक होने के लिए इतनी हिन्दी पढ़ लेना पर्याप्त है। और हिन्दी में पढ़ना ही क्या है? फिर जा कुछ भी, उस मौलिक लेखक क्या पढ़ और मैं मौलिक साहित्यकार बनना चाहता था। एक जिस्ता कागज और बारह आने की एक जापानी फाउंटन पेन लेकर एक खोखो पर बैठ गया और लेखक बन गया। आध घंटे फिर पर हाथ और हाथ में कलम रखकर सोचता रहा कि क्या लिखू। हिन्दी साहित्य दो वस्तुओं के लिए विख्यात है कविता और कहानी। लिखना तो दोनों का ही सरल है परंतु यह मुन रखा था कि कहानी लिखने में पस मिलते हैं। या तो कवि-सम्मेलन होने पर मांग ध्यय में उस कविता को भी कुछ बच ही रहता है दूसरे भाड़ा मित्रों पर तीसरे दर्जे में महात्मा गांधी की दुहाई लेकर चलने से आधे घण्टे की बचत तो हो जाती है परंतु कवि सम्मेलन तो साल में पांच ही छ बार होते हैं और कहानी की मांग वियोगी के घासू के समान निरंतर जारी रहती है। मैं भी कहानी ही लिखने की ठानी। बैठे-बैठे बहुत साचा, परंतु कोई प्लॉट ध्यान में नहीं आया। मेरे नगर में एक विख्यात लेखक थे। मैं उनसे मना-पना उचित समझा। उन्होंने कहा — 'सबसे सुंदर कहानी वह होता है जो स्वाभाविक होती है। लोगो को देखिये भालिय उनके जीवन चरित का जानिय उसी पर कहानी लिख डालिये।'

मुझे क्या पता था कि कहानी लिखना इतना सरल है। नाहक उनका एहसान लिया। सध्या समय लोगो के जीवन निरीक्षण का विचार किया और यह भी निश्चय किया कि लोगो से उनकी जीवन-मर्मन्त्री घटनाओं का पूछूंगा। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में रामास और प्रेमालाप एवं वियोग तथा मित्रन सभी होते हैं। बनारस के ऐसा और नगर कहा मित्रगा ऐसी बातों के लिए।

जाड़े की सध्या थी। नौ बजे के समय बागा के चौक में कुछ

[illegible]

निजना भा अभिनाया साहित्यकार बनन की ह। मगर भार ग्राहक कहानी तयार बनना मुझे अभीष्ट न था। पारस लिखन गया जसे मुझि भाग पुतिम का स्टेकुन अगडे लगाई के समय रिया करत है यस्तु कहानी निजना था अरुध्य और जिवन नी घटनाया क आधार पर। मैं हिम्मत हासल वाना था नही आगे बढ़ा। धीरे धीरे साचा कि साक्ष्य से काम लना चाहिये। मरान का तिलाजलि देवर ही योग बड़ आत्मी बनत हैं।

धूमने धूमन मैं आग एक चौमुहाड़ी पर गहूँच गया । वहाँ ऐसा कि एक सज्जन तब म उनरे । उनकी अवस्था जानीम बप की रही होगी । उनक गाय एक बीम माल की युवनी भी था बड़ी हसमुख । मन माका इम मित्रता चाहिये । बतमान सभार क साहसी पुरुष का नाम मन म लिपा । हिनतर का नाम आते आते माग सकाच जापानी सट की महक क समान गायब हो गया । मैं उनक मामन जाकर मडा हो गया । उ न मेरी

घोर तबा, मैंने उनको प्रणाम किया। उहाने भी जमान दिया। मगर बड़े
 मन्त्रण। मैं कहा—कहिये? मेरे हृदय में तो एक मन्त्र सचानन गति ने
 बायबाट कर लिया। फिर भी हसी को किसी प्रकार मुख पर लाकर बोला—

ह ह ह आप कहा जायेंगे?" इस बार उक्त महागय का स्वर घोर भी
 बड़बा हा गया। पहले यन्त्र लाहा था तो मन्त्र बार बज्ज। बाले—कयो?
 कयो का ता मेरे पर मन्त्रा प्रभाव पन्ना जमे सेगन जज ने कामी की मजा
 सुनाइ हा। मेरे मस्तिष्क की गति भारतीय एकना की तरह गायत्र होन
 लगी। मुझे क्या पता था कि ससार में लोग उजड़ड भा होते हैं। मगर
 बनन जा रहा था साहित्यकार। फिर साहित्यकार और अपमान तो काप
 में पर्यायवाची गद हैं। मैंने बड़ ताव के साथ कहा—मैं साहित्यकार हू।
 इस बात पर डाकी आवाज और सज हो गई। यन्त्र सगीत की भाति क्राध
 में भी स्वरो का आराट अवरोड होना है तो वह क्रोध का निपाद था।
 उ होन अवरोड में कहा ह्लाट। मन्त्र तो क्राध दूमरे अवरोड में। जम
 तिरछी आवा में बरनी का सुरमा। सारी धक्क अतधान हा गयी। बुद्धि
 व वियोग में मंगी जा अवस्था हुई। उमका कम यह हुआ कि ह्लाट का उत्तर
 दन व स्थान पर अनायास बिना प्रयास बिना सोचे जा महिना इनके साथ
 थी उसका आर हाथ करक मेरे मुख से निकल पडा—यह कौन है?

महिला, महाब्राह्मण और मक्खन की महत्ता मैं समझना हू और पाठकों
 का विश्वास दिलाता हू कि मेरा अभिप्राय किसी प्रकार का अनावर का भाव
 प्रदर्शित करने का नहीं था। बिगड़ना चाहिय था मुझ को मगर उपयुक्त
 सज्जन ने मेरे छोटे स प्रश्न सूचक वाक्य का सुनकर ऐसी मुद्रा बनाई मानो
 उनका भिरगी रोग स धनिष्ठ सम्बन्ध हो। मुह बनाने के साथ ही उ अन
 पुकारा—वास्टवन्। जस लखलखा सुधाने से चन्द्रकाता के एयार होन में
 आ जाते थे उसी प्रकार वास्टवन् गच्छ न मेरी चतुर्थ गति जाग्रत कर दी।
 इसके पहले कि मैं कुछ और कहू चौमुहानी का वास्टवन् मेरे पास आ गया
 और उस यन्त्र ने क्या कहा यह तो मैं सुन न सका, बवल पागल गच्छ मेरे

बाना म प्रवेश कर गया और मेर पैर रेंग करने लगे । काँटबन व पाँव के
 सान मरे पीछे पट पट बोलीं ये और उगी व साथ मग। हृदय भी पट पट
 तात् द रहा था । मैं सच कहता ॥ कि यदि मुझे लोग डरती की छुड़ गेड
 म ले गये होते तो घागा सा व छोडे से मैं घाग निबन गया होता । मैं तब
 अचिरी गली में भागा और इस डर ने कि वगी वह इधर भी न घारा हो
 जो पत्ता मवान लिखाई पडा उगा में घुस गया ।

किस अनुभ घडी में मैं घर स निबना था वह नहीं सकता ।
 उगी ही घर के भीतर पर रगा कि किवाड बंद करने व लिए कोई ऊपर स
 उतरा । मुझे देखा हो वह चिल्लाया — चार ! चार ॥ बाहर जाता ॥ तो
 पागल भीतर घोर पर तु घर व भीतर चार बन कर मार लाने की अपेक्षा
 अपने पाव की तेजी की परीक्षा को मैंने अधिक साभग्यक समझा ।

‘चार घोर ! की आवाज न लोया वी चीरघा कर दिया । व
 मरे पीछे दीड मैं भागता जाता था और घाना छति भर चिल्लाता जाता
 था कि मैं घोर नहीं कहानी लखक बनने वाला हू । गायन उन रोगा न
 सुन लिया । पाच मिनट के बाद अचिरे में ही दीडता गया । उस दिन पना
 चला कि कहानी-लखक व लिए दीड का सम्मान भी आवस्यक है । ○

शिकार की तलाश



सुरेग भाई नाट हैं पर इनन नहीं कि सेना म भरती न हो सकें । रभान उनका भूटाप की आर है पर बटूक का प्रयोग करने म उन्हें कोई कठिनाई नहीं होती । उमर अभी बीस के इस ओर ही है इसलिए उनकी मुसकान में बचपन है और घाप जानत हैं, बचपन बुद्धि के मामन म भन ही अविकसित हो पर प्यार के मामले म बडा विकसित हाता है । म) मत्र मिल कर यन् बड प्यारे लगते हैं ।

लकिन प्यार का एकमात्र कारण उनका यह रूप ही हो, सो बात नहीं । और भी बहुत सी बातें थीं—मसलन उनकी मेरी रिश्तेदारी । मेरे समुर के साले की समुराल स वह आय थे और उह शिकार की तलाश थी । मेरे साल साहब इंजीनियर थे और एसी जगह काम करते थे जहा जंगल और दरिया दोनों थे । इस दोहरे आकर्षण के कारण सुरेग भाई के मह म जो पानी आया यदि आप शिकारी हैं तो उसकी कल्पना करके अपन मह में भी पानी आ सकता है । जंगल म साभर आति तो थे ही उन त्तिनों वनराज गैर ब आने की सूचना भी मिली थी और नगी म मगर इनन थे कि उनकी साला स तम्बू तयार कर लो ।

मेरे साने साहब के स्वभाव म एक खास बात है कि जो नाते

रि तेवाने या दोस्त लोग उनसे मित्रा प्राप्त है उन्हें वह मृत्यु मर जाना है। इस पर सुरेण भाई तो गिहारी थ और सान सागर व गिहारी प्रेम की कहानी तो दूर दूर तक मगहूर है। जमान पर स दार व। माग्न व। बात छोड़ भी दें तो भी उ ने अपना अपमरा का गोहम व लिए कई बार मगर मार मारकर लिए हैं।

तो साहब तब हुआ कि सुरेण भाई व ममान म गिहारी यात्रा की जाय। बिगपकर इसलिए भी कि सुरेण भाई गीहारी सता म भर ॥ होकर दूर जान वान थे। मौसम बड़ा प्यारा था। तिमरन की मर्मी म यमान तो कम होनी ही है उलट सगीर म यर्धी भी घाती है। लगा सुंदर अवसर दल वर मेरे यह म भी पानी भर थाया और यात्री दन न दगक के तौर पर मन सहृदयारी सहिमक को भा साथ ल जाना स्वीकार कर लिया। कम बहुत म लोग गाधी टोपी को ३०३ (एक प्रसिद्ध राइफ़ल) तो कहते हैं पर यकीन मानिए मैं जीव हस्या व मामल म बुद्ध महावीर और गाधी का सिप्य हैं। मैं तो लखक के नात ही उस मल म शामिल हुआ।

बहरहाल हम यात्रा पर निकल और अंतिम समय पर मेरे साल के साल साहब भी एकस्टा के रूप म उम दल म शामिल हो गय। वस उ हे रमी (ताग का एक सल) खेनने का बड़ा शौक है और उस यात्रा में वही भी—जगल म मोटर म सान की मेज पर साने व समय नदी के किनारे—जहा भी मौना बिना हो व मेरे साले के माले मेरे ससुर व साल के साथ रमी चलते रहे। इस प्रकार मुझे दो दो लाभ हुए—गिहारी व साथ रमी भी देखी और ऊपर से मुपन मे रसगुल्ले खाए वे अलग क्योकि गत यह थी उस यात्रा ॥ जो भी जितने रपए जीतेगा उनक रसगुल्ले खाए जाएंगे।

लीजिए गिहारी की बात बरने चले थ जा पहुँचे रसगुल्लो

पर । टहलाने न सह्य की टोपी पहननेवाला अहिमक । माफ कीजिए अब गलती न हागी । सबसे पहन टोम का बगन कर । मेरे अतिथिजन उसम मेर साल माहव थे और मेरे समुग क भाल क मनीज सुरस भाई थ । इस टोम क मनजर कहिए या मजबान कहिए मेरे सान माहव थ । गिफारिया म प्रमुख थे मुरेग भाई और उनक महायक थे मेरे समुग क साले । मेरे सान क मान रिजव म थ और मैं दगक था हा ।

बहुन भी बच्चा पक्की सड़की की धून फाकन हुए नदी-नाल पीछे छाडत हुए जब घन जगन के बीच मे हाकर हम नदी के किनारे पड इजीनियर साहब क बगन की ओर बग रहे थे तब रात भी चुपक चुपके हमारा पीठा कर रही थी । मेरे समुग क ओर सान क साल साहब रमी म यस्त थ लेकिन साबाग सुरग भाई । बट व दूक मन्हाले जगल की ओर टरटकी लगाए देख रहे थ ।

एकाएक बग चितना उठ— भाई माहव ! उतर दविए ।

सबकी दृष्टि भी उसी दिगा म उठी और घन जगल के पड लना गुलमा म उतभव रह गई ।

सुरग भाई न कहा— साभर है । '

'कहा ?'

बग दसा बट सडा पड के पास ।

स्टसन बगन तब तब धामा पड चुकी थी और सुरेग भाई बगूक का गिगाना साध ही रह थ कि इजीनियर साहब ने बगन आगे बग दी और कहा— धनकी देर साभर आपकी मोली का इततार नही कर सकना जनाव । आपने पड क दूक तने को दस दिया है ।'

सुरेग भाई न बहूनरा विरोध किया लेकिन साहब काई माने तय न । बचारो का गगुन खराब हो गया । इसलिए अगली बार जब

सांभर जंगल में गायब होने में पहले काफी दूर तक दौड़ना हुआ दिखा दिया तब उन्होंने बं दूक नहीं चलाई । हा सकता है कोई भूत सांभर का वेप बनकर आ गया हो ।

बहरहाल कैम्प में पहुँचने पर हमने वहाँ रात नम्बुओ में गुजारी । सबेरे जल्दी से जल्दी उठकर मगरदात्र का मगर का निवार कराने की बात थी । लेकिन रात का तेर तक बंदूकों की जाँच करने और जंगल का ठिठुरती सर्पों के कारण निवार पार्सी के तक मोती रही । मरेग भाई जब हठबद्धावर उठे नव चारों ओर गोर मच रहा था । एक बार तो वह समझे कि कहीं हाका पड़ रहा है पर सीध ही पता लगा कि भाभीजी चाम का प्रकाश कर रही हैं नीकर नती किनारे भोजन बनाने का सामान बांध रहे हैं मानव दो आदमियों को मगरा का पता लगाने के लिए नीचे की ओर जाने को कह रहे हैं । हमें उठा देवकर वह बाव—'जनाय ! क्या किया जाय देर हो गई । क्या क्या अच्छा सोचा था । मगर इस समय घुप में रन किनारे पर लेटने के लिए चल पड़ हागे, लेकिन जब तक हम व । पहुँचेंगे व लोटेन की सपाही में हाग ।

जंगल के उम उबड़ सावड़ रास्ते को कुछ बार से कुछ पदल पार कर नती पर पतखते गहूवते सचमुच ग्यारह बज गए और जो दो छात्मी मगरा का पता लगाने आग थे उनमें से एक ने आवर रिपा दी— साहब मगर तो कहीं नहीं है ।

साहब ने परगात गोर कहा — क्या करने हो ? कहा गए ?

जो जान पड़ता है व और भी नीचे चल गए । उम डाटकर साहब ने कहा— तो जरा गए हैं क्या उह सांझा । यहा हमने कितने ही मगरा का मारा है । महमान क्या कहेंगे ?

व छात्मी जाता गया और हम लोग पाटिया में बटकर नदी के कुछ पथे पथरात किनारा के साथ इधर-उधर चल गए । भाभीजी

नौकरो को लेकर खान का प्रबंध कर रही थी और बच्चे मुक्त दशक व साथ डगर उतर फुट रहे थे। मगर कही दिखाई नहीं लिए। इंजीनियर साहब व बच्चे जो अक्सर मगर के गिबार के सानी रहे हैं मुझे अपनी अटपटी भाषा में अपनी कहानी सुनाने लग। काफी देर पथरो पर दौड़-दौड़ कर मैं थकावट महसूस कर रहा था इसलिए वे कहानियां मरे लिए काफी स्वास्थ्यवर्धक साबित हुई। मगर मगर को मरते दमन की चान मुझे फिर भी एक स्थान पर नहीं बटने दिया। कभी मैं सुरेश भाई व पीछे भागता कभी इंजीनियर साहब की पार्की की जोर। तभी साहब मैं बटूक छूटने की आवाज सुनी। सारा बन प्रान्त एक बारगी उस ठहाक से गूज उठा और तभी स इंजीनियर साहब की ओर भागा। बच्चे भी दौड़। वे चिल्ला रहे थे—'अहा मगर मर गया। मैंने दवा—दूर ऊपर की आर के लोग जार-जार स बावकर कुछ रह रहे थ। मैं बिल्हाकर कहा— क्या मगर मर गया ?

गान्धी मामाजी ने चलाई थी धान— गाली तो लगी है।'

'क्या मतलब ?

मगर कहा उस छोटे स टापू पर पड़ा था गाली खाकर यह उदना और दह म घुस गया।

तो ?'

'तो क्या अब वह जीत जी अपन आप ऊपर नहीं आएगा। उम बुलाना पड़ेगा।

लेकिन उसे बुलाने के लिए सारे प्रयत्न विफल गए। पानी व नीचे अपनी दह व किसी अस्पताल म वह सुरक्षित था। हमारा आक्रमण उम किले को न तोड़ सका और इंजीनियर साहब को विश्वास हो गया कि अब तो मगर मरने के बाद ही ऊपर आएगा। उसमे कई

थे । उनके पास बाँझों की ओर व बार-बार रोशनी फल रहे थे । बीच की साँट पर मम्बल आँक में गान से राजा बना बठा था और नीचे की तरफ बैठे थे इजीनियर साहब जो दोर और माँबर के स्थान पर नीचे के शिकार में अधिक दिलचस्पी दिखा रहे थे । डाइवर का बगल में एक भाई माग नेशन के लिए भी बठे ।

रात घबेरी थी । चारों ओर सन्नाटा था । रास्ता बुरा नहीं था । सन्नाटे और अचकार पर प्रहार करती हुई जीप इस तरह मधर गति से भाग बढ रही थी जिस प्रकार कोई जहाज समुद्र में से गुजर जाए । पेड़-पौधे एक बार चमकते और फिर आंधकार में लो जाते । दूर दूर तक कुत्तों व भूकन तक की आवाज न सुनाई जाती । बस अपनी ही जीप का गोर बानो का धका रहा था । बीच में सुरश भाइ बाल उठत थे— 'वह बन् देखो ।'

सचलाए इधर उधर घूमती पर जगमग म वही बार्ड जुम्बिश नहीं हानी ।

सुना आज तो गेर आया हुआ है ।

मुना तो है ।'

गिनाई नहीं दता ।

गेर ता क्या बहा तो गीन्द भी नहीं है ।

व ता गर व हर स दिया गए है ।

और गेर आपका हर स ।

मद लोग हम पडे । बाप र गर रहने लगा सन्नाटा । जगल में बाहराम भव जाना चाहिए लेकिन यना तो गहरे अचकार में निपट पढ पोषा व मुन् मिट्टा व टाना और पत्थरा व अनिश्चित और कुछ न गिनाई दता था । किसी माँबर और हिरण का गकन ता क्या आवाज तक नहीं

मुनाई देती थी। हा जीप की रोशनी में नाचनेवाला परिदा बार-बार हवा में तैरता हुआ सामन आ जाता।

सुरेण भाई ने उनावले बनकर पूछा— आखिर भाज ये कहा गए ? कोई भी दिव्वाई नहीं देता ।”

मामाजी बाल — दे कम ? तुमने पहले तो सूचना दी नहीं।

इजीनियर साहब जैसे नींद के भोके स जाग हा— ठहू मामाजी के घर के छंदर सो रहे हैं, सर्दी है न ? क्या बच्चा को जगाते हो ?

हसने के बाद फिर एक गहरा मौन व्याप्त हो गया। एक बार फिर हमने उस घने जंगल का चक्कर काटा। नदी के किनारे आ निषने। मामाते कुछ भोपडिया दिवाई दी जमे काई बड़ा जानवर बैठा हो। सुरेण भाई ने जस्त ली पर गीघ्र ही मायूसी से हाथ पीछे हट गया। मुह से निकला— घत् तरे की।’

मैंने कहा — ‘सुरेण भाई दुनाली को भुकाओ मत। रोगनी में नाचने वाली इस चिड़िया को ही मार डाला।

बाले— ‘जी म आता है इसे ही चबा जाऊ। बम्बलूत खगगां तक नहीं खिलाई दिया।

सुरेण भाई बहद निराश हुए उन्हें काई गिकार नहीं मिला। जग क्राधी स्वभाव के होते तो निश्चय ही तब वह पटो को भून देत। निराग मैं भी था मेरी कहानी रह गई लेकिन सबसे अधिक निरागा तो डेरे पर पहुंचकर हुई। मामी जी ने सब क्या सुनकर कहा— ‘आप लोग फिडल उधर हैरान हुए सागर तो यद्वा माया था।

सच ! —हम लोग अचरज स चित्ला उठे।

मामाजी न कहा — सुरेण भाई को पूछता होगा।

भाभाजी बोनी—'हो पूरा रहा था और यद भी बहता था रि
भाज तो हय उनके सामने आ हा नहीं सक्त थ ।

कयो ?

बपोनि बार्टी थ एन भाई अहिमा क उगासक हैं । उनके रहने
हिता कस हो सक्ती है ।

अब क्या था एक साथ सब की नटि मक पर पडी । "जीनियर
साहब बोन— छोहो तो यन बाल थो । मैं भी कहू नगी क सार क सार
मगर, जगन क सारे जानवर और वह नया धार—य मय कहा बन
गए ?"

'भाई बडे समझदार हो गए हैं जानवर । अपन राजा का
कितना ख्याल करत हैं ।

बमे मगर भाज सामातवाद का युग होना तो हममें कोन शक
नही सुरेग भाई मुझे हा गाली का निगाना बनाते, लेकिन तब तो यही
हुमा कि बह हसकर रह गए ।

चलते समय इंजीनियर साहब ने सुरेग भाई को फिर घाने का
निमक्ण किया और मुझे साभर की छाल का एक जोड़ी कूता
बनवा कर भेंट किया ।

पाठक स प्राथना है कि वे इस मट का कोई विनेप अथ न
नगाए और लोकर सन का अथ बुढ़ने में भा सिर न सपाए ।

×

×

×

पुनरक्त

बरानी लिमकर चुका ही था कि सामन एक खुदिया दिखाई दी ।

कद तिन में उमने परमान था । बस हैडबग उठाकर मार ही ता दिया ।
 निगाना ऐसा जचक बठा कि चुहिया बड़ी ढर हो गई । फिर तो बच्चो न
 घर मिर पर उटा लिया—“अन्ता पिताजी न चुहिया का गिकार किया ।
 अहा ताऊजी न चुहिया मार डाला ।

मैंने गव से भरकर एक् बार अपने अहिंसक (?) गिकार को
 गवा धीर सावन लगा—क्या न इस चुहिया की खाल का कृद बनवाकर
 अपने साले साहव को भेंट किया जाय ?

क्या ? यह यदि आप मुझे सुझा सकें ता बड़ी कृपा हो । ○

जीवन का जुलूस



मथुरा का छोटा सा रेल्वे स्टेशन, साफ की सतह पर चले जाने पत्थर वाले स्टेशन पर छाये योगनखलिया में भर रही थी।

एकदम आज सुनसान था। मैं और मौसी ही अकेले यानी हम स्थान से चलने वाले थे। हाँ तो नया आरम्भियाए पहुँचाने आये थे। मौसी और मैं अपने हाथ में यहाँ ननिहाल में किसी मृत्यु गोक में अवसर पर आये थे। कल का दीपक बुझ गया था—एक सईस वर्ष के जीवन सड़क की मौत हो गई थी। सादा के नीचे ही महीने एक पन्नाह वर्ष की सुहागिनी बाला का अस्तिमान उतर गया था। सो बिदा देना में उसी का कहना उपसहार चल रहा था। ममत्व भाषा, बिछोड़, देना काल की दरिया मरुत मानव की बेबनिया की बड़ी कथा।

सामने की समाधि-सी गूँथ पहचानी पर एक भाव की ओट में सूरज का बादामी विषय डूब रहा था। तब गाड़ी आ गई। हम दो ही यात्री थे सा सवार हो गए। चार पाच मिनट गाड़ी ठहरी, मैं और मौसी अकेले बिछोड़ी पर थे। नीचे के विषय आत्मीयाए अपनी सीमाओं में बन्द आयोग रखी थी हम परस्पर एक दूसरे को ताकते रह गए और गाड़ी ने सांटी दे दी।

और उनमें बठ मनुष्यों की परछाहियाँ उभर पड़ रही हैं। एक के बाद एक वक्ष अंधेर में निवर्तन जात हैं। जीवन के कई मुख्य-गुण के छारों में हम भटक गये। आनंद विफलताओं में जूझते हैं। परिस्थितियाँ दण्ड कात की सीमा बढ़ताओं में हम चिन्ताबुद्ध हो रहे हैं। आनंद वितना जो अपना जीवन बीत चुका है उन पर सहानुभूति और करुणा की दृष्टि थी। और भविष्य का अनिश्चितताओं में मैं अभिभूत हो जाता।

अपने दुःख में मनुष्य कितना अकर्म है / यह क्या इसीलिए नहीं कि मनुष्य को दुःख में मोड़ है। अगर अपने मन दुःख को प्यार करने की, उसे अपना करने की कमजोरी ही हट जाये तो अकेलापन ही क्या रहे? तब निश्चित जीवन अगले अपने से बाहर की चीज कहा रहे जायगा?

और बाजार के जीवन चञ्चल मतमान में हम सहयात्रियों के चेहरों से आनंद गन्धान करने लगेंगे। तब जाने कब अनायास मौसी ने अपनी पुगानी गंधा छेड़ ली। वे सब सोहाग के भवभाते स्निग्ध जाने कहा चल गये? उन पर तब बम्बई के गिबरी कालन एकमर्चेंज में रुई के दलाल थे। पांच मान सी महीने की आमदनी थी। सात-आठ जूज का वह जुहू रोड वाला भगना और उसकी पोच में वह गायत्री अगूरी बिजली की लातटोन में बंधे थे। भाई, हर रविवार नाटक सिनेमा की तरफ उड़ती। नये से नये डिजाइनों और माचों की बस भूषा, सिंगार पाउडर-सेट लवडर। टाइटल की मीठी मोल्क महक से भरी जीवन की वे आश्चर्य, साक्ष्याती सध्याएँ ऐसी आनंद की रंगीन स्वच्छ रातें।

और एकाएक मानों अनेक वस्तियाँ और कानूना से भरे हुए ज्ञान भवन में लीप लगाए गुल हो गई। आज मौसी की जवानी डन रही है। उम्र उनकी करीब पचीस दसतीस के होगी और मौसा गायद चालीस बयालीस के होंगे। उनके मतानविहीन जीवन में एक

गहरण, अमन उन्नीनता है। एक ममन दमन के बीच सतन बना
 की गोमयती भी जल रही है। उनको जाडने वाला कोई जीरा मूत्र उन
 पाम नहीं है। मोमी घोरा के बचो का लाकर उन पर अपने लाह प्यार
 उडानी हैं। उह नहताती हैं। बग सवारती हैं। घास पास से नय पपडे
 पहनाकर मिटाई दनी हैं। और या अपने तरस भरे हृदय की विफन पीना
 की पुपचाप अपने घर के एकाकीपन में अपनी छाती में दफनाती है। चन
 रही हैं। बरबद में भारी बजदारी होने से उनके पति का काम फल
 हा गया था। ज़ी से बरबद छोटे गहर में आकर बस गया था। आज
 उनका पति निधन है—एक रई जान के मामूनी दनाल—एक मिल नरक।
 मोमी के कमरे में पुराने शिनों के दो एक फर्नीचर अब भी जीवन की
 विफन मत्वाजागाधा का मतान करते से शिवाइ गडन हैं।

और बाल करत करते मोमी ने बहुत दूर बाहर के गम
 प्रथकार में नी जवनी आग पर निगाह डहरा दी। पानी उनकी जागो
 में छन छन आया था। उस समय वे अपने अनिश्चिन और आध्रव प्रव-
 नम्बहीन भविष्य की दुर्चिन्ता में व्याकुल हा उठी थीं। सभा बात करते
 करते वे प्रथानक रक गई थी और बाहर के प्रथकार में साबने लगी
 थी। ठीक उसी क्षण मेरे भीतर का तरुण, कामनाओं की आकांग
 धन पर भूमता हुआ अपने भावी जीवन के रोमानी सपन बुन रहा था।

मोमी के चेहरे को दृष्टि गडाकर मैं गौर से देखा, रुने
 के गोद की घीब कुम्हलाय, रज्जीना मुख पर मत्स्य मानव के चिर प्रमत्तोप
 की दुःखात कहानी में पड गया। भगवान विमान विचार दान पल
 भर का जम पू पवत होकर उस चहरे के किनारे ताबता खडा रह गया।
 दखन देखत भावी के आसमान पर चल रही वह मेरे जीवन की चित्र
 नीला विलीन हा गई। एक गहर अस तोप और अभाव के मूय में
 जीवन—नाना इच्छा उमगा से नरगाकुल है। किनारे पर सभी ओर
 परिणाम में एक विफनता है निराशा है यथता है। यद कैसी पराजय

है जीवा मास की—कमी अतहीन वरणा ।

और डिब्ब में घास ग्रास घनक रूप में व ऊनी नाभी मेणी के मुसाफिर बडे है । घनेक जीवनों की धाराए मटा धारर मिली है—इस गतिमान रेल व डिब्बे में । अपनी नी धुरी पर घूम रगी धरनी को यह रत मानों धारा और मे गरिरम्भण में भर सन को उठावनी हा उठी है । यानी धरती की गति पर रत का गमन है—और दाना का माहक लचालण है मनुष्य । और उमी मनुष्य का यह खबी ? नहीं यह झूठ है यह गलत है यह प्रमाद है यह भ्रम है । यह मास मनुष्य का एक दुबल माह है । दुस स मा लिपटा हुआ ३ अपने हर क्षण का वह स्वामी नहीं है । बीनत हुए क्षण की बिफनता का प चासाप और भावा जीवन की ह्वाओं की मरीचिका—एसी का नाम है क्या मनुष्य का जीवन ?

दूर पर जवान व बटन म मिगनलो की गान नागा हरी बलिया दिखाई देने लगी थी । वनस्पति और जगभी पूनी की लगी ॥ भरी टण्णी हवा में मरा मन भूमने लगा था । ऊपर दीप्त तारों स भर तरल आनाग मे मुझे अपने भावा का तोका, विजय व पथ पर अग्रसर लियाई पडी । मैं उत्साहित हो उठा । और मुसाफिरी की भी सुस्ती उठी । एक स्फूर्ति और चंचलता मत्र में दिखाई देन लगी ।

लो यह स्टेसन था गया । स्टेसन के विशाल हाव की ऊंची ऊंची नीवागे पर बडे बडे हण्डा मे बलिया जल रही है । यहा उठा टगे हुए नय स नय कला प्रवार से विविन विज्ञापनो व पोस्टर जीवन की नित नवीन प्रगति का आप स्वामी है बट सदम है और अन त शक्तियो का घनी है । मेरे सार सपने कल्पनाए जीवन क एक विद्युत सत्य व आवेग से फिर विच आय । व सपने विहाल कर रक्त में कम की मनक उत्तजित बहुस्मिणी घागधा म लट्ठा उठ ।

‘पान त्रीडी माचिम’ ‘पूही मिठाई’ गरम । मुसाफिरो के
 ‘नरन चन्न का मोनाहन’ कामन बटार वृद्ध-नग्न रूप-कुरूप वण वण
 विचित्र अनक चर अनक वेग भूपाण भाहकताण-कुम्भताण । मौमी जान
 कब नि आम छोड़कर अपने दुःखा को भूल गई थी । उनके रजोदा चर पर
 भी एक मुक्कराट थी और अपनी सबकुण आसो में एक ममतामय प्रमदना
 भर कर वे मुक म बोली— हा र नीतू आज माफ चन्न की ‘नागरी’ में
 भूने कुछ खाया नहीं था अब खा ल । टिपिन निकाल कर खाना बगाती
 हू—कुछ नमकीन भीठा जाकर न खा—’

बानन की तरह हृष चञ्चल मन में मैं उठ बैठा । दोनों वर्यों पर
 अपने निग और मौमी के लिए बिस्तरे बिछा दिए और कृता फाँता जा
 रमका हुनवाद की दूकान पर । आवश्यक चीजें ली मौमी के लिए
 कुन्ड में रूख और थोड़े से पत्त सत्ता आया—जिममें से अधिकांश मेरे
 पल्ल पन्न का मुझे पूरा भगा था । व्हीवर के स्टाल पर जा पहुँचा ।
 हरिजन की ताजा वाली और पेंगविन मारीज में स एच० जी० बैरम
 का यूथ-ड आटर मरीज किया । एक म त और स्वप्न ग्टा मेरे माथ
 ७१ लिय थे मैं उनमें घान करने का उतावना नो उठा था । डिब्ब में पहुँच
 कर एक बचन लुगी से जल्दी जूदी मैं बहून सा खाना खा गया और
 हरिजन लेकर पन्न बठन का प्रस्तुत हुआ हो था कि बहून सो नीड
 एकाएक डिब्ब में आ गई । गाड़ी का यहाँ एक थपे का विश्राम है और
 चर काइ नई गाडी आने से यह मुसाफिरा की आमद गुरू हुई थी ।

आगा में अधिक गर्मी डिब्ब में होने लगी । उस बिगारे दरवाजों
 के पास बैठ यात्री नवागनों को गेकत थे और आने वाले जवरदस्ती अपना
 सामान ठून रह थे । बिस्तर के हिस्सा बच्चे कुली भोषण सधप
 कोहराम कालाहल मच गया । इस बीच अनक साधु आवाग और भियमगो
 के ल भी जिना टिकिट भीतर घुस आये । उन लोग न कण पर रास्ते में
 ही डरा जमाया । रॉटिन तक जान का माग भी नष्ट हो गया । कुछ भद्र

जना न इस अनर्पित माये का पने मनुष्यो को बटुन कउ कोसा नवकारा धक्के भी न्यि । पर वे तो सडक क पत्थरों की तरंग अपनी जगत् गड मये थे और टम से मस होने का नाम भी नही ल रह थ । मारी ठोकरों क प्रति वे सदा पस्तुत थे ।

इस बीच कुछ सभ्य जिनित व्यापारी तथा चम्प द्रव्य दुनिया दार लोगो न अपनी मुख्य मुविधा को घघिब स अधिक विधनन कर अपना जासा करने की माची । एक पुराने परिवय क अड्ड गुजराती मजन ने मुझे टाका । सद्भावना से दो भीठी और नम्र बात उनम ना तो उन्गो मरे जरा उठते ही नि सगाव विरही क पास मरे विस्तर पर हा अपना घासन जमा लिया । मरे घान पर पिडकों का सहरा ल हम कर मुझ से बात करने गये । मरे तकिये की विधाप पर कसीद से काड हूँ बागो का राज पहन गहू टपकते चेहरे बात म्या रे 'एकरो टोमा चित्र को दख उ होन प्रसन्नता प्रकट का और उतक गिनी का परिचय जानने का वे उदमुख हूँ । घनिष्ठ प्रसन्नता प्रकट कर अनाल बटू को उ होन आगावाँ दिया । और यो अपनी समझ म घनिष्ठता क स्निग्ध मक्खन पर मुझे फुसा कर उहोन अपन रात भर सोने का इन्जाम साध लिया । अब जान गया हूँ नि ठगा जा रहा हूँ और जान बूझ कर ही अपने को टगा जान लिया है तो दुख क्यों होना । पर मामन बाल क अपन बुद्धि चातुरी क विजय गव पर मुझ एक बड़ी ही तरस मरी हमी आती है और ध्यम भा अनुभव होता है । आय पाम क सभी मजहार कुल मुसाफिरो क अपन मुख-मुविधा पन करने क उग पर बड़ी तेज तक मुझे घनक मजाब मूमते रहे । बड़ी तेजी से एक जावित वाग्नो का झलकन मरे सामन खुलता जा रहा था । कई स्वेचो मुगधो और टाइम की सामग्री निमाग क दरानो म जमा हो ग । अपन वय पर घनम धुक्का करत मुसाफिरा की अपना भद्रता की मयाग म सिमटा रहा बदरकारी म दमना मै न रहा सवा सो अपन बिस्तरे की जगत् का भी उनके माय

वग दिया। मृत और स्वप्नष्ट की कितायें पलू उमड़ पड़न ही जीवा की यह गोर भरी किनारा भर दिमाग पर जाकर बरस पड़ी। चाह या न चाह वृ पड़न का इस क्षण में आघ्य था।

और गाड़ा न सींगी द नी। सभी फाटक खातकर काली कमरी छोड़े गथ म तम्बूरा निय, एर काना मा मूरगस घटर घुम जाया। घाक ताड़ना मक्क और मानिया की गौगर क बीच भी वह भीतर घसना नी चना आया। आदिर गाड़ी का लुका त्रवाजा भी एक मुसाफिर न गार रीक कर नगा न तो निया। पल ही म फग पर छान पड़ अजनग आवागों के बीच फम कर मूरगम भी मिन्गरी के पाम ही लडा रह गया। धर स भद्र वम उम पर घगा और निरम्कार की भिडकिया बरमा रग है गानी गनीज द गग है तो उमर व उनक तारा म बठ पगु मानव मकी टागा म घम माग माग कर चिमगिया ने नेकर उम खा छानना न न है। पर मूरग स गूय की आर आखें मिमकारता हुआ खामाग हम रहा है। कुछ देर ता यह लाठी टक परतर की तरह मगि लडा रहा। फिर रुद्ध कु कुग कर उम प्रहार कगती गाविश और नावन हुए नगा के बीच वह नीच घमकर बठन ला—अपन न बबर मजानीय वधुओं म। अत मी प्रगाडनाए और आधान उस पर एक बारगी भी बरस पड़े। पर वह सब अम्यस्त भाव से सहन कर रहा था। कभी अपन कपान म बहुत म मर ताल कर वह कुछ वृकुग दता। नती ता एक खामाग दूठ की भानि वह उन प्रहारा के बाच फसा हुआ था। उन निमम गूय मि विचार घगा आचो म बहुत मा गीजउ और पाना वह आया है। आपका मन दया म कानर मन ही हो आया हा पर सूरदाम की वे आखें नु धी आत्मम्य थी और निना र भावहीन थी। जो भी व आखें रदन करती भी लग रहा थी पर व तो रन का अचन चित्र बन गई थी। उनके पीछे आई हृम्य की आतता या रोना घाना नही था। क्या

तो मृत्यु की अभेद्य बर्फानी नीललता थी निरुद्ध गान्धि थी । ऊपर मे लगता है जैसे इस मिट्टी के ढेर के भीतर एक अरुण विवृत अविकल्प निष्काम गूथता है । परन्तु न यह ऐसा मूर्खता भी सब कुछ सदन करना हुआ एक अन्त मयावही की तरफ जीवन के लिए, अपनी हस्ती के लिए लड़ रहा है ।

और मरकत मरकत बंध के पास आकर वह एक मुसाफिर म बाना—'बाबा नन्ध स्वयं जाओ तुम नाग तुम नन ह हमू का जरा ऊपर बैठाय लेया ।

मुसाफिर को मूरदास के इस दुःसाहस और बीठता पर बड़ा ही काह आया । परन्तु वह मरकत के जब उसने दो चार फटकारे की तो मरदास और भी प्रबल औद्धत्य से आग यत्न और अधिकार के एक स्तर में बाना— इतना गुस्सा काट ना करना है बाबा ? गान्धी तरे बाप का है ?— तू भी बठगा और तम नहा बठगा गाढा सज का । गधामिट सखार की है सा भगवान का है । तू बठा है सा हमारे का भी बठने दना पड़ेगा । तू मुसाफिर है ना हम ना मुसाफिर हैं । दुनिया एक मगम है— मानिक यहा कीन ? घर मना टहरन का कीन आया है सभी का एक निज जाना है ।

मूरदास या अपना गन्धाली हाथ रहे थे और ऊपर चढ़े सा यह कि उस मुसाफिर ने फिर नाथ में आकर उस जोर से ठेक दिया । वह पीछे गिरने गिरने बसा । नीचे के उसने साहिबा ने सान निर्य धक्का पर उस मग्म ना । फिर एक बार कट्ट मरदास का प्रहार उस पर हुआ और सहन नसक इस उसकी पत्नी नकड़ा-मा बानी टागा पर पन्न लग । मरदास अपनी बनवी म म विहारी निवाप कर मान लगा—

अन्तर कर न चावरी पड़ा कर न काम ।

नाम मनुष्य बह गय सबक दाना राम ॥

तुमही या मसार में, भाति भाति क लोग ।
 सखी हिनमिन भाति नयी तान मजाग ॥
 दुखन न म मनाइये जारी मोटी हाय ।
 मूर्ख मान की साग सा लाह भमस हुई जाय ॥

चारा घोर लामाणी छु गई थी । घोर मूरतस नुप हाजर बाजर
 ताक गटा । सामन गम्भीर मूरत बनाय एक मुमनमान मज्जन बठे थ—
 उ तीन मूरतम का घपने पास बिठा लिया । नाचे के उन तीन मानवो की
 बडा दुर्घा हुई पर उतावा काई खग न चता । मूरतस जब लतमीनान म
 निरापन होकर उठ गय तो अनक ऊगगग प्रवचन उदग बनन नग कथा
 दृष्ट न मुतान लग और बाच बीच म एगध दाग गा नन । मानो उनकी
 अभी आया क बाजर जिनने य मनुष्य प्राणी उनक आम पास बठे हैं
 व मत्र उतरी गति म निरे मूव हैं और इन गवने बीच एर बडी परम
 पाणी हैं । मूरतम की उदग धारा चन रती है —

बाबा भहवार बुरा बलाय है । मान क पहाड पर घन कर
 मिट्टी का पुनता दनगना है । राख का बबूना दपते खन उठ जायगा ।
 यह समार महा भमार है । यडा साधी-मगा काई नहीं । सब स्वारथ क
 सगा है । माटी से उठा है सो एक जिन माटी म भिन जाना है—कमका क्या
 गव बीज । यानी हाथ आया है और घाली हाथ जायगा —

राजा राणा छनपनि, हथियन क असवार ।
 मरना सयकी एक जिन अपनी अपनी बार ॥
 दाम जिना निग्धन दुखी, तृप्णा वस धनवान ।
 कीन मुखी ससार म, सब जग देखा छान ॥

फिर क्या तेरा और क्या मरा ? अरे हा बाबा हमको नहीं
 बटन दगा—और हम पर गुस्सा करता है । हम तो भगवान क हुक्म से

चलत हैं—तुम्हें हमको बठन ग्या पड़गा । नदी बठने ग्या तो भगवान
हमको अपने सिर पर गिठायेगा । ग्यो, उठ या कि नही हरि व जन
ने ।'

कोई कुछ बज बहा म आ रह हो मूरदास ?

घर भगवान् धानाय जी व दरसन करक चोट रहे हैं । उनका
हृकम आया है सा मयुरा-वृन्दावन म मनमाहननाल जी व दरसन करक,
प्रमाण पाय के वहा ॥ हरद्वार जायेगे फिर आये हृकम हुआ ता उन्नी रत्नार ।
रागाजी के एकनिग न्व का बड बड राहू का मयाप्रसाद पाय कर हमारी
आत्मा बडी तिरवन हाय मयी है । जीव श्री नाथजी की चीला का मया
बलान कर बड भोग लागे बीर मान धाल के बडी भारती पूजा
भई भानू भणार भर है भगवान म प्रसन्न होय कर हमको यहून
धन माल द निया है ।

और तुम्हें ह्वा भज बाल बेहरे पर सफ दाता की वक्ति निया
वह तो हा कर हम निया । फिर गाने लगा —

उभो माह बज बिमरत माही ।

हम मुता की मूर वगरी ओ कुञ्जन की छाी ॥

आम पाग कुछ लोग अपने सुख सुभीत का सरजाम करक भाजन
पर जुड़े ध और साथ ही मूरदास की बालो का आन भी लते जा रहे
थ । लाने की आवाज और गध से अनुमान लगाकर मूरदास बाल—
बाबा गव लाग भोजन करत तो मको मकेन और हमारा क्याण नही
कगग तो कमे चलैगा ? भगवद् क जन का भाजन कराव व प्रसाद का पुण्य
तूतो बाबा । वन भाग तुम्हार जा बिन बुगये ही हरि के जन का भोग
जन का पाय गय

एक दिनक पगडोवारी वष्णुवजन बड इतमीनान से बहुत-सी

जगह घेर कर एक उज्ज्वल बढिया विस्तर में बड़े भोजन कर रहे थे। भोजन समाप्त होने ही तुरन्त उठाने बची हुई पूरिया तरकारी लड्डू दही एक छगडी में इकट्ठा कर मूरदास को दे दिया। भोजन की इहलौकिक तृप्ति छोड़ ऊपर से दान की पारलौकिक तृप्ति का डकार भी एक साथ ही उठकर वष्पाव पान नगान का आयोजन करने लग्य। आस-पास के मुसाफिरा में भी उन्होंने पान-मुपारी इलायची बाटे। तब तक मूरदास अपना भोजन समाप्त कर चुके थे और छवहिया उठा कर बाहर फेंक दी थी। अपने साबे के लोट में किमी स मागकर पानी भी पी लिया था। पानों की भीनी भीनी मन्क हुआ की सहर में भूष कर सूरनाम बोले—

‘घरे गरि के जनो पान का भाग सब कर रहे हो क्या हमें पान नहीं खवाभाग ?—जय हो भगवद् के जना की—वाघा भाई पान दया हमका भी—

मूरनाम ने पान तो लिया ही ऊपर से इलायची तमाखू लौंग आदि का भी तीन बार माग कर सेवन किया। अब लोगों का खामा मनोरंजन हो रहा था। मूरनाम की इस ढीठ, वाचाल भिक्षुता और बुमुना पर सभी हस रहे थे कोई उपहास से कोई धृष्टा से कोई रजित होकर।

इतन में पास ही एक सज्जन बीठा पीने लगे थे। धूम्र की मादक गंध को नाक में दबाकर खींचने हुए सूरनाम बोल उठे—

‘घरे कोई भाई का नाल हमें बीड़ी का दान नहीं करेगा ? मूरदास भी बीड़ी का भोग करेंगे—भगवान का हुक्म हुआ है।

बीड़ी भी मिल गई। समझदार दुनियादार सह्यानी हैरत में थे कि यह मूरदास कितना उद्दण्ड दुर्विनीत और दुरन्त भिखारी है मोहनाजी जरा नहीं दिखता धिधियाकर नहीं मागता, फिर भी पा जाता है। वह तो अधिकार के स्वर्ग में मागता है, एक जन्म-सिद्ध आधिपत्य का निरभिमान निर्बोध पान उमम सतत् जागरूक है। वह तो भोग-भुग में जीन वाले

मानसो की तरह कल्पवृक्ष में जैसा मनोवांछित पान पा जाता है। बिना भाति या अश्रुलाहट के निर्वाण वृत्ति भी घुम जाता है माना वह नहीं दस पाता है वृत्ति से माग में बाधा को मानकर चलना ही नहीं। चारों ओर के प्रचारा और आघातों के बीच स्थित निरजन आत्मा को स्वर उधर घमाते टिमकारते हुए वह सब कुछ सह जाता है। पावन की तरह वह अकारण निष्प्रयोजन मुग्धगता रहता है। अपने गौरमान चेषक के दागों से भरे कृष्ण घण भाते गम्भीर स चहर पर एक झनटा मफ टोपा घन पहन है। कपान में चरन की खोर पर गोरघन नाथ का निशक लगा है। बगल वाली पर चौड़े पाट की एक पट्टी है और उस पर एक कमली में किंगरी दबाए है। दूसरे गंधे पर एक भोती पड़ी है। बाज लाहे की कुटी पिटी कमकनी गानो में कोई चिमटी भगता है। कोई दात गझाता है और मुरदास एक विचित्र मिनकी मुस्कराहट से बुदबुदाता हुआ दन में ताजना है। बीड़ी का कग जोर से लीक कर घुमा उगले हुए उसने हस लिया और बाता—

आज ठूटी नहीं छनी है और न ही तम ही लगाया है सब सूखा ही बीत रहा था। लेकिन दसा गनी तक सजाग सो जजमानो में भेंट होय गई। हरि जनों का सत्संग हा गया। सा भाजन पान भी हुए।

और भीतर ही भीतर प्रसन्न मुरदास मन ही मन मुस्करात जान है। अचानक किंगरी बजाकर वे गाने गए—

बचन का पिजड़ा तोड़ बसो मेर हसा

गदन उठाम निवेन्नो-मुख प्रसन्न मूढ़ा में वह गा रहा है और आत्मा निविकार पानो गाजडा में न निकला जा रहा है। गल की नों लिचता जाती है और आताप बस्ता हा जाता है। दन और उत्ताम दोनों उम स्वर में विमो होकर ममस्व होकर पूव गये हैं। आम पास बैठ पार दोस्त हम कर कहने लग। चारों ओर इसी अदृष्टाम कन्कार बोलाहल से जि वा गुज उठा। मुरदास का मुह एक सत्करण मुराराहल से पटा रह

गया, और अखण्ड सास आलाप खींच कर वह गाता ही चला गया। बीच-बीच में हचकी और कम्पन में आवाज डूब डूब कर फिर उठती। स्नान की गम्भीर वापिसा में स उठ रहा अंतर क आल्हाद का जैसा स्वर है। जान कमी विमूढ़ व्यथा में समस्त प्राण को वह उद्दिग्ध और यथ कर रहा है।

तभी कहीं से दा-चार धारामतलव कैमनबल छोकरा न बिदलाकर बना—

‘चुप भी रहेगा वे गये की तरह बसुग रेंक रहा है—घटा भर हा गया—छापड़ी चाट गया—चुप चुप वे चुप।

धीरे भी कुछ ताने कशिया उणा ठुस्म और गालिया की बीठार ज्यो ज्यो चारो मोर की रोक और तिरस्कार बढ रहा था, मृगम क स्वर की आल्हाद वेदना तीव्र में तीव्रतर हो रही थी। और वन अंत वह बुकबा फाकर गा उठा। प्रलय के समुद्र का गजन जस उमक स्वर में समा गया है और एक अनंत आलाप तान स बढ गाता ही चला गया। धारे धीरे स्वर डूबन लगा और उस हिचकिया आने गयी। और वह एकाएक घम स चक्कर खाकर नीच गिरा। गिरना था कि नीचे धानी न भाड हाथो लिया। दो चार ताम धू से उमकी पमलियो पर पड। तब बड़ी जार का खामी उसे आई। खामते खासत दा चार उवान आय और तभी लिहकी में से मुह निकाल कर उसन बड जोर स क कर दी। आसपास फम वे मानव जातु बुगी तरह बिगडकर गार मचाने लग।

निलक पगडीधारी बणव ने हरे कृष्ण हरे राम ! कहकर अपना विस्तृत त्रिस्तर समेग और उत्कट असह्य ग्लानि में आसैं मू दते हुए मुह फर कर वे त्रिस्तरे में डुबक गय। भेरे गुजराती बुजुग जो कभी में खरटि खींच रहे थे जाग उठे और बगडाइ भरत हुए बडबढाय—

अभी तो देखते देखते में कितना ला गया है साला बडा नाभीडा है माना खाघडा ! नरक का कीडा—कितना घाना है—सबम

ल लेकर जाने कितना राग गया । वह पपया मूंगफली अटमट कोई १५ साव है माला— भव मरा, साले को अलटो हुई-हेकनी । जतन में वे फगनेबल छाकरे चिल्लाये— अर कानरा पदा करेगा साला मरदूद । मगल स्टेशन पर इसे निवाल बाहर बना ।

गम्भ रजाई व सुग में लिगने वैष्णव जो पव मुह ठककर सो गय व रजाई व भीतर ही से बोले— हा हा साहेब, बराबर निवाली सान पाजी को नही तो बिना मौत मर जाने की दगा है ।

सून्दास लाचार था खड़ा नहीं रह पा रहा था । सो धन्य स बठ गया । दुस्म द देकर लोगो ने उसे फिर खड़ा किया । वमुक्ति ममाप धरधराते पैरो वह खड़ा हो गया । दो तान आदिमियो ने सठर जबरदस्ती विहकी स बाहर उमका मुट रूम दिया । बाहर की गदन लकामे वह बड़ी देर तक खों खा कर घुरता रहा । उमने भोने में स लोटा निवालकर मैंन धाग मा पानी धाने लोटे म म उसक सोर म डानकर उस समा दिया ।

‘मच्छा मच्छा तू कौन है भगवद्जन । क गदे भरे मुह म मरा हाल टटोलने लगा ?’

घपनी जगह स हा में बाता—

‘कुत्ता कर तो बाबा—जी मच्छा हो जाण्गा ।’

मच्छा भगवन् तरा हुकम —

मुह धरकर उसने कुम्पा कर लिया । अब मव घपन घपन बिछीनो म गरम हो होर विर रह व और विधाय उन की सोच रहे व । सगदी बनी जा रही था और मूरदाम मछा खड़ा टिडुर रहा था । टटोलता हुआ वह धाव बढ़ा और एक वय का विद्यवाहा पकडकर वह उयर निरे पर टिकन लगा । एक रतनामी पगडाशरी मठ बहा बठे व—

वे चौक कर ऐसे देखते रत्न गय जिस पकड़ाई में आ गया हों। सूरदास को ठगने का साहस वं नहीं कर सके और अपराधी की तरह भयभीत बड़बड़ाहट से मुंह धिचकावर रह गया। छटपटाय तो बहुत पर बाल उनका फूटता ही नहीं। सेठ की उम्र ३५ से कम होगी।

गहरे गहरे पान से उनके ओंठ सिंघात हो रहे थे। बड़िया रंगी कपड़ों में से हिना महक रहा था। लनाट पर बागीक सा एक बिड़िया के नगाय थे। गौरीन मजाज आल्मी मातूम हात थे। अपने धारों धार अच्युती तरह सपनकर एक कम्बल और उम पर एक रजाई उहोन उस तरफ बड़ा दी थी सो उनसे उम और साद एक स्त्री ने उस ओड़ लिया था।

आय ये सब निगाह से न याचिया व। मैंने भा देखा था। स्त्री एक स्वस्थ सुगठित शरीर का लम्बी पूरान मुन्दरी युवनी थी। बड़िया पाली छोट का एक एडी चूमता लहंगा बिना कल्प दूग नय मातियापोत का सुगडा जिसमें थोड़ा चौड़ा मोटा लगा था। नये कराय माया छोटी में गात्र से गूथ कर गाडी गई पट्टिया के बीच साने का मेपली बोर भूल रहा था। बिड़िया से माभिन सोहागिनी का जीवनदीप्त चेहरा जिसमें लावण्य वं गुनाबी भवर पड़ रहे थे। लगता था कि कोई बटी पीहर से ससुरान चनी है। गोरे गोरे हाथा में और पगतलिया में बड़ी मेहनत से बारीक मट्टी रचाई गई है — जो सिंघाह पटकर और भी मोहक हो गई है। कनार्द में गहन और पावा में छनछताते हुए चादी के अललेनवरी और बिछुए। जब आई थी तो छम छम करती हुई बड़ी देर तक सारे आवाल-वृद्ध सभी मुसाफिरो की दृष्टि और मन का कद्र चनी रही। जान वव वह वय की पीठ की ओर मुंह फेरकर सो गई थी पीठ पर पड़ी गोटे में गुथी छोटी सुगढ के मनीन गोल में मे दीख रही थी, अब एक दुगाले से ढाक दी गई थी।

और पायसाने की तरफ बठ ये मञ्जन उभर गति हो ता होंगे ।
जितनी स्वतन्त्रता समझ्या और गुभीन म उम म्ना व माध बठ थ,
उसम बल्बना बरन की मुआइग भी नहीं थी कि व मञ्जन उम स्त्री
व पति क मिमा और भी बार्ई हा मवन है । पर दगो दोन उभान उभ
नइवी से पूछा—

बाजी गाय पाणी वियोगा बार् ? बिना मर परे ही सञ्जी
न सिर हिला लिया । तब ना समझ म छाया कि य ना बार्ई पात्र का
सगा है—गाम बुटुम्बी । कि उमा म्जन पर आन खान दो मगाविर
पुमपुमा रह थ ।

य य तो बनकमन मेठ की लडकी है—उनक गुमास्त
समुगम पहुँचाने जा रह है ।

मोचा गाय भाई म्ग—सकिन य जो बँठ है जिस तरह
बठ है ? हा गायद मुग्गा का जिम्मा है रकिन मर मर जरूरी है । उस
मुग्गा का उ हान म्ज्जा तरह मुला दिया है और पर व पास बठकर
रात भर उह पहा दो हल निबाला है । आप तकसीफ उठा लग सकिन
बार्ई की साहेब को ता आराम देना ही हागा । और फिर पहरा देना ही
जरूरी है—अमाना तरान है—मुचाई और रफगई बहुत बढ गइ है । सो
बध की पीठ व ढण्ड पर गदन लटकाम व अपमूदी भाखो स ऊप रह है
रकिन दूर पास क लागी का दृष्टिया और बान एकाम सतर बहा
मटक है ।

बुन्ने मुजगानी ने आख माररर इस लिया मरी तरफ । मौनी
भी जाग रहा थी धीर म्जान और लज्जा स मुह फग्नर उ मोने ऊपर स
कम्बन टाक लिया ।

सठ क पास हा बँठा मूग्दाम, का मों कर कहा है—धीर

वमस मेठ के आनन्द में उगा याघात पहुँच गया है। वम बीच हिम्मत करके दो चार बार उठाने उस पन्थाग है—गन्ना है पर वह बम्बल सरके तब न। कील की तरफ ठुन कर वह बैठ गया है। गुमान्ताजी के मुख की मारी मिठास विरम हो गई। उमम जाने जैसा कमनापन आ गया है। सब आर स विवस्त निद्रा द्र उखटक अपने मुख में निमग्न मेठ मूर्खम में मानों मयभीन और तस्त हा उठे। मूर्खस जस प्रत की तरह कितवागिया मारता हुआ त्वाभोग आन्वो में व्यग्न कर रहा था।

उठेगा कि नहीं सारे उठ उठ उठ बदमास गुण्ड उठाइगोर कही क क त हुए गुमान्ताजी उसे हगने का सन्नद्ध होकर खड्ड हो गया।

एननो दर जो गई भली तरह कहते—एक नही सुनता है सावा - अभी साल बदमास को पुनिम के सुपरन करवाना हू भगले स्टेगन पर।

पीठ में दो चार कोटिनिया के दूध खारर आविर मूर्खम खटा हो गया और सतवार कर थोना -

सा पुलिम के भुपरत करके हमारा क्या बिगाड लेगा ? बहा आया धना सठी - नरक का राक्षस दुष्ट दुजन है कोई हरि का जन नहीं है—जान पडता है र बनिया है कोई ?

लाग बड जोरों से हम पड। सठ बिटबिटा कर जाना—

‘क्या बकता है र मर्दे पाजी कही के बहा आया है भगवद भगती जाना अत्रे कहता मान को बिहारी में से उठाकर फेंक दू अभी ।’

‘कहा फेंक दगा ? जसे धरती पर तेरा ही राज है कोडिया का हिमाव लगाने वाला, तू क्या राज करेगा। भाइ के बदे

उत्तन भगा है हम तरे जस दुष्का की गबरगारी करन ।" सठ किसी तरह मन मसोम कर बठ गय और फिर मग ऊपने जानरुम कर । गुस्म और भय से हाथ पैर उनर अभी भी धरधरा रहे थे ।

द्वनन म एर छात्र पा ह्मन था गया । चाय गरम—चाय बमनिया मूरदास बोले, 'चाय ता चाबा चाय मिनना चाहिए । अहा हा हा कणवजन चाय नही पिनाभाग ? सर्गी की यसा म—गरीर गम हो जाणगा—रोग विकार सब टन जाणगा । घोर बाहर भाव कर बोल ठठे—

‘ते-ते-भाभा चाय बमनिया मूरदास चाय पीयेंगे ।

चाय वाला कप बसी देकर सरक गया । बड़ी कृति की चुमकिया सने हुए मूरदास न चाय पी । चाय वाला दो बार साकक पैमे माग गया । कोन उत्तर दे ? मूरदास तो पान सुपारी जुटान म लग थे । एक अजहद पान खान वाल भोपाना करणही लाकर बठ थे । मूरदास जब पान खा चुके सब मुरती की भी तलब ह—बह भी पूरी हुई । फिर इतन म चाय बाब न बिबाड खोलकर मूरदास से कहा—

पसे लाधो न बाबा ।’

पसे हमार पास कहा ? भाई के खान रेंगे । पसा माया है और माया हम अपने पास नही रखत—पसा सरकार से भागा भरे हा, हम ता भगवान क हुकम से चलते हैं ।”

हराम का आता है नही पसे थे ता नाक पूना था चाय पीने की—

मूरदास निवगिनकर हस गया । उसके हाथ मे कप बसी कपट दात बिटकिटाकर गुम्मा पोता हुआ चाय वाला सरक गया । द्वनन म कोई मू गफनी वाला निक्क भया । मूरदास ने यम यम मू गफना ल ला

घोर छिलके फँना-फँलाकर खान लगा । इतने में गाढी चल पड़ी और
मू गफनी वाला पसा को चिल्लाना ही रह गया ।

मूरदास गाने लगा—

‘ भजगुरु करे न चाकरी ”

एक बार सूरदास गात गाते बहुत ही उद्धन हो पड़ा और बड़ी
विश्रुतानो से इतरा इतरा कर गाने लगा । लोगों के विश्राम का समय
था—सो इस बार सभी का धम टूट गया । चारा तरफ से लोग दूट पड़ ।
वे मूटधारो विद्यार्थी गार मचासे चिल्लात आ धमके और लग उसका
हाथ मराड कर उमे लताडन—

रामकिल बही का डबिल सासा न चटा हो गय है कमबल
मिर लाय ही जा रहा है कपो व चुप रहना है कि नही उन्नु के पटठ ।
मान ने तमाम ता हवा खराब कर छोडी है—प्लेग बही का । टहर जा
सभी । भगन प्लेगन पर पुनिम के हवाल करता हू ।’ इतने में दूमरा आ
धमका और उसकी गन पकड़कर बोला— कपो व टिकट कहा है तेरा
बिना टिकट चलना है व सुधर । मन भर माले का खाने को चाहिए ।
हराम का बन्ना निनक छपा लगाके भगत बन गया है ।

वे छोड़के उस मकमोर खड़ेकर उसकी जेबें तलाश रहे थे कि
इतने हा में पनेहापाद का स्टेशन आ गया । एक टी टी को आवाज नकर
उहोने बुलाया और प्राथना की कि इसे उतरवा देंगे तो बड़ी कृपा होगी ।

टी टी न सूरदास को भभोड कर उसका कान मरोडते हुए
कहा ‘क्या बुझे जी । यहा बैठन दिया तो एसी हरकत कर रहे हो—
उतार दूंगा बटा जो हरकतवाजी करोगे समझे—

जान जाते टी टी उन भद्र जन से कह गये कि दा स्टेशन चला
जाने दा । यहा सर्नी में ठिठुर कर मर जाएगा तो हत्या हो जाएगी ।

सूरज, मैं तो स्वयं भाव में बाधा —

इसको उगाहेगा बाबू गाहा में ? गाह व
बाग भी हमका गाहो में नहीं उगार गइया : गाही रिश
मरे बाग की है—गवह बाग की है—घर में भगवत की ,
जो जगत् में निराश गत रही है : मुझ वर धारण में बग
कम उगार दान

विभी : पूछा—

कहो जगदीश बाबा ?

हमारा वर धारण वर : वर गाहा व मुझ निव
निव मरि में हमारा धर्मार्थ है : मुझ इसको क्या मुझ में
समको धार्मी नहीं—मरि की वर धर्म समझता है—राज
पिर पिर जनम कर पिर मरन हो : अब हमका कर्म देव में उ
वाह्यता की ? राजा धर्म हमारा धर्मार्थ कर ना उगहो भी
स उगार सकत है—उसका मिहार्थ उगट गइत है :

हमको कर्म सत्ता दया तो हमारे धर्मार्थ से वह वि
धर्म हो जाएगा : हम तो क्या करव मुझ वर कोर नहीं व
समन्तर कि धार्मी है तो क्या हुआ हरि का जन है :
कृपित हो जाय तो हम राजा व मरन का मिहार्थ उसमें धार्मी
है : पू हमको क्या समझता है छोकरे, हम साधु मन हैं कि को
जन है ?

अब धा धार्मी धुप रत्ता है कि पिर पुनित को ही
पडगा :

सूरदास किनकारी मार कर हस पडा—

पुनिस क्या कर लगी हमारा !—पुनिस क्या राजा का

महमा का बुनाओ—सिवाकर ब तिरमून म पिरो कर सबको टाग दूंगा !
 ताण्डव निरत करने लगूंगा ता अभी परलय आ जाएगा और तुम्हारा
 राजा, रेल पुलिस और तुम सबके सब उड़ते फिरोग उमम समझे । दस्तो,
 मन जिनाओ रोस—मन दो नाम सन को मान जाओ कहना ।'

कह कर सूरदास झूम झूम कर बिगरी बजाता हुआ नाचन
 लगा—

'बम बम मोन जय गजर ।

जय प्रलयकर रद्र दिगम्बर ।'

इतन ही म स्थान आ गया । दो तीन यात्री जाकर एक दो
 पुलिस वाला का बुना लाय । मून्दास झूम झूम कर प्रचण्ड स्वर म गा रहा
 था और बगबर उन्मियार नाच रहा था एन रद्र प्रसन्न रूप से उसके
 नयुन फडक रहे थे ।

पुलिस वालो ने बिना कुठ जाने नी चुपचाप पकड़कर उसे नीचे
 धोका । वह हिम्न म टकराना था पछाडे खाता था और और भी भीषण
 होकर गा रहा था कौन है जो उतार सकेगा उसे—कौन है जो उस वहां
 से हटा देगा ? उस पर कौन गासन करेगा ? अपना नामक आन जब वह
 हो गया है—

गाड़ी ने मीटी दी । धक्के देकर पुलिस वालो ने उस बाहर
 निकाल दिया ।

गाड़ी चल पड़ी । मैं बिड़को पर आन के अपने कीतून को
 रोक न सका । बाहर भावकर दसा—सूनसान विस्तृत प्लेटफार्म भयानक
 शीत एव तीर सी ठंडी हवाए और चारों ओर अघकार से भरी रात्रि
 भाय भाय कर रही है । दूर पर स्थान की अकली बत्ती अकम्प करण
 लो से जल रही है । सूरदास चुपचाप वहां खड़ा रह गया । उम अघकार
 में निरभियाय गूब स्वय एह ही दिना की ओर मुह उठाए वह

प्राकृति अध्वन है—जो कह रहा था—

‘उम कीर उतार सकता ? वह राधा की गद्दी में उतार सकता है—मिहासन उतार सकता है—महलों में भाग लगा सकता है ।’

वह राधा अध्वन निराला निराला, मातृवत्त लखे मुग। उम अध्वन में उमक एक ओर मिहासन, विभव सत्ता धिक्कार सोना चाँदी ससि माणिक आदि अपार भाग मातृवत्त ब डर है और उसक दूसरी ओर धन-त भूख, अभाव, राग-शोक मृत्तवा युमुगा हिमा मुद नृत्ति महापारी, अपरिमीम दुःख दारिद्र्य जग मरण देने वह हैं ।

और अस्थि धात्री रत्नाडो में मैं, मीमा तथा अप मन्मथो अपने अपने कम्यन रजाई में झुह उर अपने अपने दुःख-मुक्तों में निपट धिरे व द विवन् बन जा रहे थे कि चले जा रह थे । ०

पूर्ण विश्राम

○

डूकटर ने जब बाह पर काला कपड़ा लपेटा और खर की धली में हवा फूँक कर नाडा का गति दम्बी और फिर गणित के गुणा भाग, जाड़ जरब का सहारा लेकर बाबा कुछ मीरियम नती है दफ्तर से छुट्टा नकर बाबा हो आदम विश्राम आपको पूरा नीराग कर दगा । लेकिन विश्राम भी पूरा होना चाहिए । ता पत्नी बनी प्रमन्न हुई ।

एक पूरा विश्राम और पूरा नीरोग के मुन्नाकरे से मैं बहुत डर गया । जिस शब्द के साथ पूरा लग जाता है वह पूरा भयावह हो जाता है

घर आकर थीमती जी का कह दिया जुहू की तयारी कर लो हम दो दिन पूरा विश्राम करेंगे ।

एक दिन बाबा पूर्णिमा भी थी । सादमी रान का मजा कुछ पर हा है । एक दिन गहन आघो रान में ही उन्होंने तयारी शुरू कर ली । नो घन्टे का अलाम बन लग गया । स्वयं वह दो स पहले ही उठ बटी और कुछ नोट करने लगी । जब तक मैं उठा तब तक पहचिस्त तयार थी ।

थीमती जी ने इन सब कामों की पहचिस्त बनाकर मेरे हाथ में दन हुए कहा जरा भर साथ गरज तक चलिय वहाँ पर तयारी के

भावनि भवत है—जो कह रहा था—

उस वीन उतार सकना ? वह राजा को गद्दी से उतार सकता है—सिंहासन उलट सकता है—महलों में आग लगा सकता है ।

वह खड़ा भवचक्र निरुद्ध निरुद्ध सावस्त एगो मुग़ । उग
अपकार में उससे एक घोर सिंहासन, विभव सत्ता धिक्कार साना चाही
मणि माणिक आदि अपार भोग गामप्रिया व डर है और उससे डूमरी
घोर अनन्त भूख अभाव रोग गीत तृष्णा तुमुगा हिता युद्ध दुःखि
महामारी अपरिसीम दुःख दारिद्र्य जरा मरण फल पडे है ।

और बलियो बानी रसगाड़ी में मैं मौनी तथा अय सहायी
अपने अपने बम्बल रजाई में मुह डके अपन अपने दुःख-मुल्लो में निपटे
पिरे व द विवग चन जा रहे थे कि चल जा रह थे । ०

पूर्ण विश्राम

○

डॉक्टर ने जब बाह पर काना कपड़ा सपटा और रबर की धली सहता फूक कर नाड़ी का गति देखी और फिर गणित के गुण भाग, जाड़ जरब का महारा सेकर बोला कुछ सीरियस नहीं है दफ्त स छुट्टी नकर बाहर हो आइय, विश्राम आपको पूरा नीरोग कर दगा लकिन विश्राम भी पूरा होना चाहिए । तो पत्नी बड़ी प्रसन्न हुई ।

इस पूरा विश्राम और पूरा नीराग के मुहावर में मैं बहुत ख गया । जिस गम के साथ पूरा लग जाता है वह पूरा भयावह हो जाता है

घर छोड़कर श्रीमती ओ को कह दिया जुह का तैयारी कर ल हम दो दिन पूरा विश्राम करेंगे ।

एक दिन बात पूर्णिमा भी थी । चांदनी रात का मजा जुह प ही है । एक दिन पन्ना आधी रात में ही उठोने तयारी शुरू कर दी । धजे का अलाम बल लग गया । स्वयं वह दो स पहेले ही उठ व और कुछ नोट करन लगी । जब तक मैं उठा तब तक फट्टरिस्त तयार थी

श्रीमता जी ने इन सब कामों की फट्टरिस्त बनाकर मरे हाथ देते हुए कहा जरा भरे साथ गरेज तक चलिय वहा पर तयारी

गामान की दूगरी पहरेन भी दूगी ।

उम पहरेन म मात्र म हवा मग्ने की निचकारी टपूव बान,
रवर गा-गूगन एक मवन इजिन आयन घाति घादि कई चीजें घोर भा
तिथी थी ।

दिन भर लौह गृप करव में गायघनी स मिरणी लाया । उसकी
बकरी गद्दी म दग पाव बान ही गाय घ घोर बाना म उनक घाय म
बघी अनक राटक गी थी । चुगपे स बांगते हाथों से उसन जब काम शुरू
किया तो समझा बन्ना एक भभन्न कटा मगर उम लुग व बन्न न मुझे
एक मिनट बत म नी बठन दिया । कभी कीले कभी लकनी कभी बग्न
लाने के लिए बह मुझे हर भा प घ वान बाजार भवता रहा । मुन्न मे
गाम हा गमी मगर गाम तक चार म स दा लिडकिया की चत्तानिया भी
नही कमी गयी । मोटर क लिए जरूरी सामान गान-भाले रान हो गयी ।
पचास रुपय म अधिग गच हा गय और दीडने दीडने में, इतना हाफ गया
कि रात तक लि क धडकन दुगुना हा गया था ।

रान की मोन मने तो श्रीमती जी न आश्वासन त हए कहा
क 'जुह पर दिन भर बिशम लेगे तो बराबट दूर हो गायगी ।' बस
उह मरी बीमारी स काफा सगानुभूति थी और जो कुछ काम उहोंने
मुभम कराया था वह अपने लिए नही मेरी घडकन का दूर करने क लिए
ही करामा था । इसलिय मैं उनके आश्वासन से मचमच पसीज गया ।
उनका विश्वास है कि उनक सब कामो का लभ्य मेरी सुल गानि ही
होता है । और यह भी कि वह इस लक्ष्य का जीवन के किमो भी क्षण
अपनी आवा म ओरून नही करती ।

श्रीमता जी न अपन कर कमलो म घड़ी की चुन्नी घुमाकर
एन म लगा लिया जिससे कही जुह क लिए प्रस्थान म दर न हा आम

और वहा जाकर जो पूरा विश्राम लेना है उसमे निमिषमात्र त्रुटि न रह जाय । रात के बारह बजे श्रीमती जी ने फिर स मंत्र चटखनियो का ट्रायल लिया और खुद बाहर तयारीफ ल जाकर मास्टर का पूरा मुआयना करके यह तसल्ली कर ली कि फर्स्ट में लिखा सब मामान आ गया या नही ।

सुबह पांच बजेत ही एनाम ने गार मचाया । उस समय अगर श्रीमती जी निल पर हाथ रख लवा न दनी तो निस्सन्दह दिन की धडकन चौगुनी हो जाती और गायन डाक्टर का कहा बुलाता पडता । एम सकल काल म श्रीमती जी बडे काम राती थी ।

रागनी हाथ न हान जुट्ट की तयागी क्नाइमम पर पहुँच गयी । स्टोव की भी आग ही धोखा दना था । वह दूर मिनट बुझन लगा । आधा घटा उमम तेन मरन, धौकनी करन म चला गया । आग्विर चाय का आग्राम स्थगित कर दिया गया और हम लक्ष चित्त हा तयागी म जुट गये । बाटरलू जान स पहन नेपालियन न भी एमा तयारी न की हागी ।

एसी महत् योजनामा के सम्पन्न करने म हम पनि पत्नी परस्पर सहयोग भावना म काम करन पर हा विश्वास रखत हैं । सहयोग भावना हमारे जीवन का मून मंत्र है ।

सहयोग मन, बचन कम तीना स हाता है । जीवन का वह मूनमंत्र मझे भूला न था । श्रीमती जी मुझे मर कामा की याद दिलाने लगीं और मैं उनक उतार के बल उनकी चिंताओ में हाथ बटाने लगा ।

मैंन याद दिनाया— पून्थो के साथ मिर्ची का अचार जल्द रख लेना वी जो निल्लो स आया है, बट रखना ।’

श्रीमती जी अचार का मतवान उतारने के लिए स्टून पर चढ़ी और मतवान में स दो चार मिर्ची निकाल कर फूडिया पर रखत हुए बोली —

अचार तो रख लूंगी पर तुम भी अखबार रखना न भूल जाना मैं अभी पटा नहीं है।

अखबार रखी की टोकरी में प्रयाग कर तुम था उमर में म अखबार लूटन डू डत में बोला वह तो मैं रख लूंगा ही लेकिन तुम वह गुलूर = न भूल जाना जो हम पित्रन साल का मोर म लाय थ। जूह पर बड़ी मर हवा बननी है।

गुलूर = तो रख लूंगी लेकिन तुम बगी वरिग सूट रखना न भूल जाना गरी तो नहाना धरा रह जाएगा। गूखे ही लीटना होगा।

‘और तुम बही खबर का भूल गयी तो गजब हो जायेगा।

वह तो रख लूंगी लेकिन तुम भी एक काम करो कुछ नोट पपर और निकाफ भी रख लेना। मरी अरुची म पड है। और देखो राइनिंग पड भी न भूल जाना।

राइनिंग पड क्या करानी ?

कई दिन स मा की चिट्ठी आयी पडी है। जूह पर खाली बडे जवाब भी = डू गी। यो तो बकन भी नहीं मिलता।

चिट्ठी से याद आया कि बही पोस्टल स्टम्प न भूल जाना नही ता गजब हो जायेगा। चिट्ठी लिखी निखाई रह जायेगी।

और जरा वे चिट्ठिया भी रख लेना जिनके जवाब देने हैं चिट्ठिया ही रह गयी तो जवाब किमके दोग ?

और मुनो बिजली क बिल और वीमा के नोटिस आय पडें उनका भी भुगतान करना है उ हे भी डान लेना।

तब तो किफ चर बुन भी रख लो कही भूल गय ता भुगतान क्या होगा ?

“रख लूँगा जम्हर रख लूँगा ।”

तुम तो यों ही कह देते हो और भून जाते हो ।’

“पैत तो तुम अकमर भून जानी हो ।”

‘मैं भूल जाती हूँ तो तुम कौन सा याद रखते हो ?’

मैं क्या याद नहीं रखता ?’

‘उस दिन तुम घूम का चश्मा भून गये तो सर का दर्द पड़ गया । हमलिए कहती हूँ छतरी भी रख लेना ।’

‘अच्छा बाबा रख लूँगा । और दवा, घूप से बचन की क्रीम भी रख लेना । गाम तक छाने न पड़ जायें । वहाँ बहुत बरागी घूर पड़नी है ।’

श्रीमती जो पहनी जा रही थी कि रख लूँगी रख लूँगी, लेकिन ठूँढ़ रही थी नल-कटर बचा और ब्रुश । और सब तो मिल गया था लेकिन नल कटर नहीं मिल रहा था इसलिए बहुत घबराई हुई थी ।

मैंने कहा— जान दो नल कटर बाकी सब चीजें तो रख लो ।

दर में अग्न लिए नया अलवार और कुछ ऐसी किताबें यत्र म भर रहा था जो बहुत दिन से समालोचना के लिए छापी थी और साधता या फुरसत से समालोचना कर दूँगा । माया—ऐसी फुरसत कब मिलेगी ? आखिर तीन किताबें थले में भेज ली ।

कई दिना मैं कविता करन की भी धुन सवार हुई थी । उमड़ी कई कतरों इधर उधर बिखरी पड़ी थी । उन्हें भी जमा किया । साधा काय प्रेरणा के लिए जुह से अच्छी जगह और कौन-सी मिलेगी ।

इस तयारी ॥ इधर श्रीमती जी ने अपने शृंगार-मज का मज सामान कई अच्छी ॥ भर लिया था और मैंने अपनी राइटिंग टेबल का

सब सामान कई पैलों में भर लिया था ।

और आतिर कई घण्टी कई घण्टा कई भीत भर कर हम जुहू पहुँचे और घीरे घीरे सब सामान उस घृण व नीच न घाये जहाँ दरी बिछा कर बठने का इरागा किया था ।

पाँच-सात मिनट तो हम स्वप्न लोग में बिचरने रहे । हमने सोचा वे लोग कितने सोभाग्यवामी हैं जिन्हें जूट पर निश्चित होकर बठने का अवकाश मिल जाना है । आज हम भी अवकाश है आज दुनिया भर की चिन्ता भूल कर हम पूर्ण विधाम करेंगे । पागिर डाक्टर ने पूर्ण विधाम की सलाह जो दी है ।

हमने बँदिम सूट पहने और समुद्र में नहाने को चले पडे ।

समुद्र तट पर और लोग भी नहा रहे थे । समुद्र में उठने हुए उबार के साथ पश्चिम का पवन भी चल रहा था । एक ऊँची लहर न आकर हम दोनों को डक लिया । लेकिन दूसरे ही क्षण वह लहर धान्न हो गयी । लहर की उस घपड़े से न जाने श्रीमती जी के मस्तिष्क में क्या नयी स्फूर्ति आ गयी कि उन्होंने मुझसे पूछा तुम्हें याद है बरामन् की लिहकी को तुमने मन्दर से बाँद कर लिया था या नहीं ।

मैं कह उठा मुझे तो कुछ याद नहीं पड़ता ।

अगर वह बन्द नहीं हुई और खुली ही रह गई तो क्या होगा ? — कहते-कहते श्रीमती जी का रंग पीला पड़ गया ।

उसके बाद समुद्र की नाचती लहरें भी उनका चिन्ता भार हल्का न कर सकी । जल्दी-जल्दी कपडे पहन कर वह बोली, तुम भी अजीब भुलक्कड़ हो । तुम्हें याद ही नहीं कि उस बाँद किया था या नहीं । बोलते क्यों नहीं ? बोलो तो ।

मैंने कहा, 'चलो छोडो अब इन चिन्ताओं को—जो होना होगा हो जायेगा ।'

मेरी बात से तो उनकी आँखों से आसुओं का समुद्र ही बह पड़ा। उनके कापते ओठों पर यही शब्द थे “अब क्या होगा ?”

उन्होंने जल्दी-जल्दी चीजें समेटनी शुरू कर दीं। जो भोल खाली किये थे उनमें सामान भरना शुरू कर दिया। बँलियों को खाली करना आसान है भरना कठिन। खाली करने में पाँच मिनट लगे थे तो भरने में आधा घंटा लग गया।

‘और अगर लिट्टकिया खुली रह गयी होंगी तो हार का क्या होगा’—यह सोच उनकी अधीरता और भी ज्यादा होती जा रही थी। जिस घड़कन का इलाज करने को जहूँ पर आया था वह दस गुना बड़ गयी थी।

मैंने तेजी से मोटर चलायी मोटर का इंजिन धक धक कर रहा था लेकिन मेरा दिल उससे भी ज्यादा तेज रफ्तार से घड़क रहा था।

जिस रफ्तार से हम गये थे उसी रफ्तार से वापस आये। अन्तर आकर देखा कि लिट्टकी की घड़कनी बदस्तूर लग रही थी, सब ठीक-ठाक था। मैंने ही यह लगायी थी, लेकिन लगा कर यह भूल गया था कि लगायी या नहीं। और इसका नतीजा यह हुआ कि पहले तो मेरे ही दिल की घड़कन बड़ी थी, अब श्रीमती जी के दिल की घड़कन भी बड़ गयी। ○

वनारसी ठग

○

वनारस म एक ठग गहना था । उसका काम ही था भोले भाव लोग को फसाना और चक्का देकर उनका माल मत्ता हथिया लेना । धीरे धीरे पटल वह अपने माँतल म बाँ म अपने गहर प इतना बगनाम हा गया कि लोग उसकी ओर से उहुन सावधान रहने लग । उसे धाता दल कर घर के दरवाजे बन्द कर लेने अगर मार्ग म बन्द रखा होना तो चक्कर दकर निकल जात उनका वहा हास था कि दूध का जला छाछ की भी फूँक फूँक कर पिये ।

जब ठग ने देखा कि गहर म उसकी बमाई कुछ भी नहीं रही— ता एक दिन वह अपना स्त्री म बोला— दत्तो अब तो यहा मेरे हथकड़े गयकी पता चल गये हैं इगनिय मैं परहेज जाता हू । मुना है दिल्ली बहुत बडा नगर है वहा बडे सठ मातृकार र त है अगर एक दो भी कम गय तो मालामाल हो जाऊगा । तुम फिर मन करा । मैं जल्दी ही लौट आऊगा । बस अब तुम बल मेरे चलने की नयारी कर छोडना ।

दूमरे दिन ठग की स्त्री ने पीनी मिट्टा व लहडू बांध कर उस पर रामगान मनी प्रकार चिपका लिय और चलन समय उह ठग को थमा कर बोली—तो य लहडू । यह तुम्हारे काम आयेगे । और हां यह है चादी का एक बजोरा इसकी भी तुम अपने पास रक्न छोडा वक्त अवक्त कभी काम ही

जा जायेगा ।

कटोग हाथ में लते दूधे टग न कहा—मर यह कटोरा ता ठीक है पर मैं ये मिट्टी के लड्डू क्या करूंगा ?

स्थी बोली—रास्त में किसी भोदू को चक्का दकर कुछ भोजन प्राप्त करने का मिलमिला इन्हीं लड्डू के जरिये हो सकता है ।

प्रम न हाकर ठग बोला—गायान ! तुम्हारी माल तो मुझसे भी सज निकली । तुम्हारी ना निननी प्रससा की जाय याही है । ठगा की देवी की कृपा दूध ता माग में ही काम का कुछ मिलमिला भग जायगा ।

खलन खलन मथुरा पार करने पर उन एक घीर ठग माग में मिल गया । यह भी मथुरा का प्रसिद्ध ठग था घीर गिफार की खोज में दिल्ली ही जा रहा था । राम राम के बाद मथुरा के ठग ने बनारस का ठग में पूछा—कहा भाई कहा स आ रहे हो ? क्या नाम है तुम्हारा ?

बनारस का ठग बोला—मुझे तो साना मुनालाल कहने हैं, बना रस स आ रहा हूँ । निनी किसी रोजगार की तलाश में जा रहा हूँ । कौन तुम्हारा क्या माल-पता है ?

मथुरा का ठग न कहा—मेरा नाम तो छेनीलाल चौबे है । मथुरा का रहने वाला हूँ । मैं भी धन की खोज में दिल्ली ही जा रहा हूँ । एक स दो मन खली तुम में भेंट हो गई । भज में सफर बट जायेगा ।

वस रात में दोनों जन एक नदी के किनारे एक सराय में रहे । छेनीलाल न दया कि मुनालाल के पास तो रामराने के लड्डू हैं । इधर मुनालाल भी यह बात ताड़े रहा कि मेरे साथी के ममत्र में पेड़ बड़े हैं । मुनालाल ने माचा मथुरा के पेड़ से । भूव प्रसिद्ध हैं अपने रामरान के लड्डू इग देकर हमके पेटे हथियान चाहिये । अनएव उसने कहा—क्या चौबे जी, माग के यह ब मथुरा के पड़े ता बड़ बढ़िया होते हैं ? चौबे जी मोड़ की

साथ म थे भट बीत—हां हां तो हैं साताजी । पर तुम जानो रोज पड़े
साते-गाने मेरा तो उनसे मुह फिर गया है सो वेहे तुम स सो—सङ्ग मुझे
दे दो । यही तो साताजी चाहत थ । उन्होंने भ्रष्ट से सङ्ग उन्हें पकड़ा लिये
घोर पेड़े गुरु स लिय । मुह हाथ धोकर दोनों साने बडे । घोर दानों ही
मन ही मन सोच रहे थे कि एक दूसरे को बर्खाष बर्मा लिया ।

मुनालाल ने जसे ही पेड़ों म मुह मारा—रामरज मे उगगा
मुह भर गया । इधर चीज बनगियां स यह तमागा देस रहा था उताने
मुस्करा कर पूरा सङ्ग मुह म डाल कर जने ही बबाना मुक्त किया—
पीली मिट्टी का सङ्ग फूट कर मुह म बिसर गया । दोनों ही टग मन ही
मन एक दूसरे के हथकड़ों की प्रगता करके बर्जित रह गये ।

रात को सोते समय मुनालाल ने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि
चीवे मेरे चादी के बटोरे पर हाथ साफ कर दे । उसने रात को अपने
सिरहाने सटकते हुए छीने पर बटोरे म ऊपर तक पानी भर कर रस लिया
ताकि अगर कोई बटोरे को छूयेगा भी तो उसका पानी अवश्य छनवेगा ।
उस समय मैं तुरत जाग जाऊंगा । चीवे ने जब देखा कि साता सो गया है
तो वह उठा और उसने बटोरे मे रेत डाल दी पानी रेत ने पी लिया बस
बटोरा छठाकर दवे पांव चीवे बाहर निकल आया और सीधे नदी पर
पहुंचा । घुटने घुटने तक पानी मे जाकर उसने बटोरा नदी म दबा दिया ।
और घर आकर साता के पास ही सो गया । रात के तीसरे पहर जब
साता की आल खुली तो छीने पर बटोरा न पाकर वह बड़ा हैरान हुआ ।
उसने चीवे के नदन पर धीरे से हाथ फेरा तो देखा कि घुटने घुटने तक
चीवे की टांगें गीली हैं । बस उसे असलियत समझते देर नहीं लगी वह
पावों के निशान देखता हुआ नदी तक आ पहुँचा और अपना बटोरा
निकाल लाया ।

सुबह बटोरे को छीने पर देख कर चीवे ने सोचा अब तो खुल

पड़ने में ही खर है अतएव वह साला से बोला—भाई साला ! तुम भी छुपे स्तम्भ निकले । खर अब एक दूसरे से चालें खेलने से काम नहीं चलेगा । दिल्ली पहुँचने से पहले कुछ कमा कर ही यहाँ से चलो । दिम्ना है इस सराय की बुढ़िया पैसे धाली है सो पहले इसको अपना शिकार बनाया जाय तो ठीक है । मुनालास राजी हो गया । बस दूसरे दिन जब बुढ़िया अपने पस चुकवाने आई तो दोनों ठग बोले—अम्माजी ! हम तो गरीब यात्री हैं पैसे हमारे पाम तो हैं नहीं कह ता कुछ दिन आपकी चाकरी करके पैसे चुका दें पर हमारे खान-पीने का प्रबंध आपको करना होगा ।

बुढ़िया इनसे भी अधिक होशियार थी—बोली ठीक है, तुम लोग महन्त से काम करो । पर पेट भर खाना तो मैं रात को दूँगी जब दिन भर का काम तुम खतम कर लोग । उन्होंने पूछा—अम्मा क्या काम हम करना होगा ? बुढ़िया बोली बस एक जना तो मेरी सीधी सादी सी एक गाय है उस चरागाह में चराने ल जाय और दूसरा आदमी कुयें के पास जो गोमाँ के फूँकों की बयारी है उसे पानी से भर द । बस इतना ही काम है ।

ठगों ने सोचा यह कौन-सा अधिक काम है । भजे में दिन कट जायेंगे, मौका देख कर किसी दिन बुढ़िया का माल असबाब लेकर घनत बनेंगे । बस चौब न गाय चराने का काम दिया और साला ने पानी सींचने का । सबह रात की एक एक बासी रोटी खिला कर बुढ़िया ने शोना को काम पर भेज दिया ।

चौब गाय को लेकर चला । कुछ दूर हरी हरी घास देख कर गाय चरन लगी । चौब भी एक पेड़ की छाया में आराम करने के लिये लेट गया । इतने में ही वह गया पूछ उठा कर जोर जोर से भागने लगी । चौब उठ कर उसे पकड़ने चला पर वह भागती गई और भागती गई । अब ता चौब बड़ा परेशान हुआ । सोचा किसी तरह गाय को पकड़ पाऊँ तो रस्मी

से बाध नू । पर गाय पक्क म ही नहीं भानी थी । वह भाग पर कुछ दूर रक् पर चरन लगती और जब हाफने हाफने चौं पाम आत नजर आत फिर भागन लगती । चौं का भारी भरकम सरीर था, वह भागने भागन थक गया । गाम को जय गया चर चर थक गई तब जाकर कही परडाई म आई । पर नौंते ममय चौं ने मोचा रि बन में ता मिचाई का पाम लु सा थोरा ताला को गया चराने भेजूगा । आज जो मुझ पर घीनी वट में ही जानता है । भागते भागन हा हा दुख आय । जाना तो मजे म मम राई म सा रहा होगा ।

धर लाला का हाल भी दू था । उसने तो मोचा था कि दस दो डान म वह कपारी भर जायगी । मारे दिन में चैन की बसी बजाउगा । उसने दो डोल छोड़ने को जगह पचास डोल गानी जान नि पर कपारी में पानी दिलाई नहीं पड़ना था । अमल म बात यह थी उस बुड़िया ने कपारी क नीच एक ऐसी जलौग नानी बनाई हुई थी कि उसका सब पानी बह कर एक बड़ तैल म चला जाना था जिससे उसकी मिचाई हानी थी । यी कारण था कि कपारी को सीधन जाना आमी कपारी म पानी डान डान कर हिरान हा जाना था पर उसमें पानी बरता ही नहीं था । लाला न साधा चौं तो मजे म होगा । सर बल उस यह काम सोंच कर में गया चराने जाऊ गा ।

राम को जब दोना मिले तो लाला न चौं ने पूछा—कहो चौं ! कसी गुजारी आज ? चौं न बनावटी प्रवणता मुह पर लाकर कहा—कया बहू लाना । आज तो मारा नि न की के किनारे पीपन क पड क नीच साकर ही गुजारी । गया तो ऐसी साधी है कि इधर उधर चर चर जय हमरा पे नर गया तो वह खुद हा पेड के नीचे आकर बठ गई । कहो मुहारी कसी बटा ? लाला बोला—बस पूछो न कुछ । मैंने तो दा डान से ही कपारी भर दी । उसने बाद ता बगीचे म जो भूना लटक रहा है उसी पर बठा झूलता रहा । चारा आर भमराई—ठही ठही हवा—सूब

पेंग बढ़ाई और गीत गाये बचपन के दिन याद आ गये । बड़े आनन्द से निन कटा ।

रात को लाला के हाथों के छाले दुख रहे थे । इस कारण नींद नहीं आ रही थी और चौब की टांगों में दर्द था, इस मारे उनकी आध नहीं लग रही थी । लाला ने करवट ली और चौबे को जागृत देख पूछा—क्यों माये नहीं ? चौबे बोला—क्या बताऊँ सारे दिन भर सोया रहा इस मारे नींद नहीं पड़ रही है । तुम क्यों कराह रहे थे ? लाला बोला—चौब जी झूठे की रस्सी नारियल की थी इस कारण पेंग बढ़ाते समय छाले पड़ गये । चौबे बोला—अच्छा कल तुम गया चराने चल जाना हाथों को आराम मिल जायगा और जरा हम पेंग बढ़ाने का मजा ले लेंगे । लाला बोले—हा हा मैं कल गया चराने चला जाऊँगा । खुरी से तुम मेरा काम सभालना ।

दूसरे दिन चलने समय चौब न लाला से कहा—लाला और तो वही सब आराम है पर नन्ही क किनारे जरा सीलन है तो तुम लटने के निच अपनी छटिया जहर साय ले जाना । लाला ने छटिया सर पर धर ली और दूसरे हाथ से गाय की रस्सी पकड़ कर जब चलन लगा तो चौब में बोला—चौबे भैया ! नारियल की रस्सी हाथ में न गड़े इसलिये हाथों पर कपड़ा और लपेट लेना ।

।

इस प्रकार दोनों अपनी अपनी जानकारी में एक दूसरे की चकमा देने की चतुराई पर हंगने हुये चल दिये ।

जगन में पहुँच कर लाला का तो बुरा हाल हुआ । गाय के पीछे पीछे सिर पर छटिया रख कर उसे सारे दिन भागना पड़ा । इधर चौबे का भी पानी सींचते सींचते बुरा हाल । तिस पर बुढ़िया ने आकर टोक दिया कि हाथों पर कपड़ा लपेट कर तो तुम भन्ना क्या सिंचाई कर सकोगे ? अगर आज कपारी नहीं मरी तो पेट भर कर खाना नहीं मिलेगा ।

साम को जब दोनों ठग मिने तो एग दूसरे से बोव—भया इम तरह आपस म ही चालबाजी करने स काम बमे बनगा ? महा धाकर तो चले लेने के देने पड गये । बुढिया हम दोनो से तेज निकली । चलो जग चल कर लिहकी म से इसने बपरे म भाँकें कुछ पना ता लगे कि वह क्या बरती है । नि भर की कमाई कहा रसती है ?

बस दवे पाव के दोनो बुढिया की लिहकी के पीछ गइय । उहोने देखा बुढिया एक लोह का सडूक खोल बठी है उसम जेवर रग्य भादि भरे हुये है । बुढिया गिन गिन कर रुपये घसी म भर रही है । पर यह बुढिया भी कम चालाक नहीं थी । अपनी सडूक क ढक्कन म अंदर की ओर जो काच लगा था उसमे स उसने उन दोनो ठगो को लिहकी क पास छुप कर भाकते दख लिया था । उसने सोचा अब तो उहे मरा माल टाल पता चल गया है । इसलिये उस सडूक म अब कुछ रखना ठीक नहीं । दूसरे दिन उसने चुपक से उसमे से सज जेवर और रुपये निकाल कर पत्थर भर दिय और दोना ठगा को बुलाकर कहा—देखो बेटा । मरे तो बाल बच्चा कोई है नहीं । तुम्ही लोग अगर मेरी ठीक सेवा करोग तो तुम्हे ही सब दे जाऊंगी । पर मे जोखिम की चीज रखन म डर है । चोर अधिक तर भयेरे म ही सँघ लगाते हैं । इसलिये भयेरे म अपने इस सडूक म सब रकम भर कर कुए म छिपा देती हूँ । सडूक भा ी है—सो तुम दोनो जाकर इसे सामन वाले कुए म डाल भाभा ।

ठगो ने सोचा—यह भी अच्छा हुमा । चलो इम तरह से तो आसानी से सब धन हमारे हाथ लग जायेगा । रात को कुए म ढक्कनी लगा कर हम सडूक निकाल कर ले जायेंगे । बस उहोने बुढिया को दिखा कर उसे कुए म डाल दिया । रात को दोनो ठग मजबूत रस्ता लेकर कुए पर पहुँच । चौव बोला—लाला तुम जरा हलके बदन के हो इसलिये तुम कए म कूद जाओ मैं रस्सी सटकाता हूँ । जब सडूक मिल जाय तो आनाज

देना, मैं खीच नूंगा। लाला बोला—अच्छा ठीक है। पहना टुकड़ी में ही लाला के हाथ सटूक लग गया। उसने सोचा पहले खोल कर तो देख नू कि इसमें है क्या? कुछ बीमती जेवर हाथ लगे तो उमे में कमर में ही खास नूंगा। यह विचार कर उसने सटूक खोला। देगी हीन से कही चीन्ने को गुदह न हो जाय इसलिये वह बोला—चीवे भाई! दिखता है सटूक बहुत नीच उतर गया है। मुझे तीन चार गोन लगान पड़ेंगे। इस प्रकार चीव को भुलावे में डाल कर उसने सटूक कुए के अंदर ही खोल लिया। उसमें ईंट पत्थर भर देस कर लाला ने सोचा बुढ़िया ता हम दोनों स चाल खेन गई। अब अगर चीव को इसी समय यह भेन बताना हू ता संभव है वह मुझे कुए में ही छोड कर चन दे। इसलिय कोई ऐसी चाल चलनी चाहिय कि चीवे भी याद रने कि किसी बनारसी ठग स पाला पडा था। कुछ सोच कर वह बोला—चीवजी! मैं सटूक का बस के रस्मी से बाघ दना हू और जब आवाज दू तो तुम सटूक खीच देना। लाला के आवाज देने पर चीव न रफसा खीच ली और जब सटूक खिखाई पडने ला उसने पाय धन कर उमे उठा कर कुए की जगत पर रख लिया। फिर उमने सोचा—अब लाला को सबक सिखाने का मौवा है। बच्चू जी को कुए में ही छोड कर सटूक नकर चलता हू। बस सटूक सिर पर रख कर चल दिया। वजन के मारे उमकी गन न टूटी जा रही थी—पर वह अपने मन को पटी समझाता जा रहा था कि बस अब इन बड सटूक के सारे माल का मैं ही मालिक हू। और थोड़ी देर की तनलीफ है—टीले के उस पा जाकर सटूक खोलूंगा।

ऊंची-नीची जमीन थी—घबने लग रहे थे। पतने में चीव को सुनाद पडा। चीव भया जरा धीरे धीरे—चीवे को आवाज परिचित स लगी। पर उमने सोचा भना लाला यहा कैसे आ सकता है। वह तो का में डुबकिया गया रहा होगा। कुछ दूर और चलने पर उसे फिर सुना पडा—भया जरा धीरे धीरे मेरा भी ख्याल करो।

चौर न साचा खिसना है साचा पीछा करता हुआ ध्यान पहुँचा है । वह आकर जल्द ध्यान बाटने का तकाजा करता । इसनिध सद्गुरु म से बीमती गहना निकाल कर जल्दी से पास के गन्दे में धिक्कना ठीक होगा । यह विचार कर उसने सद्गुरु सिर पर से उतार कर नीचे धर दिया और ज्योंही सोला उसमें साचा को बैठा पाकर चौर तो हैरान होकर बोला— हाय ! इतनी दूर में तुम्हें ही सिर पर लाज कर चला आ रहा था ? सद्गुरु के भाव टाल का क्या हुआ ?

हमता हुआ मुन्नाबाल बाहर निकल आया और बोला— हूँ चौर भया ! तब तो मुझे कुछ म ही छाड़ना चाहत था पर मैं भा कोई बच्ची गोली नहीं लेता था जो इस आसानी से पिट जाता । और रही माल मत्त की बात तो वह बुढ़िया नृत्य पर दया निकली । वह हम से भी खाल बन गई । उसने इट परपर भ्रम कर सद्गुरु कुछ म डलवा दिया था ।

मध धमनिधन जान कर चौर खिसिया कर रह गया । फिर हाथ जाड कर बोला—भैया राम राम ! हम गोनो एक साथ रह कर धया मही कर मत्त । एक दूसरे पर ही हाथ सफाई करने की खाणि म रहने हैं । तो तुम जाओ पूछ के और मैं जाता हूँ पन्चिम की ।

ताता बोला— हा ठीक है चौरजी ! अच्छा राम राम !

रात भर चौर सोचता आ रहा था—मैं तो धयन की ही धनुर समझता था पर कम बनारसी ठग से तो भगवान बचाय । ○

घोर न सोचा मित्रता है साभा पीछा करता हुआ धान चुका है । यह झारख जहर माल बाग़ने का सजावा करेगा । इमनिने सद्गुरु म से बीमती गहना निवाल कर जल्दी में धाम के गड्ढे में दिगाना ठीर होगा । यह विचार कर उसन सद्गुरु गिर पर से उतार कर नीच धर दिया घोर ज्योही सोता उसम साभा की बठा पाग़ चौब तो हैरान होकर बोला—
 हाय ! इतनी दूर मैं तुम्ह ही गिर पर सां कर उता घा रहा था ? सद्गुरु के माय दास का क्या हुआ ?

हस्ता हुआ मुन्नालास बाहर निजम घाया घोर सांता— हू घोर भैया ! तम तो मुझे ब्रुत म ही छोड़ना चाहत थ पर मैं भी कोई बच्ची गोलो नहीं खता था जो नम आमानी न पिर जाता । घोर रही माल मल की धान मो वह बुझिया नन्हे पर दन्ता निवली । वह हम से भी धान नम गई । उसने इट पत्थर नर कर सद्गुरु कए म इलवा दिया था ।

सब धनसिमत जान कर चौब गिसिया कर रह गया । फिर हाय जाड कर बोला—भैया राम राम ! हम मोर्तो एव माय रह कर घघा नहीं कर सकत । एव दूसरे पर ही हाथ सफाई करने की बाणिज मे रहते हैं । तो तुम जाओ पूर की ओर मैं जाता हू पश्चिम की ।

तारना बोला— हा ठीक है चीरनी ! अन्धरा राम राम !

राते भर चौब साबता जा रहा था—मैं तो धपन का हा अतुर समझता था, पर इन मनारसी ठम से तो भगवान बचाये । ○

गायनाचार्य गप्पी गुरुजी

○

आपका परिचय देकर मैं आपका अभिमान करना नहीं चाहता।

ऐसा कोई दिन नहीं जब आप उह किसी न किसी जगह खड़े, बैठ चलते सोने नहीं देखते। ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ आपकी पहुँच नहीं है। आप सबव्यापी हैं अगर यूँ कहूँ कि आप सर्वात्मा हैं तो ज्यादा युक्तिमय होगा। इनका हुलिया सुनते ही महसूस आपके मुँह से निकल पड़ेगा— ओह ! क्या तो हम बहुत पहचान से ही जानते हैं। मगनी गान्धी, पार्टी सहजोज जागरण सांस्कृतिक कार्यक्रम यहाँ तक कि जिस समय किसी का 'परलाब' की फाल आ गया हो उस समय भी हरि-कीर्तनकर्ता के रूप में आपकी उपस्थिति अनिवार्य-ही मान्य होनी है। बीच में ही टाक कर मिथ न कहा— आप पहचाना ही बुझात जायेंगे या मूल बात पर आने की कृपा भी करेंगे। आखिर आप कहना क्या चाहते हैं ? कहना क्या है ? आप स्वयं ही पीछे की ओर गहन घुमा कर देख लो—मैं धीरे से कहा। सामने कंधो तक सन्तानों के रूप में जमुना जल का द्यामलता में तरली-उत्तरानी नौवार सी प्रतीत हो रही है। लम्बी नाक सदा सबका सामने के भाग का निशान करती रहती है। गिद्ध सी रानी परन्तु प्रत्यक्ष घनी धावे उनके कोई भागन के भाष में भाष विनोकी की खबरें दान भर में साने में समर्थ हैं। बाता रंग कृपाय अन्तर की घसा सना

रोपे हुए पीघो से दात कभी घोती, कभी पाजामा कभी पेट कोट कभी
चूड़ीदार पाजामा और कुर्ता कभी अचकन तो कभी बुसाण्ट पहन कर एक
आध शागिद क साथ इधर उधर पदल क्यना साइकिल पर घूमना तो
आपने लिए साधारण बात है। प्राय आप बड़े बड़े आदिसस क बगलो के
इद गिद चक्कर लगाते रहते है।

मैंने भुनकर दोनो हाथ बोहनी तब जोड कर अभिवादन का
ढोंग रचा— गुरुजी प्रणाम ! हाथ हाथ तुम लोगो को हो क्या गया है !
जब दसो तभी स्वर का ज्ञान नहीं रखते। प्रणाम करते समय भी तुम्ह
ध्यान नही रहता कि प्रणाम गुरु म मध्यम तीव्र तथा धक्क की दूमरी
भुति तक पहुचा कर मीड मारनी है। दादरे की ता ही तिकडी म पूरा
अभिवादन कर लेना चाहिय। तुम लोग तो सगीत की हत्या करते हो।
हजार बार समझाया है और समझाता हू परतु लगता है तुम्हारी अकन
तो धल अटुलता क साथ हज करन गयी है। भरे सगीत क गनुआ, तान
क करियो लय क लम्पटो आखिर सगीत ने तुम्हारा बिगाडा क्या है ? जो
बोलते हो तो बसुरे गाते हो तो बसुरे और रीत हो तो बसुरे। तुम्हारा
ता निर्माण ही बेसुरेगन म हुआ है निमा भी तो क्या जाय ?

गुनव। भूल हो गयी।

भूल हो गयी भरे बसुरो बेपरों बसुरों। भूल तुमस नही उस
बाई से हा गयी जिसन तुम्हारे जम के समय वाली भी बसुरी और बत ली
बजाई। कह भी तो क्या कह हमारे गिगा क कणधार ता कुम्भकणी
निद्रा म निमग्न हो रहे हैं। मैंने अनक बार पत्रो म आटिकल गिय गिका
यनी-पत्र धनवाये डपुगान लकर पहुचा परतु वे भी भग की तरफ म
उपत नजर आन हैं। मैंने कटा— समस्त स्त्रूलों क पाठमक्रम से सभी
विषया का हटा दो और उमक स्थान पर बसल ना— हा नाद बहा को
ही स्थान दो। दग का कप्याण हो जायगा। तानपूरे की तान स शनु लम्बी

तान करे सो जायेंगे । तबले की ठनक से बहू-वटिया कृत्रिम राज्ञा का परि-
त्याग करके घर की चहार दिवारी से बाहर निकलकर पाँचचाय कुनागनाओ
के समक्ष अपने को निःस्वाच प्रमाणित करेंगी । प्रारम्भ से ही छात्र
छात्राएँ—ताल और लय का ज्ञान प्राप्त कर लें तो दंग का बर्त्याण हो जाय ।
घर घर में गायकी पनपेगी भिन्न भिन्न विषयों के श्रवणियों की जरूरत
नहीं रहेगी । देश की आर्थिक दंगा को सुधरने का अवसर मिलेगा । छात्र
छात्राएँ (Sangeet Minded) हो जायेंगे—उठेंगे तो लय से—बैठेंगे तो लय
से—पढ़ेंगे तो लय से—और तो और चलेंगे तो लय व ताल का ज्ञान अवश्य
रखेंगे । बस साहब मेरा मुह नाकने लगे ।

गुरुदेव, जिन्हासा से मैं पूछा—इतना संगीत टाचर कहा से
प्रायेंगे जो प्रत्येक स्कूल में संगीत की शिक्षा दे सकें ? फिर वही पुराना
अप्रेजों द्वारा बताया हुआ सड़ा गला विदेशी राग अलापन लग । घरे भन
आदमियों हम लोग फिर क्या जूगराफिया पढायेंगे ? प्रयागनासाभा में हरा
कशोश और नीले थोड़े का मोल तयार करेंगे ? क्या दिन भर स्कूल में पड़े-
पड़े धाय का प्योत्रिया बजायेंगे । इनको करने के लिए तुम ही बहुत हो । हम
तो चोत्ते हैं जीते जी नाद ब्रह्म की कुछ सेवा हो जाय तो ठीक ही है ।
पर क्या बच्चे तुम लोग तो मेरे ही सामने मेरे ही काय-कलापो पर पानी
फर रहे हो । जब देश में विदेशी संगीत का बीजबान्ना था तब गाना बच्चा
को विदेशी भाषा में सिखाया जाता था मातृभाषा को भिक्षारिनी बंगली
कह कर पुकारा जाता था उस समय तबलोपुर में बालक की गिलायास
किया । पूरे पांच वर्ष तक धालेज का मंचालन किया । उसमें बवल तीन
विद्यार्थी प्राये पर हमन उसकी परवाह थोड़े ही थी । हमें कोई आर्थिक
सहायता थोड़े ही लनी थी । हमें तो नादब्रह्म स मतसब था । पर पांच
वर्ष का कायकाल में मैं तीना में से एक को सडक छाप बँड में भाग
बजया की जगह मिली दूसरे को स्थानीय ग्रनाथालय के ग्रनाथ छात्रों के
साथ चण इकट्ठा करने की सेवा मिली और तीसरे को हमने स्थानीय गर्स-

रोपे हुए पौधों से दात कभी धोती, कभी पाजामा कभी पेट कोट
चूड़ीदार पाजामा और कुर्ता कभी अचबन तो कभी बुग्गट पहन कर।
आध शागिद व साथ झर उधर पदल अचना साईकिल पर घूमना
आपके लिए साधारण बात है। प्राय आप बड़े बड़े आफिसस के बगल।
इद गिद चक्कर लगाते रहते हैं।

मैंने भुगवर दोनो हाथ कोहनी तक जोड़ कर अभिवादन
दाग रचा — गुरुजी, प्रणाम। हाथ हाथ तुम लोगो को हो क्या गया है
जन दत्वो तभी स्वर का गान नही रखत। प्रणाम करते समय भी तु
ध्यान नही रहता जि प्रणाम न म मध्यम तीव्र तथा धवल की दूम
श्रुति तक पहुँचा कर मीड मारनी है। गाने की ता ही तिकड़ी म पू
अभिवादन कर लेना चाहिय। तुम गान तो सगीत की हत्या करते ह।
हजार बार समझाया है और समझाता हूँ पर तु सगता है तुम्हारी अ
तो गल अतुलना व साथ हज़ करन गयी है। अरे सगीत व गायिका ता
व करियो लय के लग्नटो आबिर सगीत ने तुम्हारा बिगाडा क्या है ? उ
बोलत हो तो बसुरे, गात हो तो बसुरे और रोत हो तो बसुरे। तुम्हार
ता निर्माण ही बसुरेगा म हुमा है किया भी तो क्या जाय ?

गुस्स व भून हो गयी।

भूल हो गयी अरे बसुरो वपरों बसुरो। भून तुमस न १२
दार् से हा लयी जिसने तुम्हारे जम व समय वाली भी बसुरी और बत
बजाई। कर भी तो क्या कर हमारे गित के कणधार ता बुम्भकर्ण,
निद्रा म निमग्न हो रहे हैं। मैंने अनक बार पयो में आटिकल टिय गिका
यनी-वन धाराये डप्युगन सकर पहुँचा परतु व भी भग की तरंग म
उधत नजर घात है। मैंने कया— समस्त स्त्रूलो व पाठयक्रम स सभी
विषया को हटा दो और उसन स्थान पर बवल ना—हा नाद ब्रह्म को
ही स्थान दो। दग का कयाध हा जायगा। तानपूरे की तान स गानु सम्वी

स्तवन में स्वर ध्यानाप तानो से तयार करके दी तथा उनकी सेवा में सदैव उपस्थित हुआ था और सस्वर गायन आरम्भ किया था। पर यह तो यूँ कहो कि हमारी किस्मत में साथ नहीं दिया। वरना हम आज क्या नहीं हाँ गय होते। वैसे तो हम आज अनक सगीन डिग्रियाँ भूँ बिसरे लोग द जात हैं जो कि उनका मगीत क प्रति विरोध लगाव प्रकट करता है। हमारे सगीत प्रेम में ही हम सरकारी नौकरी से बर्चित कर दिया। पर इसमें क्या ? जपन गहरे अनुभव क बलवत्तर पर यहाँ भी सगीत का प्रवाहा सात ही लिया जिससे हमारे पेट का तो बसगत करने का प्रवसर मिलता ही है इसके साथ-साथ दस पाच और लोग का भी काम निश्चलता है। दस के प्रतिष्ठित सगीतनो से पत्र व्यवहार करके हमने सिद्ध कर दिया है कि हम भी उनसे कम नहीं हैं। रोज दस-बीस छात्रों को आलाप विषयक कुशली करवा ही देते हैं जिसकी घमक से प्रभावित होकर शिक्षा विभाग समाज कल्याण विभाग आदि नैट स्वरूप कुछ न कुछ अनुदान चढ़ा ही देते हैं।

सहसा मैंने उनके धाराप्रवाह प्रवचन को प्रवरद्ध करके पूछा—
गुरुदेव हमारे हृदय में कई दिन से एक जिज्ञासा है—‘उतावलेपन से गुरुजी ने पूछा— सगीत विषयक हो तो जल्दी पूछो।’ मैंने कहा— हमने आपको श्री-मूल से कभी किसी महफिल में सुना नहीं। तेवर बदल कर गुरुजी ने कहा—
‘ओह फिर वही विलायती लोगो की नकल करने लग। भल आदमी सगीत शिक्षक के लिए जरूरी नहीं कि वह यन्त्र-तंत्र गला फाड़ कर तानपूरे के तार ताड़कर सितार की कड़ियाँ मरोड़ कर, तबले की पड़ियाँ फोड़ कर अपने गुण का प्रदर्शन करे। साथ ही सगीत शिक्षक व सगीतन में अंतर है। सच्चा सगीतन तो गान से ही गन्वान लिया जाता है। उसे गाने बजाने की आवश्यकता नहीं। अधिक हुआ तो एक नृत्य सगीत कम्प लगाने का एक ही इतिहास छाया दिया। समय बसमय रगमच पर ताबड़तोड़ चहलकदमी कर दो-एक अर्द्ध वाद्य यंत्र से छेड़छाड़ कर ली। परदा गिराओ परदा उठाओ का आदग दे दिया। निकडमी तीर तरीके से सगीत निर्णायक बन बैठे। इससे अगर

स्कूल में पाट टाईम म्यूजिक टीचर नियुक्त किया। पर कुछ समयोपरांत पुल टाईम की जगह कबाड ली। तब कुछ सोच कर तबलापुर से तानपुरा आना पड़ा। इसके तीन कारण थे। एक तो विद्या गी मिलने संभव न थे। दूसरे संगीत प्रेमियों के अभाव से हमारा मन भर गया। और तीसरे पेट के साथ संघर्ष करते करते थक गए थे।

हम ऐसी जगह की तलाश में थे जहां पेट खाली पड़ा नहीं रहे। उसे भी कुछ कसरत करने का अवसर मिले। कालज का बोझ हटाना हमारी आवश्यकता थी। और दरवाज पर ताला दिवालियों के लगता है इसलिये हमने कालेज का बोझ रहने दिया। और दरवाज चौकट। ऐसी सूरत में खून दरवाज दल कर अपने मालिक से मुंह छिपान के लिये बशाख न दना की जमातें कालेज में प्रविष्ट हो जाती और रात में कानों की फडाफड नधुनों की फडफड और उनकी चरण पादुकाओं की खटावट से हमारी नींद हराम हो जाती। भला उनको निकालते कस। जहां तक लय और सुर शास्त्र का प्रश्न है वह इन दोनों में पूर्ण निष्णात थे। है और रहेंगे। जब वह आलाप करते हैं तो अच्छे अच्छे के कानों के परदे धरि उठते—सर भना उठते—पर पटन को आमांग हो जाते। कहने का मतलब यह है कि संगीत का ज्ञान प्राग्भिन ही नहीं—पश्चिम परी गाये स्तर का था। और यह परीक्षा लिखना कतय है और इंदी पर जीवन निर्भर है। इसलिये हमें उह संगीत प्रेमी होने के नाते उनके समय व समय दीध आलापों के भरन के समय उनका मुग बच नहीं कर सकते। इसलिये यही उपयुक्त समझा कि तबलापुर संगीत कानज की संपत्ति इंदी के मुपुन कर अपने राम धन किसी जगह संगीत का सितसिला पदा करें।

गुरुजी महा आप जितने साल स (बीच में टोकते हुए) जटा घारी (oh sorry) मेरा मतलब साधुओं से नहीं गायनाचाय लक्ष्मीबाहन जी से है। महोदय बोल—घरे इतनी जल्दी भूल गया। जब महाराज जादूवी हरिनी का स्वर्ण उत्सव हुआ उस समय मैं उनका स्वागतार्थ एक

स्तवन में स्वर आलाप तानों में तयार करने दी तथा उनकी सेवा में सदब उपस्थित हुआ था और सस्वर गायन आरम्भ किया था। पर यह तो यू कहो कि हमारी विस्मय न साथ नहीं दिया। वरना हम आज क्या नहीं हा गय होते। वैसे तो हम आज जनक संगीत डिग्रिया भूत बिसरे लाग दे जात है जो कि उनका संगीत क प्रति विशेष लगाव प्रकट करता है। हमारे संगीत प्रेम ने ही हम सरकारी नौकरी न बचित कर दिया। पर इसमें क्या ? जपन गहरे अनुभव क बलबूते पर यहा भी संगीत का अत्ताडा खोल ही लिया जिससे हमारे पेट का तो कसरत करने का अवसर मिलता ही है इनके साथ-साथ दस पाच और लोग का भी काम निबलता है। देश के प्रतिष्ठित संगीतज्ञा स पत्र व्यवहार करके हमने मित्र कर दिया है कि हम भी उनसे कम नहीं हैं। रोज दस-बीस छात्रों को आलाप विषयक कुशती करवा ही देते हैं जिसको धमक से प्रभावित होकर शिक्षा विभाग समाज कल्याण विभाग आदि भेंट स्वरूप कुछ न कुछ अनुदान बढा ही देते हैं।

सहसा मैंने उनके धाराप्रवाह प्रवचन को अवरुद्ध करके पूछा— गुरुद्व हमारे हृदय में कई दिन से एक जिज्ञासा है—‘उतावलेपन से गुरुजी न पूछा— संगीत विषयक हो तो जल्दी पूछो।’ मैंने कहा— हमने आपका श्री मुख से कभी किसी महफिल में सुना नहीं।’ तेवर बदल कर गुरुजी ने कहा— ‘ओह फिर वही विलायती लोगो की नकल करने लगे। भले आवामी संगीत शिक्षक के लिए जरूरी नहीं कि वह यंत्र-तंत्र गला फाड कर तानपूरे के तार तोडकर सितार की बडिया मरोड कर, तबले की पुडिया फोड कर अपने गुण का प्रदशन करे। साथही संगीत शिक्षक व संगीतज्ञ में अंतर है। सच्चा संगी तन तो शवन से ही पहचान लिया जाता है। उसे गाने बजाने की आवश्यकता नहीं। अधिक हुआ तो एक नृत्य संगीत कम्प लगाने का एक ही इस्तिहार छपा दिया। समय बसमय रगमच पर ताबडतोड चहलकदमी कर दो एक अच्छे वाद्य यंत्र से छेड़छाड कर लो। परदा गिराओ परदा उठाओ का आदेश दे दिया। तिकडमी तोर तरीके से संगीत निर्णायक बन बढ। इससे अगर

आगे बढ़ने का हीसला हो तो समय समय पर स्थानीय संगीत प्रेमियों को अपने घर में आमंत्रित करने चाय पिला दो। हम लोग से तुम अधिक आगा रखते हो ? तुम्हारी अकल राजाजी की तरह सठिया गई है तुम्हारी नाम मभी है नादानी है तुम्हें अपना इलाज कराने के लिए डॉक्टर लाहिया के पास जाना चाहिये। संगीत होना का मतलब यह थाड़े ही है कि हम जहाँ तहाँ जाता फाड़ते रहें। उस डानडा का जमाना है। सारहीन तारहीन लीचिंग पाऊंडर मिला। रखाई से गंगा तो पहुँचे ही खराब हो गया है ऊपर से चाय की खजरी से फकड़ो में सूजन आ गई है। अर्थात् भाप से नेत्रों के आग धपेरी छा जाती है और तुम लोग आगा करते हो सुमधुर संगीत सुनने की। उनके आग प्रवाह प्रवचन का बाध बनते हुए मैंने कहा— गुरुवर आज प्रातः सवारी ? वे मेरे आवाज की समझ गये थे। चीखते हुए बोल— घरे अरे गजब हो गया। मुझे संगीत प्रशिक्षण केन्द्र खोलने के सम्बन्ध में मित्रित नागरिक म शिक्षाधिकारियों के बगलों पर जाना था परन्तु अब तो— क्या गुरुदेव अभी तो १० ही बजे है।

अब अकनर लोग बगलों से दफतरों को चने गये होंग। गुरुदेव आप तो दफतरों में भी पहुँच रखते हैं फिर क्या चिन्ता करनी है ?

हा यह बात तो ठीक है परन्तु संगीत के प्रति जितनी रुचि महि साधो में देखी जाती है वह पुरुषों में कहा ? ये तो महिलाएँ ही हैं जो हमारे संगीत की कद्र करती हैं वरना इन पुरुषों के अरोसे तो संगीत साफ हो गया होता।

मैंन हाथ जोड़कर
म कहा— मोहूतभी आ
बनने के प्रयास में आ -
क्या कहा ?

मरी खोपड़ी पर पूर्ण प्रहार करें मैं बहुत दूर भाग निकला था। बाद में
 मेरे मित्र से मालूम हुआ कि उस दिन गरुदेव बड़े बिगड़े। फिर किसी तरह
 उन्हें यह आश्वासन मिलने पर शांत हुए कि आली सगीत परीक्षा में मेरे
 मित्र एवं उनकी पत्नी दोनों बैठें और गीत ही गुरुदेव की संगीतशाला में
 प्रवेश हेतु शर्त होगी तब वह जाकर कुछ नरम पड़े। वहने लगे—‘तुम केवल
 काम भर देना बाकी मैं सब अपने आप देख लूंगा। आखिर परीक्षक भी
 हम लोगों में से ही तो होते हैं। अधिकतर तो मेरे गुरु भाई या शिष्य ही
 हैं। तुम तो बल ही अपनी फास जमा करवा दो। और फिर काफी
 समय तक अपनी सस्था के निरीक्षण हेतु जाय हुए भिन्न भिन्न महानुभावों
 को किस प्रकार चकमा देकर प्रभावित किया आदि पर बातें करत रह।
 फिर थाल—आज उमन तो हमारा झूठ ही आफ कर दिया। संगीत शिक्षक
 प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना एवं आर्थिक सहायता हेतु फिर कभी जाऊंगा।
 हा तुम प्रवेश फार्म जरूर भर देना। तुम्हारे पडास में तो बहुत-सी लड़
 किया संगीत सीखती हैं। फिर उन्हें अपना सस्था में मित्र में बीच ही में
 बात काटते हुए बताया कि वे कहती हैं—वहां तो समय बरबाद होता है
 सारे समय गुरुदेव अपने विगत जीवन के कटु अनुभव सुनाते रहते हैं। हम
 उनके मस्मरण नहीं सुनने संगीत सीखना है। बीच ही में गुरुदेव बोल—
 जान दो जाने दो उन्हें अपने समय का सदुपयोग करने दो। पर हा देखो,
 फास जरूर लठ आना।’